श्री सद्‌गुरु चरितामृत
श्री सीतारामजी
लेखक—
रामयत्न शरण

अखिल ब्रह्माण्डनायक श्री चक्रवर्ती दशरथ राजकुमार रामभद्र जू का मिथिला आगमन पाँव पयादे केवल एक प्रेमी रूप में

रहस्य ग्रन्थों में कहीं ऐसा उल्लेख है कि जब मृत्यु भुवन में अवतारी लीला करने श्री रामभद्र जू आए तब कहाँ-कहाँ, क्या और कितनी लीला होनी है इसकी यादगारी कराने का भार स्वयं श्री किशोरी जी को ही रहता है। श्री लीलादेवी भी किशोरीजी ही बनती हैं जिनका स्थान सूक्ष्म रूप में श्री राघवेन्द्र सरकार के भौंह पर है। प्रधानतः अवतारी लीलायें तो विवाह के बाद ही हुईं। लोक मर्यादा के अनुसार शक्ति-पुरुष मिथिला में ही संयुक्त हुए तब आगे की लीलायें हो पायीं। एकाकी लीला तो श्री राघवेन्द्र सरकार को करना नहीं था। प्रति लीला के उपयुक्त आवरण देकर लीला कराना भी सिया स्वामिनी जी की ही जिम्मेवारी थी। बाल लीला का समय बीत चला था। यहाँ स्वागत की सारी तैयारी पूर्व उल्लिखित विवरणों के अनुरूप पूरी हो चुकी थी। अब प्रेम-लीला का अवसर आ चला था और वे वहाँ श्री चक्रवर्ती महाराज के आँगन में खेल-कूद में मस्त थे। उस लीला का सुख श्री काकभुसुण्डीजी और भगवान शङ्कर पक्षी रूप में छत पर बैठे-बैठे लिया करते थे। जहाँ श्री किशोरीजी से प्रधान सखियों ने कहा कि जब तक उन्हें स्मरण नहीं कराया जायेगा, वे समझेंगे कि प्रेम-लीला में अभी देर है। श्री किशोरीजी की सम्मति पाकर दो सखियाँ सुग्गा वेष में श्री अवध पधार कर छत के ऊपर श्री रामभद्र जू के आमने-सामने बैठ गयीं। आँगन में खेलते हुए जैसे इनकी दृष्टि उन सुग्गों के ऊपर पड़ी, यहाँ का सारा सुख भुला गया। मिथिला की बोलाहट जानकर तो मुख म्लान हो गया। विश्वगुरु भगवान शङ्कर ने ध्यानपूर्वक सोचा तो सारा रहस्य समझ में आ गया। यह मर्यादा का अवतार है। श्री राघवेन्द्र सरकार को मिथिला जाने का कोई रास्ता निकालना ही पड़ेगा? भगवान शङ्कर श्री विश्वामित्रजी के पास दौड़ पड़े। उन्होंने कहा—"राक्षसों का उपद्रव क्यों सहन कर रहे हो? श्री अवध में तो अब वे बाहर जाकर सन्त सेवादि करने योग्य हो गये। श्री अवध जाकर श्रीराम लक्ष्मण दोनों भाई को माँग लाओ" तब रामचरित मानस की यह चौपाई लागू हुई—

गाधि तनय मन चिन्ता व्यापी। बिनु हरि मरहिँ न निशिचर पापी॥

श्री अवध से निकल भागने का विश्वामित्र जी की चिन्ता ही कारण बन गया।

महामुनि श्री विश्वामित्र जी श्री अवध आए और उचित सेवा स्वागत के बाद उन्होंने श्री चक्रवर्ती महाराज से कहा—"अनुज समेत देउ रघुनाथा, निशिचर बध मैं होव सनाथा।"

श्री वशिष्ठजी के बहुत समझाने पर दशरथ महाराज ने श्री राम-लषण को विश्वामित्र को अर्पण यह कहते हुए किया—

मेरे प्राण नाथ सुत दोऊ। तुम्ह मुनि पिता आन नहिँ कोऊ॥

विश्वामित्र के आश्रम आकर सुबाहु आदि राक्षस समूह का कुछ ही दिनों में नाश कर दिया गया। निर्भय होकर महात्माओं के यज्ञादि कर्म होने लगे। यहाँ कार्य जल्दी-जल्दी किया गया, ध्यान मिथिला का था।

निशिचर वध तो हो चुका, इतने ही कार्य के लिये श्री विश्वामित्रजी दोनों भाइयों को माँग लाये थे। अतएव उचित तो यही था कि उन्हें श्री अवध लौटा दिया जाता। पर मन-मोहन के प्रभाव से विश्वामित्र जी भी लोक मर्याद भूल गये। एक दिन उन्होंने यह प्रस्ताव श्री रामभद्र जू के सामने रख दिया

तब मुनि सादर कहा बुझाई। चरित एक प्रभु देखिअ जाई॥
धनुष यज्ञ सुनि रघुकुल नाथा। हरषि चले मुनिवर के साथा॥

श्री रामभद्र जू ने एक क्षण भी यह नहीं सोचा कि हम चक्रवर्ती राजकुमार हैं अपने पिता की मर्यादा के अनुकूल ही सुसज्जित होकर एक दूसरे राजा की नगरी में जाना चाहिये। उन्हें बिल्कुल भूल गया कि वे ब्रह्माण्डनायक हैं वा श्री चक्रवर्ती राजकुमार हैं ऐसा अलौकिक आचरण उन्होंने क्यों धारण किया? ऐसा उन्होंने एकमात्र इसीलिये किया कि प्रेम नगरी तो महा पावन होती है। विशुद्ध प्रेम तीर्थ में जाने के लिये केवल एक प्रेमी रूप होकर जाना ही उचित है कहा भी है—

प्रेम न बाड़ी ऊपजे, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा प्रजा जेहि रुचे, शीश देइ ले जाय॥

ब्रह्माण्डनायक एवं चक्रवर्ती राजकुमार रूपी दो उपाधियाँ जो सिर का ताज बनी हुई थीं, उन्हें उतार कर ही मात्र प्रेमी रूप में अकिंचन होकर जाने से ही सच्चे प्रेमी के उपयुक्त लीला होगी। इसीलिये रामभद्र जू ने लोक लाज, कुल, मान बड़ाई गँवा कर ही प्रेम पथ में पैर बढ़ाया। इस आचरण से प्रेम पथ में प्रवेश करने वालों को भी शिक्षा दी गयी कि जो इस पुनीत मार्ग में प्रवेश करना चाहते हैं वे लोक प्राप्त सारी प्रतिष्ठा एवं उपाधियों के ताज को सिर से उतार कर केवल प्रेमी बनकर ही प्रेम लीला के उपयुक्त बन सकते हैं। चाहे राजा हो वा प्रजा हो दोनों प्रेम मार्ग में समान बन जाते हैं। शीश का अर्थ है अनेकानेक लौकिक गौरव।'' लोक गौरव का भाव न सिर से हटता है और न प्रीति का विकास हो पाता है। अपनी लोक पद-प्रतिष्ठा का इतना गौरव लोगों को होता है कि सन्त, भगवन्त के समक्ष भी यह याद रहता है कि 'मैं अमुक हूँ' अतएव वहाँ भी जाकर सिर न झुकाकर केवल वचन से ही प्रणाम दंडवत करते हैं। जब तक अपनी स्थिति भूलती नहीं, तब तक उनके हृदय में विशुद्ध प्रेम का प्रवेश कैसे हो सकता है? सन्त भगवन्त के सामने भी उनकी लौकिक पद-प्रतिष्ठा दीवार बनकर खड़ी रहती है।

इस मार्ग से तो स्पष्ट निर्देश है कि अपना शीश देकर ही अर्थात् नाना गौरव का जो अभिमान सिर पै लदा है उसको हटाने से ही शीश झुक सकता है। गौरव रूपी शीश का ही दान करना है, तभी प्रेम धन की प्राप्ति होगी। सांसारिक भाव तो यह है कि इज्जत ही सब कुछ है। सिर कट जाय पर किसी के आगे शीश नहीं झुकाऊँगा। अपनी हस्ति मिटाकर ही प्रीतम के आगे विनम्रतापूर्वक झुकने का भाव पैदा होगा। 'शीश देइ ले जाय' का आ अर्थ इतना ही है जितना कि ऊपर में व्यक्त किया गया।

भौतिक क्षेत्र में रूप-जादू का प्रभाव

संसार में जब भी 'अति सुन्दर' रूप कहीं देखने को मिलता है, टकटकी लग जाती है। कहाँ जाना है, क्या करना है, मैं कौन हूँ, सारी बातें विस्मृत हो जाती हैं। वह सुन्दर छवि कैसे प्राप्त हो, इसका प्रयास आरम्भ हो जाता है, आगे चलकर उस प्रयास में सर्वस्व गँवाना पड़ेगा, इसकी रंच-मात्र भी चिन्ता नहीं हो पाती। रूप के आशिक भक्त सूरदासजी गृहस्थ जीवन में मृत्यु शैय्या पर पड़े पिता का त्याग कर अपनी प्रेमिका एक वेश्या के घर अँधियाली रात में चले गये। यही दशा गोस्वामी तुलसीदास की गृहस्थ जीवन में हुई। भगवत् कृपा से ही आगे चलकर वैराग्य हुआ।

कई साल पूर्व ब्रिटिश साम्राज्य का एक सम्राट् अमेरिका की एक ऐसी स्त्री पर आशिक हो गया जो दो प्रेमियों से प्रेम कर उनका त्याग कर चुकी थी। सर्वाङ्ग सुन्दर तो इस संसार में होना असम्भव है। एक दो अंग की सुन्दरता देखकर ही ऐसी अवस्था हो जाती है। एक शहर में उस शहर के सबसे माननीय सेठ का एक ही लड़का सुन्दरियों की खोज में रहा करता था। एक दिन अपने छत से उसने सड़क बुहारते हुए एक भंगी की लड़की को देखा। उसकी नजरों में वही सुन्दरी जँची। लुक-छिपकर प्रेम होने लग गया। बात खुल गयी। उपरोक्त दोनों घटना लगभग एक ही साल की है। ब्रिटिश सम्राट् एडवर्ड ने

उन तीन भर्तार वाली स्त्री के लिये राज्य पद का त्याग किया और उसी राज्य के जहाज पर एक नौकर बनकर उस स्त्री के साथ ही जीवन बिताया। उधर सेठ का एक ही लड़का जाति से निकाल दिया गया। कोई दूसरा रोजगार कर भंगीन के साथ ही उन्होंने जीवन बिताया। शोक में पिता की मृत्यु हो गयी पर रूप जादू तो अन्धा कर देता है, सारे विवेक, लोक मर्यादा के भाव बिना कोई साधना किए ही स्वतः मिट जाते हैं। प्रेम ही साधन है, प्रेम ही साध्य है। इसकी अलग कोई साधना नहीं। सुप्त प्रेम रूप देखते जग जाता है। सर्वस्व त्याग आप ही हो जाता है।

भौतिक जगत की क्षणिक रूप जादू के प्रभाव की बातें अनेकों हैं। नाशवान सुन्दरता की पूजा में कितनों ने धन-गँवाया, परिवार छोड़ा, कितनों ने नहीं प्राप्त होने पर अपनी जान तक दे दी और कितने आजीवन फकीर जैसा बन गए। ऐसे उदाहरण जीव जगत् में सबों को देखने सुनने का अवसर मिलता है पर अनादि रूप रहस्य की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता।

जब जीव जगत् में रूप जादू के घायलों की संख्या अनेक हैं। यदि भगवान् ही सर्वाङ्ग सुन्दर रूप धारण कर प्रकट हों तो उस रूप माधुरी के घायलों की संख्या कौन कहे ? कहा जाता है कि ब्रह्मांड-नायक के समग्र ऐश्वर्य एवं माधुर्य को यदि एक सौ मान लिया जाय।तो उनके ऐश्वर्य माधुर्य का सौ में केवल एक ही अंश सारे ब्रह्माण्ड में प्रकट हुआ। इस एक प्रतिशत वैभव एवं माधुर्य पर ही सारा संसार लट्टू है। किसी को जगन्नियन्ता के अनन्त ऐश्वर्य माधुर्य का पता नहीं। सारे संसार को रूप छवि बाँटता है, यथा मृग को सुन्दर नेत्र, सिंह को सुन्दर कटि, हाथी को सूँड़, सुग्गे को ठोर आदि तो यदि वही सर्वांग सुन्दर रूप बनाकर प्रकट हो तो उस रूप को बरदाश्त करने की शक्ति किसको है ? जिसे ४० पावर वाले विद्युत बल्व की छटा देखने की क्षमता है, उसके समक्ष यदि एक लाख पावर वाले बल्व की रोशनी प्रकट हो जाय तो उस चकाचौंध में चाहे आँखें बन्द ही हो जायेगी वा देखते रहने से फूट ही जायेगी। चरित्रनायक कहा करते थे कि श्री रामभद्रजू का जो सौन्दर्यमय निरावरण रूप मिथिला में प्रकट हुआ उस रूप सुधा को पीने की क्षमता एकमात्र श्री किशोरीजी में थी अथवा जिन्हें उन्होंने अपनी दृष्टि दी थी वे ही उस रूप जादू को सहन कर सकते थे। श्री रामभद्र जू ने तो कहा है 'मम दर्शन फल परम अनूपा, जीव पाव निज सहज स्वरूपा।' यह स्थूल शरीर तो छूट ही जायेगा—अपना स्वरूप मिल जायेगा।

श्री जनकराज की नयन पुतरियाँ स्वयं श्री किशोरीजी बनी थीं। योगीराज जनक को श्री रामरूप दर्शन की दृष्टि किशोरी जी से मिल चुकी थी तो भी श्री रामभद्र जू के रूप जादू के प्रथम शिकार श्री योगी-राज राजा जनक ही हुए। वे सदा ब्रह्मानन्द में लीन रहा करते थे। उनकी श्री मुखवाणी पर गौर करने से पता चलता है कि रूप दर्शन का कैसा अलौकिक प्रभाव उन पर पड़ा। यथा रामचरित मानस में—

मूरति मधुर मनोहर देखी। भयहु विदेह विदेह विशेषी॥
सहज विराग रूप मन मोरा। चकित होत जिमि चन्द चकोरा॥
इनहिँ विलोकत अति अनुरागा। बरबस ब्रह्म सुखहि मन त्यागा॥
पुनि पुनि प्रभुहिँ चितव नरनाहू। पुलक गात उर अधिक उछाहू॥

यहाँ तक विदेह राजा ने कह डाला—

अवलोकि रामहि अनुभवति मनु ब्रह्म सुख सौगुण दिये।

श्री राम रूप दर्शन का सुख ब्रह्मानन्द से सौ गुना उन्हें मालूम पड़ा।

श्री भृगु मुनि का निश्चय है कि 'आनन्द' तो ब्रह्म सुख का ही प्रीतक है। पर्यायवाची है।

'आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्' यदि ब्रह्म सुख का बोध 'आनन्द' शब्द से हो, तो श्री रामरूप दर्शन के सम्बन्ध में श्री जनकराज कहते हैं—

सुन्दर श्याम गौर दोउ भ्राता। आनँद हूँ के आनँद दाता॥

श्रीराम रूप तो ब्रह्मानन्द को भी आनन्द देने वाला है। महामुनि श्री विश्वामित्र से मिलने श्री जनकराज अपने पवित्र हृदय वाले मन्त्री, बहुत से योद्धा, श्रेष्ठ ब्राह्मण, अपने गुरुदेव शतानन्दजी, और अपनी जाति के श्रेष्ठ लोगों को लेकर गये थे। वहाँ पर दोनों भाइयों का परिचय इस चौपाई में दिया गया—

श्याम गौर मृदु वयस किशोरा। लोचन सुखद विश्व चितचोरा॥

यह देखते हुए भी कि ये किशोरावस्था के हैं। ये कौन हैं, यह जानना भी बाकी ही था तो भी 'उठे सकल जब रघुपति आए' अनुपम प्रभाव का द्योतक है। रूप दर्शन का प्रभाव औरों पर कैसा पड़ा ?

भये सब सुखी देखि दोउ भ्राता। वारि विलोचन पुलकित गाता॥

रोम-रोम में पुलकावली हुई और नयनों से प्रेमाश्रु बह चले। एक-सा प्रभाव सबों पर पड़ा। जनक नगर में सभी कुछ था, सारा वैभव था पर यह 'रूप-धन' अब तक हाथ में नहीं आया था। मिथिला के लोग देखते ही इस रूप धन को ऐसा लूटने लगे मानों रंक जैसे भौतिक धन को लूटता है।

धाये धाम काम सब त्यागी। मनहुँ रंक निधि लूटन लागी॥

यहाँ इस रूप धन के न होने के कारण मिथिला के लोग 'रंक' कहे गए। मिथिला के एक-एक व्यक्ति में पूर्वोक्त प्रेमाभक्ति के लक्षण वर्तमान थे जैसा कि उपरोक्त चौपाइयों में उल्लेखित है।

मिथिला में प्रकट मूल रामरूप तत्व का तत्वान्वेषण

श्री रामायणजी में कहा गया है कि—

'नाम रूप दोउ ईश उपाधि' यह नाम रूप तो नैमित्तिक लीलाक्षेत्र में लागू है। यहाँ दोनों ही उपाधि रूप में हैं। पर जहाँ नाम से नामी भिन्न नहीं है वह कौन-सी स्थिति है ? ब्रह्माण्डनायक का वह कौन-सा रूप है जिसे उनकी उपाधि नहीं कही जाय बल्कि रूप भी वही है, ऐसा कहा जा सके ? हमारे चरित्र-नायक का कहना था कि इसका संकेत श्री रामायण जू में तो है। श्री नाम माहात्म्य में यह कहा गया है—

अगुण सगुण बिच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी॥

इसमें नाम महाराज अगुण सगुण दोनों के द्रष्टा हैं। सुन्दर साक्षी हैं, अगुण सगुण का सही प्रबोध कराने में समर्थ हैं। इससे स्पष्ट हो जाता है कि दोनों का देखने वाला, जानने वाला जो साक्षी रूप है वह 'अगुण, सगुण' से भिन्न कोई तीसरा तत्व है आगे कहा गया है 'अगुण, सगुण दोउ ब्रह्म स्वरूपा' पर श्री गोस्वामीजी कहते है कि 'मोरे मत बड़ नाम दुहुन ते' जो नाम तत्व अगुण सगुण से बड़ा है उसका किसी क्षेत्र में अपना पर्यायवाची कोई नामी तो होगा। वह सदा एक रस, एक रूप-छटा लिये रहता होगा। श्री नाम महाराज के ही मूलतत्व का पर्याय सरकार का मूल रूप है जो साकेतवासियों के समक्ष किशोरा अवस्था में नित नूतन ही रहता है। द्रष्टा नाम-तत्व उसी साकेत रूप-तत्व का पर्यायवाची है। साकेत विहारी का साकेत रूप सगुण, निर्गुण से भिन्न है। दोनों का कारक होते हुए भी स्वयं निर्गुण सगुण से परे हैं। यहाँ तो मन बुद्धि की पहुँच ही नहीं। वह रूप किन तत्वों से बना है, यह कौन कह सकता है ? इसके जानकार एकमात्र सिया स्वामिनीजी है या उनके अंग रूपा अलियाँ हैं। श्री सियास्वामिनी जू के लिये ही वही साकेत रूप श्री मिथिला जी में प्रकट हुआ। दर्शन तो उन्हीं को हुआ जिन पर श्री किशोरी जी की कृपा हुई। इस रूप को देखने के नेत्र तो एकमात्र श्री किशोरीजी ही देने में समर्थ हैं।

ब्रह्मज्योति तो श्री युगल सरकार के नख से उत्पन्न होती है जो सारे ब्रह्माण्ड में किरण रूप से व्याप्त है—जैसे काष्ठ में आग। वही व्यापक ब्रह्म जब रूप का आश्रय लेकर साकार बनता है तब सगुण कहा जाता है, जब स्थूल नेत्र से ओझल रहकर साकार में छिपा रहता है तब निर्गुण कहा जाता है। उसी सगुण साकार के नाम, रूप, उपाधि बनते हैं। मूल रूप में तो नाम नामी में अभिन्नता है। यथामति ही मिथिला में प्रकट 'रूप तत्व' का कुछ विवरण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। कृपालु जानकार, बालक समझकर लेखक को क्षमा करेंगे। अनुभव प्राप्त सुजान ही इस सम्बन्ध में कुछ कहने में समर्थ हो सकते हैं अन्यन्था यह तो तर्क विवाद से परे की चीज है।

श्री सीतारामजी के विवाहित रूप का ही ध्यान क्यों एवं श्री विवाह उपासना क्यों ?

उक्त प्रश्न के सम्बन्ध में भी हमारे चरित्रनायक ने अवसर-अवसर पर प्रकाश डाला था, उन्हीं विवरणों को यथामति प्रस्तुत किया जा रहा है।

१—उपास्यदेव श्री रामभद्र जू से कोई-न-कोई सम्बन्ध वा नाता लगाकर ही लोग उनकी भक्ति करते हैं यथा माता, पिता, पुत्र, भ्राता, दास, मित्र आदि। यह तो सर्वत्र प्रकट है कि माँ, बाप, भाई, भतीजा, बेटा-बेटी बनने के पहले दो प्राणियों का दुलहिन-दुलहा रूप में बँध जाना ही मूल है। सृष्टि के अन्य सम्बन्ध तो विवाह सम्बन्ध होने के बाद ही उत्पन्न होते हैं, अतएव मूल रूप से सिद्धान्तः विचार करने से यह सिद्ध हो जाता है कि सर्वप्रथम दो प्राणियों को दुलहिन-दुलहा बनने के बाद ही अन्य सम्बन्ध आए। अतएव विवाह भावना के अनुरूप ही सम्बन्ध कर भगवान् से प्रीति की जाय। अन्य सम्बन्ध जनित आनन्द तो सीमित है पर विवाह-सम्बन्ध-जनित प्रीति अधिक-से अधिक आनन्द का दायक है।

२—मर्यादा अवतार होने के कारण परात्पर प्रीति की पराकाष्ठा प्राप्त करने की शिक्षा दुलहिन दूल्हा रूप धारण कर ही श्री राघवेन्द्र सरकार युगल जोड़ी ने मिथिला में दी। अतएव उनके विवाहित रूप का ध्यान, उनके विवाह लीला-चरणों का गुण गान उसी के अनुरूप उनसे नाता एवं व्यवहार करने से परमानन्द लाभ सम्भव है। जो उन्हें भिन्न-भिन्न भावानुसार, राजा रूप, तपस्वी रूप, बनवासी रूप, वीर रूप व बाल रूप में देखना चाहते हैं उनके लिये न विवाह उपासना आवश्यक है और न मिथिला भाव अपनाना आवश्यक है। मिथिला-भाव-जनित आनन्द तो अन्य भाव वालों के लिए सपना ही है।

३—यह भी एक प्रकार से निर्विवाद-सा है कि सभी आनन्द की प्राप्ति चाहते हैं अवतारी जीवन पर विचार किया जाय तो नर लीला में वहीं सर्वांग सुख की अनुभूति होती है जहाँ किसी प्रकार का पारिवारिक कष्ट नहीं है। सभी परिवार भरे-पूरे और सुखी मुद्रा में रहते हैं। सरकार की बाल-लीला में आनन्द तो है पर सदा एकरस नहीं, वहाँ हठ और रुदन भी है। सर्वोपरि बात है कि प्रीतम राम बिना आह्लादिनी के एकाकी बाललीला कर रहे हैं, अतएव वहाँ आनन्द में बाधा है। निरन्तरता नहीं है। दूसरा आनन्द का अवसर श्री रामभद्र जू के जीवन में आया लंका से लौटने पर जबकि उनका राज्याभिषेक हुआ। उस अवसर पर पिताजी नहीं हैं, मातायें विधवा हैं आदि। राज्याभिषेक अवसर पर तो इस प्रकार सर्वांग आनन्द का प्रवाह सम्भव नहीं हो सका।

विवाह अवसर पर तो कहा गया कि सारे ब्रह्माण्ड में यही एक महा मंगल ही हुआ यथा—

भरि भुवन रहा उछाह, राम विवाह भय सबहिँ कहा।
केहि भाँति बरनि सिरात, रसना एक यह मंगल महा ॥

विवाह अवसर पर तो आनन्द का प्रवाह उमड़ा वह तो बहते-बहते चौदहों भुवन तीनों लोकों में

भर गया। गोस्वामी जी इसे 'महा मंगल' कहते हैं। 'महा' 'अति' शब्दों का प्रयोग रामायणजी में वहीं हुआ है, जहाँ किसी भाव विचार की 'इति' व चरमसीमा बताना हुआ है। इस विवाह से बड़ा उत्साह भरा कोई मंगल ही नहीं हुआ। अतएव आनन्द की चाह रखने वाले को सरकार के दुलहा रूप ध्यान करने के अलावे कोई विकल्प नहीं है। इस आनन्द का प्रवाह अन्यत्र नहीं।

रामहिँ केवल प्रेम पियारा। जानि लेहु जे जानंनि हारा॥

'रीझत राम सनेह निसोते'

विशुद्ध प्रेम से ही श्री सीताराम जी प्रकट होकर दर्शन देते हैं। उनके दर्शन से ही परमानन्द की प्राप्ति होती है। श्री रामभद्र जू तो साक्षात् परमानन्द विग्रह ही हैं।

जाहिँ जहाँ-जहाँ बन्धु दोउ, तहँ-तहँ परमानन्द "मिथिलावासियों का ही आचरण सदा पूर्ण प्रेममय बना रहा, उनके बोल-चाल,व्यवहार जो दुलहा राम के साथ हुए, सभी प्रेम भाव से प्रेरित एवं अनुप्राणित हुए। अतएव सर्वांगी प्रेम की पढ़ाई का स्थल सारे रामावतार के लीला-स्थलों में एकमात्र श्री मिथिला जी हैं, वहीं लोगों के आचरण, बोल-चाल सीखकर वह प्रेमाचरण मिल पायेगा जिसके चलते सदा प्रीतम राम वशीभूत रहेंगे। प्रेमाचरण से ही आनन्द की प्राप्ति है। अनेकानेक रामायण तथा अन्य ग्रन्थों में श्री रामभद्र जू की बाल-लीला, बनवास लीला आदि भी वर्णित हैं पर श्री गोस्वामी जी श्री विवाह लीला को ही ऋतुराज बसन्त-सा सुखदायी बताते हैं। विवाह उपासक बनने से ही सदा विवाह लीला गाकर बसन्त सुख की प्राप्ति होगी। यथा रामचरितमानस में—

बरनव राम विवाह समाजू। सो मुद मगंलमय ऋतुराजू॥

श्री रामयण जी में शिव विवाह हेमन्त ऋतु, राघवेन्द्र की जन्म-लीला शिशिर, वन-गमन लीला ग्रीष्म, ऋतु है युद्ध लीला वर्षा ऋतु एवं राज्याभिषेक लीला शरद ऋतु है उन लीलाओं के पठन-पाठ्य एवं श्री राघवेन्द्र की उन लीलाओं के अनुरूप ध्यान करने से वही आनन्द मिलेंगे जो उन ऋतुओं में मिलना सम्भव है अतएव विवाह लीला सर्वोपरि है। विवाह लीला नित्य पाठ कर बसन्त सुख कौन नहीं चाहेगा ?

मिथिला में जो कुछ भी आनन्द की वर्षा हुई उसके मूल कारणों में एकमात्र श्री सीताजी हैं। अतएव सीता तत्व का भी ज्ञान परमावश्यक है।

सीता तत्व

ब्रह्माण्डनायक श्री रामभद्र जू एवं उनकी सदा स्वरूप-शक्ति एवं अर्धाङ्गिनी श्री सिया जू के पारस्परिक सम्बन्ध का विचार नित्यानन्द लोक साकेत से लेकर नैमित्तिक अवतारी लीला मृत्यु भुवन तक करने से ही "सीता तत्व" के महत्व का पता चल जायेगा। हर विचार से यह सिद्ध होता है कि प्रीतम श्री रामभद्र जू की प्राप्ति श्री सीताजी के द्वारा ही सहज-सुलभ और स्थायी है।

१—संसार में पिता का परिचय माता के द्वारा ही होता है। यदि माता ने बाप को "काका" कह दिया तो नवजात शिशु भी बाप को जीवन भर 'काका' ही कहता रह जायेगा। जीव का प्रथम परिचय माता से होता है, बच्चे को माता-ही-पिता को गोद में पहुँचा देती है, पिता का परिचय करा देती है। ठीक इसी प्रकार जगत् पिता राम की प्राप्ति जगज्जननी सीता माता ही अज्ञानी बालक जीव को कराने में समर्थ हैं।

२—गुण विचार से देखा जाय तो जिन गुणों से श्री रामभद्र जू रीझते है वह गुण हैं "मन की निर्मलता" वे जीव के प्रति कहते हैं "निर्मल मन-जन सो मोहि पावा, मोहि कपट छल छिद्र न भावा" अनेकानेक साधनाओं के द्वारा स्थायी रूप से "मन विमल" नहीं हो पाता, मन को विमलता तो कृपा साध्य है। वह तो श्री सीताजी की ही कृपा से मिलेगी। यथा—

जनक सुता जग जननि जानकी। अतिशय प्रिय करुणा निधान की ॥
ताके युग पद कमल मनावउ। जासु कृपा निर्मल मति पावउ ॥

श्री रामभद्र जू निर्मल मन वाला जन चाहते हैं तो निर्मल मति बनने की शक्ति सिया स्वामिनी जू के पास है। वे निर्मल मति बनाकर प्रीतम रामभद्र जू से मिला देती हैं।

३—अब तत्त्व विचार से देखा जाय तो श्री रामभद्र जू प्रकाशक तत्त्व, सूर्य, चन्द्रमा जैसे हैं पर श्री किशोरी जू प्रकाश तत्त्व हैं। यथा—

राम सच्चिदानन्द दिनेसा। नहिँ तहँ मोह निसा लवलेसा ॥
सहज प्रकाश रूप भगवाना। नहिँ तहँ पुनि विज्ञान विहाना ॥
सबकर परम प्रकाशक जोई। राम अनादि अवध पति सोई ॥
जगत प्रकास्य, प्रकाशक रामू। माया धीश ज्ञान, गुन, धामू ॥

बाल्मीकि रामायण में श्री प्रिया-प्रीतम की श्री मुख वाणी विचारणीय है—

'अनन्यहि मया सीता, भास्करेण प्रभा यथा' (श्री राघवेन्द्र जू)
'अनन्या राघवेणाहं भास्करेण प्रभा यथा' (श्री सीता जू)

जब बनवास का आदेश हो गया, तब श्री रामभद्र जू ने सिया स्वामिनी को आदर्श पतिव्रता नारी का जगत् मर्यादा के भीतर का उपदेश किया—

मैके ससुरे सकल सुख, जबहिँ जहाँ मन मान।
तब तहँ रहहु सुखेन सिय, जब लगि विपति विहान ॥

वहाँ पर भी सिया स्वामिनी जू ने आगे होने वाली लीला को अन्तर में जानते हुए भी राघवेन्द्र सरकार को अपने तात्त्विक मूल रूप की याद दिलायी और अभिन्नता का बोध कराया।

प्रभा जाइ कहँ भानु विहाई। कहँ चन्द्रिका चन्द्र तजि जाई ॥

सारांश यह है कि सूर्य रूप तो श्री राघवेन्द्र सरकार हुए, सूर्य के भीतर का जो प्रकाश अनेकानेक किरणों के रूप में बाहर आया, वह प्रकाश तत्व श्री सीता जू हैं। सारा संसार सूर्य से बाहर आए प्रकाश द्वारा ही प्रकाशित होता है। किरण रूप में श्री सिया जू ही सारे ब्रह्माण्ड में प्रवेश कर आत्मा रूप से हैं। उसी प्राण किरण से अनुप्राणित होकर सारा जीव जगत् वर्तमान रहता है।

जब कभी सूर्य का दर्शन करना होगा तब सूर्य अपने प्रकाश के द्वारा ही दिखाई पड़ेगा, चन्द्रमा नक्षत्र आदि के प्रकाश में सूर्य नहीं दिखाई पड़ेगा। चन्द्रमा भी अपनी चाँदनी के द्वारा दीख पड़ेगा।

इस प्रकार यह सिद्ध हुआ कि राम रूप सूर्य का दर्शन, श्री सीता रूप प्रकाश द्वारा ही होगा और चन्द्र रूप श्री राम का दर्शन, चाँदनी रूप श्री सीताजी के द्वारा ही सम्भव है। चन्द्रमा, चाँदनी, सूर्य और उसके प्रकाशक अभिन्न है—एक दूसरे के प्रकाशक हैं।

४—सृष्टि लीला में दोनों के सम्बन्ध पर विचार करना भी आवश्यक है। यों तो सारी सृष्टि ही सीता रूपा है पर लिङ्ग भेद से स्त्री पुरुष का भेद संसार में चलता है। सृष्टि नारी रूपा सभी सिया जू के रूप हैं, और पुरुष रूप सभी रामजी के रूप हैं। पुरुष तत्व का बोध मूलतः वीर्य (बीज) तत्व से होता है और स्त्री तत्व को सृष्टि में। "रज" कहा जाता है। "रज" का अर्थ है धूलि कण पृथ्वी तत्व से सम्बन्धित है।

सृष्टि लीला में सिया स्वामिनी जू का प्रकट होना भूमितत्व से कहा गया है। इसलिये "रज" तत्व उनका ही परिचायक है। भूमि तत्व के दिव्य गुणों को धारण कर स्वामिनी ज लीला में श्री रामभद्र

जू के साथ रहीं। पृथ्वी का प्रधान गुण क्या है ? बीज तत्व को धारण कर उसके स्वरूप को प्रकट करना और उसे संसार को प्राप्त कराना—

इस प्रकार बीज तत्व रूपी श्री राम को प्रकट कर निज-जनको प्राप्त कराना भी श्री सिया स्वामिनी जू के द्वारा ही होता है अर्थात् जीव-को-सीव से मिलाना उन्हीं का काम है।

५—उपरोक्त तथ्यों को वर्णन करने के बाद एक और भी स्मरणीय बात उपसना के सम्बन्ध में यह है कि स्वयं श्री सिया स्वामिनी जू ही जब एक रूप से अहैतुकी कृपा विभाग संचालन करती हैं, तब वे ही सद्गुरु स्वामिनी बनती हैं। श्री सीताराम मन्त्र परम्परा में कई दृष्टि प्राप्ति महात्माओं का एवं रहस्य ग्रन्थों का ऐसा मत है कि श्री राम तारक मन्त्र के प्रथम आचार्य श्री सिया स्वामिनी जू ही हैं। उनके बाद राम मन्त्र श्री हनुमत लीला जी को सिया स्वामिनी जू से ही प्राप्त हुआ है। इसके बाद हनुमत लाल जू के द्वारा ही देवलोक में तथा अवतारी नर-रूपधारी गुरु के द्वारा संसार में भगवत शरण में आने वाले जीवों को प्राप्त हुआ है। नर-रूपधारी गुरुदेव भी सद्गुरु के ही अवतारी रूप हैं। इस प्रकार श्री सिया रामभद्र जू की प्राप्ति सिया स्वामिनी जू के माध्यम से सिद्ध होती है।

६—सृष्टि तत्व में भी दोनों की अभिन्नता है। पुरुष के पास तो "बीज" तत्व रहता है और स्त्री के पास "रज" तत्व। वीर्य के उसी बिन्दु से कभी लड़की पैदा होती है, और कभी लड़का पैदा होता है। उसी प्रकार रज तत्व से भी कभी पुरुष प्रकट होता है और कभी स्त्री उत्पन्न होती है। इस प्रकार पुरुष तत्व में स्त्री तत्व और स्त्री तत्व में पुरुष तत्व भी है। सृष्टि लीला की अवश्यकता के अनुसार पुरुष तत्व से भी दोनों लिंग (स्त्री, पुरुष वाची) वाले जीव प्रकट होते हैं और स्त्री तत्व भी दोनों लिंग बोधक जीव को प्रकट करता है।

इस प्रकार सिद्ध हुआ कि पुरुषत्व में स्त्रीत्व है, और स्त्रीत्व में पुरुषत्व छिपा है। अवतारी लीला रूप को भी प्रकट करना योगमाया श्री सीताजी का ही कार्य है। प्रकट लीला से ही जीव को भक्ति-शिक्षा एवं भगवान् की प्राप्ति है।

जनकपुर में दुलहा सरकार के साथ सखियों का विनोद चल रहा था। प्रश्न उत्तर के क्रम में कूटे हुए धान की ओर संकेत करते हुए श्री रामभद्र जू ने संकेत किया कि वे अच्छत (चावल) है, सखियाँ धान के भूसा हैं-ऊपरी छिलका हैं। तब उन्हें कहा था कि ठीक है आप अच्छत ही बने रहिये न, केवल चावल को भूमि में डालने से एक भी धान का पौधा नहीं होगा। छिलका सहित चावल को बो दीजिये। अनेकानेक धान पैदा हो जायेगा। आपको तो स्वयं प्रकट होने की भी शक्ति नहीं है। आप केवल इच्छा करते हैं और सिया जू क्रिया शक्ति के रूप में उसकी पूर्ति करती हैं। आपको सदा प्रसन्न रखना ही उनका ध्येय है, चाहे साकेत हो या नैमित्तिक लीला क्षेत्र हो।

शक्ति शक्तिमान से भिन्न नहीं, पर शक्ति द्वारा ही कार्य सम्पादन होता है। आप जब कहते हैं "एकोऽहं द्वितीयो नास्ति" तब भी सिया जू आपके अन्तरस्थ रहती हैं। शक्तिमान सोता है तो शक्ति भी उसके भीतर ही सुप्त रहती हैं। ज्योंही आपकी इच्छा हुई "एकोऽहं बहुस्याम्" तो वे आपकी प्रसन्नता के लिये नाना रूप सृष्टि की रचना कर डालती हैं। एक रूप से अनेक रूप हो जाता है। "रूपं रूपं प्रति रूपं बभूव।" सियास्वामिनी जू ही आपको आपकी इच्छा के अनुसार आवरणयुक्त रखती हैं और जब आप सृष्टि में प्रकट होना चाहते हैं, तब वे आपको प्रकट कर देती हैं। आपको जन से मिलाना भी तो उन्हीं का काम है।

७—ऊपर की चौपाई में उल्लेखित किया गया है "राम सच्चिदानन्द दिनेसा" सच्चिदानन्द सूर्य

के प्रकाश रूपा सियास्वामिनी जू हैं। श्री रामभद्र जू सत्, चित्, आनन्द तीनों तत्व के सूर्य हैं और सियास्वामिनी जू तीनों तत्व के प्रकाशरूपा हैं। सत, चित्, एवं आनन्द तत्व की अभिव्यक्ति, शक्ति ज्ञान एवं आह्लादिनी रूप बनकर स्वयं सिया जू ही करती हैं। सरकार की प्रभुता शक्ति द्वारा ही प्रकट होती है, ज्ञान रूपी प्रकाश द्वारा ही सरकार का चिन्मय रूप दिखाई पड़ता है और अह्लादिनी द्वारा प्रदर्शित प्रेमाचरण कर ही आनन्द स्वरूप प्रीतम प्रभु की प्राप्ति सम्भव है। इस प्रकार प्रभु के त्रिविध सच्चिदानन्द रूप को दिखाने वाली भी स्वयं श्री सिया जू ही हैं। सृष्टि लीला में स्वयं सिया स्वामिनी जू विद्या माया बनकर जीव को श्री रामजी की ओर अग्रसर होने का प्रकाश देती हैं।

८—अवतारी लीला में जो जीवन चरित्र लिखे जाते हैं—उनमें सगुन लीला, तो स्वयं श्री किशोरीजी ही हैं।" भृकुटि विलास जासु जग होई।" सारी सृष्टि ही सीता रूपा है। इसलिये सगुण लीला स्वयं श्री किशोरीजी हैं। सगुण लीला में कर्तव्याकर्तव्य का बोध कराकर, नित्य, अनित्य की सूझ उत्पन्न कर भगवत् प्रेम की आवश्यकता पर समुचित प्रकाश दिया जाता है। इस प्रकार जीव की बुद्धि विमल होती है। यथा—

लीला सगुन जो कहहिँ बखानी। सोइ स्वच्छता करइ मल हानी॥

सगुण लीला द्वारा विमलता स्वामिनी सिया जू ही प्रदान करती हैं और विमलता होने से जीव प्रीतम रामभद्र जू की शरणागति पा लेता है।

९—रामचरित्र सागर में बार-बार गोता लगाने से जब पाठक की मति निर्मल हो गयी–तब प्रेमाभक्ति में मन लगा और प्रेम लीला के वर्णन रूपी सरिता जो बह चली उसमें केवल निर्मल चरित्र रूपी जल है, इसी प्रेम सरिता का नाम सरयू है। अनेक काल तक कथा श्रवण एवं ग्रंथावलोकन के बाद ही भगवत् प्रेम पैदा होता है। प्रेम पैदा होने के बाद केवल प्रीति की चर्चा होती है–प्रेम कविता का हृदय में प्रवाह होने लगता है, उसी प्रेम प्रवाह का नाम सरयू है–यथा रामचरितमानस में—

अस मानस मानस चख चाहीं। भइ कवि बुद्धि विमल अवगाहीं॥
चली सुभग कविता सरिता सो। राम विमल यश जल भरिता सो॥
सरयू नाम सुमङ्गल मूला। लोक वेद मत मंजुल कूला॥

उपरोक्त विमल राम-यश से परिपूर्ण प्रेम-सरि सरयू में सिया स्वामिनी की गुण गाथा ही उस सरयू जल की निर्मलता एवं अनुपम गुण है।

सती शिरोमणि सिय गुण गाथा। सोइ गुन अमल अनूपम पाथा॥

इसी निर्मल जल को पीकर ही और स्वामिनी जू के अनुपम गुणाचरणों को धारण कर ही प्रीतम श्री रामभद्र जू मिलते हैं।

इस प्रकार उपरोक्त पंक्तियों में यह स्पष्ट किया गया कि हर प्रकार से सिया स्वामिनी की शरणाई रूपी शीतल छाया में पड़ा रहना कल्याणकारी है, उन्हीं की कृपा से श्री रामभद्र जू की प्राप्ति सुलभ हैं। अन्य मार्गों पर चलकर पूर्ण आनन्द रूप श्री रामभद्र जू की प्राप्ति का प्रयास अरण्य रुदन के समान हैं।

"सी" कहे सुख उपजे, ता कहे तम नाश।
तुलसी सीता जो कहे, राम न छाड़े पास॥

शोभा परम शृङ्गार की, छवि की निधि छवि मूल ।
तेहि पै निछावर सबहिं विधि, प्यारे मन मन भूल ॥
महादानी नित दान सों, निज आह्लाद बढ़ायँ ।
रस सिन्धु रस पान करि, फूलें, फलें अघायँ ॥
प्रीतम प्रेम निकुञ्ज में, लली कली अनमोल ।
जाकी मृदु मुस्कान में, परानन्द रस घोल ॥
चाँदनी में चन्दा दीखे, निज ज्योति भानु लखाय ।
राम प्रभा सिय के बिना, राम नहीं दरशाय ॥
जेहि हिय सर सिय कंज खिले, भ्रमर राम तेहि पास ।
यहि ते सिय पग सोइये, प्रतिपल, प्रति सो आस ॥
सद्गुरु परम प्रसाद से, सिय पद पंकज पाय ।
सिय पग धूलि आंज के, प्रीतम रूप लखाय ॥

१—श्री सिया स्वामिनी की कृपा कटाक्ष से मिथिला कुञ्जों के कोमल रज कण में प्रीतम राम को लली पद चिन्हों की झाँकी मिलती है, कुञ्जों में, विपिन में भ्रमण रूप से घूमते रहते हैं और जय सीते, जय सीते" यही सरस नाम गुनगुनाते रहते हैं, पुष्पों के पराग में सिया रूपी मधु की ही मिठास उन्हें मिलती है । सुमनों के सौरभ में भी सिया स्वामिनी ही सुगंध बनी बैठी हैं ऐसा उन्हें अनुभव होता है । बाग-बगीचे, ताल-तलैया, मणि-सोपान, लता वितान में मुग्ध रूप से बैठा हुआ बसन्त भी सिया रूप ही मालूम पड़ता है जो लता वितान बनकर उनसे लपटने लग जाता है । कोहबर कुञ्जन में तो वे बस ही गये । मिथिला छोड़कर गये ही नहीं । यह मिथिला का दावा है ।

२—वेदों ने उन्हें "रसो वै साः" कहा । वे रस सिन्धु कहे जाते हैं पर उन्हें निज रस से तृप्ति कहाँ ? औरों को राम रस दीवाना बना दे पर इन्हें तो निर्निमेष दृष्टि से लली छवि रस पान करते रहने की टेब पड़ गयी है ।

३—जब श्री मनु सतरूपा की तपस्या से प्रसन्न हुए तो वे "वर माँगो" ऐसा कहते हुए वे बोल उठे—"माँगहु वर जोइ भाव मन, महादानी अनुमान" महादानी कहने का भाव ही हुआ कि उनके जैसा कोई "दानि शिरोमणि" नहीं है पर मिथिला में तो सिया स्वामिनी के आगे "नित" निज आह्लाद की भीख माँगते हैं और उसी आह्लाद में भूले रहते हैं ।

४—जनकराज के साथियों ने प्रथम दर्शन में ही इन्हें "लोचन सुखद, विश्वचित चोरा" की उपाधि दे डाली । सबों के नेत्रों में प्रेमाश्रु आ गये । नगर के लोगों ने भी यहाँ तक कह डाला "जे निज रूप मोहनी डारी, कीन्हें स्ववश सकल नर नारी" मिथिला में कोई बचा ही नहीं जो विश्व विमोहिनी छटा से घायल न हुआ पर किशोरी बाग में फूल लेने गए तो दूर से ही श्री किशोरीजी पर दृष्टि पड़ गयी । वे तो विश्व विमोहन की भी "मनमोहिनी" निकली । स्वयं श्री मनमोहन सरकार कहने लग गये "सुन्दरता कहुँ सुन्दर करई । छवि गृह दीप सिखा जनु बरई ॥ केहि पट तरौं विदेह कुमारी । सब उपमा कवि रहे जुठारी ॥" आप श्री रामभद्र जू "आनन्दहुँ के आनन्ददाता" हैं तो सियाहिया मेनो" सुन्दरता को भी सुन्दर करने वाली

हैं। हर प्रकार से लली जू बीस ही हैं। स्वामिनी प्रेम कला विशारद हैं और प्रियतम प्रेम रस के भूखे हैं।

५—मिथिलावासियों का खाना, पीना, सोना, आपकी मन-मोहकता के कारण हराम हो गया पर "सकल सिद्धि पति जानकी" ने अपनी निज महिमा से सबों को सुन्दर रूप देखने की छूट दे दी। देखते ही रहो, घर में चूल्हा जलने की कोई आवश्यकता नहीं। काम-काज छोड़कर घनश्याम राम के पीछे जहाँ पाव विचरते रहो। भूख प्यास लगते सारे सुख के समान आप रूप सबके घर पहुँचते रह गए। यही बात तो बारात व्यवस्था की रही। श्री जनकराज से लेकर सारे नगरवासी की एक ही हालत थी। "सिया महिमा" से आप रूप, खान, पान, सोने की सारी व्यवस्था बाराती के साथ एवं सरातियों के लिये भी हुई। तब न एक द्रष्टा सन्त ने कहा "बिसरा खान, पान अरु सोना" जो अक्षरशः सत्य उक्त परिस्थिति में कहा जायेगा।

६—यहाँ तो जनकपुरवासी "राम रूप धन" के अभाव में सब प्रकार से सम्पन्न होते हुए भी "रंक" कहे गये। उधर जब श्री रामभद्र जू चारों भाई सिया स्वामिनी सहित चारों बहिन के साथ श्री अवध पधारे तो उस दर्शन की समता कैसे की गयी वह विचारणीय है। कहा गया—

जनम रंक जनु पारस पावा। अंधहि लोचन लाभ सुहावा॥
मूक बदन जनु शारद छाई। मानहुँ समर सूर जय पाई॥

एहि सुख ते सत कोटि गुण, पावहिँ मातु अनन्द।
भाइन सहित बिआहि घर, आए रघुकुल चन्द॥

बधुन्ह समेत देखि सुत चारी। परमानन्द मगन महतारी॥

श्री अवध की पटरानियों के सहित दर्शनार्थ उपस्थित सकल नर-नारी को "जनम रंक" "अंधा" आदि कह दिया गया। चार भाई तो पहले से थे ही, विशेषता इतनी ही हुई जो इस बार इन शृङ्गार रूप चारों भाइयों के प्रकाशक, उनके मूल रूप को दर्शाने वाली चार बहिन आ गयी हैं। अतएव मूल रूप को दिखाने वाली विद्युत ज्योति इस बार साथ आयी हैं। इसीलिये अन्धे को नेत्र मिलने से जो सुख होता है, जनम-जनम के रङ्क को पारस पत्थर मिलने से जो सुख होता है, जन्म के गूँगे को बोलने की शक्ति मिलने से जो सुख होता है अथवा रणक्षेत्र में विजय पाने से जो सुख एक वीर को होता है, उन सुखों से सौ करोड़ गुना सुख माताओं को आज दुलहिन सहित श्री राम चारों भाई के दुलहा रूप दर्शन से हुआ है। "त्रिभुवन जय समेत वैदेही" धनुष भंग करने वाले को मिलेगी। तीनों लोक रूपा तो सिया स्वामिनी ही हैं-तीनों लोक के सूर-वीर राजे-महाराजे जनकपुर में आए। उन सबों को हराकर सियाजू मिलीं। अतएव "विश्व विजयी" की उपाधि तो जनकपुर में ही मिली। साथ ही विश्व-जयमाल भी मिली। इसके बाद तो हार-ही-हार की माला गले में मिलती गयी।

ऐसी सरस अनुपम प्रेम नगरी–मिथिला छोड़कर श्री रामावतार की लीलाओं में अन्यत्र सर्वांगी प्रेम-प्रणय-लीला कहीं उपलब्ध नहीं है। जिन्हें प्राण प्रीतम को रिझाने वाला प्रेमाचरण सीखना है, श्री मिथिला में प्रवेश कर श्री सिया शरणाई लें, मिथिला भाव अपनावें तब मिथिला में चलते-फिरते परमानन्द की अनुभूति होना निश्चित है। अनेकानेक विचित्रताओं से भरी हुई मिथिला सभी प्रेमियों के लिये मङ्गलमय है ऐसा हमारे चरित्रनायक कहा करते थे।

॥ इति शुभम् ॥

अष्टम खण्ड

शिष्यों एवं प्रेमियों की निजी अनुभूतियाँ, आपद निवारण एवं अलौकिक लीला दर्शन

सन्त महात्माओं की जीवनी तो अद्भुतता से भरी होती ही है, प्रभु कृपा से उनके जीवन में अलौकिक चमत्कार आवश्यकतानुसार घटित होते ही हैं। पर उन घटनाओं की छिट-पुट जानकारी कर यदि कोई लेखक सन्त के जीवनचरित्र में स्वयं उल्लेखित कर दे तो आधुनिक तर्कवादी युग में उन घटनाओं को कपोल कल्पित भी कहने वालों की संख्या कम नहीं होगी। अतएव चरित्रनायक के जीवनचरित्र में यह प्रयास किया गया है कि उनके सम्बन्ध में जो भी कहा जाय उसका सच्चा आधार हो। अतएव उनके शिष्यों एवं चमत्कार प्रेमियों के ही लिखित विवरण के आधार पर घटनाओं एवं चमत्कार दर्शन की चर्चा की गयी है। एक प्रकार से चरित्रनायक के जीवनचरित्र में उनके आश्रित शिष्यों एवं प्रेमियों के भी आध्यात्मिक जीवन का कुछ आभास मिल पाता है। इस जीवनचरित्र की यह अपनी विशेषता है।

उनके थोड़े ही शिष्यों एवं प्रेमियों ने निजी अनुभूतियों का विवरण भेजा है पर घटनाओं की संख्या बहुत है, अतएव एक दूसरे से मिलती-जुलती घटनाओं में कुछ को हटाकर ही विवरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

(१) श्री शम्भू बरमेश्वर प्रसाद एडवोकेट, पटना हाईकोर्ट, चरित्रनायक के अनन्य प्रेमियों में थे, उनने अपना अनुभव देते हुए कहा है—

क—श्री अवध में एक बार वे दिव्यकला कुंज में ठहरे हुए थे। दर्शनार्थ चरित्रनायक के स्थान श्री विवहुती भवन आते ही उन्हें प्यास लगी। उनके मन में आया यदि सरयू जल किसी के पास से मिल जाता तो यही जल पीकर तृप्ति हो जाती। कोई परिचित दीख न पड़े। वे चरित्रनायक के पास दण्डवत् कर बैठ गए। समाचार पूछ-ताछ होने के पूर्व ही चरित्रनायक ने कहा "वकील साहब, पहले सरयू जल पी लें, बाद सत्संग होगा।" उनके मन की बात जानकर उनने सरयू जल पिला दिया। इस अन्तर्यामीपन की घटना से वे बड़े ही प्रभावित हुए।

ख—जब चरित्रनायक एक बार पटने आए हुए थे तब वकील साहब यहाँ भी दर्शनार्थ आये। उनने दूर से ही देखा कि चरित्रनायक अकेला बैठे हैं। उनके मन में आया कि श्री वेदान्तीजी आदि महात्मा आते हैं तब बड़ी भीड़ लगी रहती है। पर इनके दर्शन के लिये अब तक कोई नहीं आया है। वकील साहब दण्डवत् कर बैठ गए। चरित्रनायक ने यह कहते हुए बात-चीत प्रारम्भ की "साधु को भरसक अपने को छिपा कर रखने में ही साधुता का निर्वाह हो पायेगा। मैं तो गरीब सेवक भगवान का हूँ। किसी प्रकार लुक-छिपकर जीवन काट लेता हूँ।" यह बात हो ही रही थी कि सैकड़ों लोग वहाँ आ पहुँचे वकील साहब को एकान्त सत्संग का उस दिन अवसर ही नहीं मिला। मन की बात का उत्तर मन में रख वकील साहब अपने निवास स्थान लौट आये।

वकील साहब सपरिवार चरित्रनायक के आजीवन प्रेमी बने रहे। उन्होंने अपने घर पर एक दो रामार्चा पूजा भी चरित्रनायक द्वारा सम्पन्न करायी। चरित्रनायक के साकेत गमन के बाद वर्तमान महाराज जी से भी पूर्व संकल्पित रामार्चा पूजा इनने करायी। हाल ही में वकील साहब परधाम चले गये।

(२) श्री विश्वनाथ प्रसाद जी पटना हाईकोर्ट के महाधिवक्ता कार्यालय में आशुलिपिक के पद पर हैं और वर्षों से वे चरित्रनायक के ही शिष्य हैं। उनकी निजी अनुभूतियाँ निम्नलिखित हैं।

प्रथम दर्शन उन्हें १९५७ ई० में पटना गया रोड पर एक वकील साहब के मकान पर श्री विवाह कलेवा उत्सव होते हुए हुआ। भगवान की झाँकी और चरित्रनायक की विवाह कीर्तन प्रणाली से अति प्रभावित होकर उनने चरित्रनायक को ही गुरु बनाने का निर्णय कर लिया। आगे चलकर इन्हें सफलता भी मिल गयी। इनकी माता, बहन, स्त्री आदि सारे परिवार क्रमशः चरित्रनायक के शरणागत हो गये।

क—विश्वनाथ बाबू ने श्री अवध में ही मन्त्र ग्रहण किया। उसके पूर्व मन में हो रहा था कि दो एक और बड़े महात्माओं के यहाँ भी जाकर कुछ बूझ नहीं पाया। इसी मानसिक अवस्था में उनने चरित्रनायक से मन्त्र लेने का अनुरोध किया। चरित्रनायक उस समय मन की गति जानते हुए बोल गए" कोई बड़े सन्त के पास जाओ, मैं तो बेवकूफ साधू हूँ आदि" इस पर चरित्रनायक के पैरों पर गिरकर विश्वनाथ बाबू ने निवेदन किया कि आपको छोड़कर अब कहीं नहीं जाना है। बहुत अनुनय-विनय के बाद उन्हें शरणागति मिल पायी।

ख—एक साल श्री महाराज जी पटने पधार कर मर्दनीबाग क्षेत्र में श्री विवाहोत्सव का आयोजन सम्पन्न कर रहे थे। एक ही रिक्से पर विश्वनाथ बाबू सारे परिवार के साथ विवाहोत्सव देखने आ रहे थे। शीघ्र पहुँचाने के उद्देश्य से रिक्सा तेजी से चल रहा था। अचानक रेलवे गुमटी के पास सामने से एक मोटर गाड़ी बहुत तेजी से आ रही थी, रिक्सा को दायें-बायें जाना मुश्किल था। भय से आँखें बन्द हो गयीं कि अब तो घायल होना ही है। प्रभु कृपा से मोटर में आप ही ब्रेक लग गया। मोटर रुक गयी। उसके सामने रिक्सा भी खड़ा ही रह गया। चालक ने कहा "मैंने तो ब्रेक दिया ही नहीं" आश्चर्य है कि आप ही ब्रेक लग गया। इस प्रकार विश्वनाथजी का पूर्ण विश्वास है कि वे चरित्रनायक का ही ध्यान किये थे, उन्हीं की कृपा से सारा परिवार सकुशल विवाहोत्सव में भाग ले सका।

ग—एक बार चरित्रनायक ने विश्वनाथ बाबू के निवास स्थान जाने का अनुरोध स्वीकार किया। जिस दिन जाने की तिथि चरित्रनायक ने निश्चित की, उस दिन विश्वनाथ बाबू के घर भोजनादि का सामान ही नहीं था। इधर चरित्रनायक को लेने आये, उधर उनकी माता ने ऐसे दूकानदार से उधार सामान की माँग की जिसके साथ उनका कोई कार-बार नहीं था। उसने माताजी को मुँह माँगा सामान दिया। चरित्रनायक नव दिन तक जमात के साथ विश्वनाथ बाबू के घर रह गये पर जितने दर्शन करने वाले आते वे कुछ-न-कुछ सामान लिये ही आते। इस प्रकार जमात के लिये व्यवस्था में कोई त्रुटि नहीं हुई। सामान बच गये, सो विश्वनाथ बाबू के ही निजी सेवा में लगे।

घ—आपत्ति आने के पूर्व ही उसका निवारण—श्री विश्वनाथ जी एक बार चरित्रनायक के साथ भक्तवर श्री रामाजी महाराज के आश्रम सरेयाँ गये थे। वहीं पर चरित्रनायक ने उन्हें कहा कि तुम्हारा घर जाना आवश्यक है। यह कहते हुए उन्होंने मार्ग व्यय तक स्वयं दे दिया। श्री महाराज जी की कृपा से १५-२० दिन में एक नया मकान के बनने के बाद ही विश्वानाथ बाबू का पुराना मकान नहर में पड़ गया। नवीन मकान न बनता तो उन्हें गृहहीन ही रहना पड़ता।

ङ—श्री मोबारकपुर में हरिनाम संकीर्तन सम्मेलन से लौटती बार श्री विश्वनाथ जी माता सहित हमारे चरित्रनायक के साथ ही पाँव पयादे मशरक स्टेशन आ गये। टिकट कटने के बाद सभी ट्रेन पर चढ़ गए पर माता सहित विश्वनाथ बाबू नहीं चढ़ पाये। शोकाकुल अवस्था में विश्वनाथ बाबू कुछ सोच न पाए। एक सो गज आगे जाते ही गाड़ी रुक गई जब तक वे माता सहित चरित्रनायक के डिब्बे

में जब तक बैठ नहीं गए—गाड़ी रुकी ही रही। यह भी चरित्रनायक की ही महत्वकारी कृपा सूचक घटना है।

च—सपने में अनुपम गुरुपूजन—एक साल पैसे के अभाव में विश्वनाथ बाबू गुरु पूर्णिमा में भाग लेने मुजफ्फरपुर नहीं जा सके। सपने में उन्होंने देखा कि भीड़ बहुत है, कैसे पूजा करूँ। तब श्री महाराज जी ने कहा—"तुम पहले पूजा कर लो।" पूजा का पूरा सुख मिला पूजा के बाद आशीर्वाद पाकर मुजफ्फरपुर से चल पड़े। नींद टूट गयी पर मन तो गद्‌गद हो गया। पुनः नींद पड़ी तो देखा कि चरित्र-नायक रिक्सा पर बैठे हैं। उन्होंने कहा एक बार और पूजन कर लो। दोबारे पूजन किया गया और पुनः हर्षपूर्वक आशीर्वाद पाये। मुजफ्फरपुर नहीं भी गये तो क्या हुआ? सारी रात गुरु पूजन में ही बीत गयी, इससे बड़ा आनन्द अवसर और क्या होता!

छ—बिना आपरेशन से अस्पताल में मरा बच्चा बाहर आ गया—एक समय की बात है कि विश्वनाथ बाबू गर्भावधि पूरी होने पर अपनी पत्नी को अस्पताल में भर्ती कराने गये। डाक्टरों ने कहा कि बच्चा पेट में मर चुका है। बिना अपरेशन के बच्चा बाहर नहीं आ सकता। सूई दी गई-कष्ट कुछ कम हो गया। डाक्टर ने कहा कि अपरेशन कल होगा। विश्वनाथ जी अपने निवास स्थान वापस आ गये। वहाँ रात्रि में दो बजे विश्वनाथजी की पत्नी को दर्द आरम्भ हो गया। अपरेशन मेज पर उनकी पत्नी को लाया गया तो वह मन में सोचने लगी कि अभी कोई परिवार के सदस्य नहीं हैं। श्री महाराजजी का चरणामृत तक नहीं मिल पाया। आँखें बन्द हो गयीं तो उनकी पत्नी ने देखा श्री महाराज जी खड़ावन पहने आये और बोले कि मैं तो पास ही हूँ, चिन्ता क्या है? डाक्टर साहब सामान चीर फाड़ का मँगाते ही रह गये, बच्चा अचानक बाहर आ गया। सभी दङ्ग हो गये। सिद्ध हो गया कि चरित्रनायक सर्वसमर्थ होते हुए सर्वव्यक भी हैं।

ज—श्री अवध की एक अद्‌भुत घटना—एक साल श्री अवध में सभी महात्माओं के स्थान जाकर वस्त्र एवं रुपये वितरण का भार विश्वनाथ बाबू, डाक्टर शान्तिलाल अग्रवाल, एवं गुरुशरण बाबू के जिम्मे किया गया था। वे लोग श्री राममिलन कोतवाल के साथ सारे अवध का भ्रमण कर रहे थे। मणि पर्वत पर श्री रामचन्द्र बाबा के दर्शन हुए। उनके साथ ही बातचीत करते हुये विश्वनाथ बाबू आदि सज्जन स्थान लौट रहे थे। रास्ते में विश्वनाथ जी ने ऐसा कहा जिसका अनुमोदन श्री रामचन्द्र बाबा ने भी किया "क्या अच्छा होता, यहाँ एक अपना मकान बन जाता।"

दूसरे दिन प्रातःकाल नाम ध्वनि होने पर चरित्रनायक बोल उठे—"एक वेश्या की लड़की भी एक भक्त वा संत से अच्छी है क्योंकि वह माता की आज्ञा मानकर अपनी इज्जत बेंच माँ की सेवा कर रही है। वह भक्त या सन्त अच्छा नहीं कहा जा सकता जो गुरुदेव की आज्ञा मान भजन नहीं करता है बल्कि गुरुदेव की देखा देखी श्री अवध में महल बनाने की बात ही सोचता रहता है। गुरु आज्ञा उल्लङ्घन के कारण वैसे शिष्य की अधोगति तक हो सकती है।

चरित्रनायक की सुधार प्रणाली एवं शिक्षा प्रणाली अपने ढंग की थी। विश्वनाथ बाबू तो बूझ गये कि यह उन्हीं के हृदय में उठते हुए अरमान का उत्तर है।

झ—श्री अवध में अपने उत्तराधिकारी के सम्बन्ध में पूर्व संकेत—एक साल श्री विश्वनाथ बाबू झूले के अवसर पर श्री अवध वास कर रहे थे। कई शिष्यों ने चरित्रनायक से निवेदन किया कि आपने जीवन काल में अपने उत्तराधिकारी की व्यवस्था नहीं की। आपको तो सब पता होगा। कृपाकर हम सबों

को भी बतावें। चरित्रनायक ने उत्तर दिया "श्री विवहुती भवन स्थान श्री किशोरी जी की सम्पत्ति है। इसमें हमारा कुछ वश नहीं है। आप लोग जिसको कहें बना दिया जाय।" बात यहीं खत्म हो गयी।

पटना वापस आने के समय विश्वनाथ बाबू आदि शिष्यगण प्रसाद के साथ राम चकरा पा रहे थे और श्री बैजनाथ शरण जी महाराज सबों को पवा रहे थे। ऐसा दीख पड़ा मानों चरित्रनायक अपनी अँगुली से श्री बैजनाथ शरण जी की ओर इशारा करते हुए संकेत कर रहे हैं कि भावी महन्त यही होंगे। विश्वास नहीं हुआ, पर चरित्रनायक के शरीर त्याग के बाद तो उक्त घटना की सत्यता पर मुहर लगा ही दिया गया।

ट—एक बार पटना के अन्य भाइयों के साथ श्री विश्वनाथ जी मशरक जगन्नाथ बाबू के घर गये थे। उत्सव के बाद सबों को छुट्टी हो गयी पर विश्वनाथ बाबू का मन अभी चरित्रनायक के साथ अधिक दिन ठहरने का था। चरित्रनायक ने उन्हें भो अन्य लोगों के साथ यह कहते हुए विदा कर दिया कि "तुम्हारा पटना जाना बहुत आवश्यक है।" लौटकर विश्वनाथ जी ने पाया कि उनके छोटे पुत्र को लकवा मार दिया है। उसका उचित उपचार करने से और प्रसाद चरणामृत पिलाने से लड़का तुरन्त ठीक हो गया।

उधर महाधिवक्ता ने भी जिनके अधीन श्री विश्वनाथ जी कार्य करते थे अपना शरीर उसी समय त्याग किया। इस प्रकार इनके दाह संस्कार में भी सम्मिलित होने का सुयोग विश्वनाथ जी को मिल गया।

ठ—एक बार श्री गुरुशरण बाबू के साथ विश्वनाथ बाबू मशरक विवाहोत्सव में जा रहे थे। पहलेजा घाट से बस पर छपरा के लिये रवाना हुए। रास्ते में बस का शीशा टूटकर उनकी बायीं कहुनी पर ऐसा गिरा कि वे बेहोश हो गये। एक खाली सीट पर पड़ गये। बाँह फूल गया। छपरे में मशरक वाली बस में चढ़ गये। वहाँ पहुँचते जब उन्होंने गुरुदेव को दण्डवत् किया, तब उन्होंने दर्द कैसे हुआ, इसकी पूछ-ताछ की। कृपा कर उन्होंने अपने हाथों से ऐसा सुहला दिया कि दर्द तो चलता बना। फूला हुआ बाँह भी दूसरे दिन पूर्ववत् ठीक हो गया।

ड—अँग्रेजी फैसले का भूला कागज चरित्रनायक ने ढूढ़ दिया—

एक बार चरित्रनायक श्री विश्वनाथ बाबू के घर ठहरे हुए थे। उस रात्रि को विश्वनाथ बाबू एक फैसला टाइप कर रहे थे। उसमें एक दूसरे फैसले में 'कोटेशन' उद्धरित करना था। रात में चार बजे भोर हो चला। वह कोटेशन वाला कागज मिल ही नहीं रहा था। चरित्रनायक उनके पास आ गए और ठीक उसी कागज को खोजकर उन्हें दिया कि जरा इसे तो देखो। उसी की तो खोज थी। लगा कि चरित्रनायक सर्वभाषा के ज्ञाता थे। विश्वनाथ बाबू की नौकरी बच गयी। फैसला समय पर टाइप हो गया।

श्री विश्वनाथजी की अन्य कई घटनायें है जिनमें भी चरित्रनायक की कृपालुता, दीन बन्धुता की विशेष चर्चा है। विना बुलाए आकर संकट निवारण करना, हृदय की कामना बिना कहे पूरी कर देना आदि। एक दिन विश्वनाथ बाबू कार्यालय से भूखे प्यासे आ गए, चरित्रनायक यहाँ आगे से पहुँचे हुए थे। रात्रि में कीर्तन १२ बजे रात तक चलेगा। विश्वनाथ बाबू ने समझा आज १२ बजे रात तक भूखे रहना पड़ेगा। चरित्रनायक तो कीर्तन के बाद ही पायेंगे। मन की बात जानकर गुरुदेव कहा, आज जल्दी भोजन बन जाये। प्रसाद पाकर ही कीर्तन होगा। इस प्रकार विश्वनाथजी को प्रसाद पवाकर ही कीर्तन आरम्भ हुआ।

३—श्री गुरु शरणलाल, शिक्षा विभाग के शाखा-पदाधिकारी पद पर बिहार सचिवालय पटने

में कार्य करते रहे। हाल ही में उन्होंने सेवा-अवधि पूरी कर अवकाश ग्रहण कर लिया है। चरित्रनायक के अनन्य शिष्यों में अपने समान आप एक ही हैं। उन्होंने शरणागति से आरम्भ कर चरित्रनायक कृपा से घटित कतिपय घटनाओं का उल्लेख किया है। उनमें से कुछ विशेषतापूर्ण घटनाओं को प्रस्तुत किया जा रहा है।

[क] अद्भुत परिस्थिति में शरणागति—श्री अनन्त अलबेला बाबा के साथ इनकी गुरुवत भावना थी। पर उन्होंने १९५१ तक इन्हें गुरु मन्त्र नहीं दिया। श्री अलबेला बाबा तो चेला करते भी नहीं थे। अतएव इन्होंने अलबेला बाबा से आज्ञा प्राप्त कर १९५१ आषाढ़ गुरु पूर्णिमा के लगभग मुजफ्फरपुर के लिए प्रस्थान किया। वहाँ अपने फुफेरा भ्राता श्री रामयत्न लाल के निवास पर ठहर गए। उस समय चरित्रनायक आठ लीला स्वरूप सरकार के साथ उसी जगह ठहरे हुए थे। उनके साथ लड़कों का खेल, झाँकी आदि का दर्शन कर ये अप्रभावित-सा थे। उनके मन में था कि बाहरी लक्षण तो कोई बड़े सन्त का नहीं है। कीर्तन मण्डली घुमाने वाले तो कितने ही लोग तिलक स्वरूप संसार में विचरते हैं। पूर्व से चरित्रनायक की बहुत बड़ाई सुन चुके थे, उसी से इन्हें प्रचुर प्रेरणा मिली थी और शरणागत होने के उद्देश्य से ही वे वहाँ आ पधारे थे।

एक दिन ३–४ बजे प्रातःकाल एकान्त अवसर पर चरित्रनायक से शरणागति प्रदान करने का अनुरोध कर ही दिया गया। सुनते ही चरित्रनायक ने कहा 'गुरु शरण बाबू बी० ए०, एम० ए० पास पंडित बाड़े। सरकार के सचिवालय में काम कर लें। हम अपढ़बानी। बोले भी न आवे। गुड़िया पुतली खेल में रहीं ले। इनका अगाध सन्त गुरु होखे के चाहीं। 'हमरा से इनका मन भी ना भरी'।

गुरुशरण बाबू के मन की सारी शंकाओं को चरित्रनायक ने अक्षरशः प्रकट कर दिया। मानो भ्रम रूपी विशाल फोड़े का बड़ा आपरेशन चरित्रनायक ने एक क्षण भर में कर दिया, वह तो फूटकर बह गया। सुप्त सनातन प्रेम का जागरण हो गया जो प्रेमाश्रु के रूप में निकल कर भावी गुरुदेव के चरणों का प्रक्षालन करने लगा। इनका रोना बन्द ही नहीं हो रहा था तब चरित्रनायक ने इनका माथा सहलाते हुए कहा कि अब रामयत्न बाबू के घर गुरुपूजा कराने आऊँगा तू वहीं तैयार रहना। इस प्रकार गुरुपूर्णिमा के दिन ही उन्होंने मन्त्र ग्रहण कर लिया।

[ख] गया सम्मेलन में पाँच छव हजार रु० के शृंङ्गार समान की चोरी चरित्रनायक अप्रभावित—शरणागति के बाद प्रथम बार गुरुशरण बाबू चरित्रनायक के दर्शनार्थ गया सम्मेलन में गये थे। श्री रामप्रताप शरण जी वैद्य ने चरित्रनायक को गुरुशरण बाबू के सामने यह सूचना दी कि पाँच छव हजार रु० मूल्य का स्वर्णाभूषण शृङ्गार का लोगों ने हाथ मार लिया। चरित्रनायक ने कोई उत्तर नहीं दिया। गुरुशरण बाबू को प्रसाद देकर विदा किया पर इसकी कोई चर्चा उनसे नहीं की गयी। धन सम्पत्ति से चरित्रनायक की अनाशक्ति का यह उदाहरण गुरुशरण बाबू को पहली बार मिला।

[ग] श्री अवध का एक अनुपम दृश्य—एक बार गुरुशरण बाबू रासकुंज में श्री महाराजजी के पास बैठे थे। आज भोर ही से आगन्तुओं का ताँता लग गया। अपनी शक्ति के अनुसार लोग सामान के साथ चरण पूजा लिए हुए आते और दण्डवत कर चले जाते। बिना डोल-डाल किये, बिना दन्तवन किए चरित्रनायक ११ बजे दिन तक बैठे रह गए। तब स्थानवासी एक सेवक आकर बोल उठा, "आप लोग श्री महाराजजी को अब डोल-डाल जाने दें, दतवन भी नहीं कर पाये हैं। सब प्रातःकालीन क्रिया कर्म बाकी ही है।"

इस पर चरित्रनायक झुँझला कर कहने लगे "हम श्री रामाजी महाराजजी से कितना अर्ज कइली

कि सरकार हमरा इ लेन देन में न फँसावल जाव, उहाँ का जबरदस्ती यकरा हमरा गला में भढ़ देहलीं।"

घ—श्री अवध ही की एक दूसरी घटना—एक साल अगहण प्रधान विवाह पंचमी का अवसर था। उस समय तक चरित्रनायक की स्थूल दृष्टि कम हो गयी। गुरुशरण बाबू और लाला बाबू नाम धुनि के बाद जहाँ महाराजजी बैठे थे वहीं दण्डवत कर बैठ गये। श्री रंगलाल चौधरी जो पास ही बैठे थे इन लोगों का नाम चरित्रनायक को बता दिया। आगन्तुकों ने चरण पूजा जो चढ़ाया था पैरों पर ही पड़े थे। श्री रंगलाल जी ने आदेशानुसार गिनकर झोले में रख दिया। श्री महाराजजी की दाढ़ी बहुत बढ़ गयी थी। यह देखकर धनबाद के एक प्रेमी ने कहा कि दाढ़ी क्यों नहीं बनवाई जाती है। उत्तर मिला 'दो आना पैसा हजाम लेवेला, अपना पास पैसा कहाँ ?' वे प्रेमी हँस पड़े और बोले कि आपको पैसे की कमी ? चरित्रनायक धनबाद के प्रेमी का भाव ताड़ गये। उन्हें उत्तर दिया गया कि आप तो कितनी देर से यहीं बैठे थे। किसी ने ५१ रु० दिया तो किसी ने १२१ रु० दिया। सबों से पूछता गया कि रुपया किस काम के लिये दे रहे हैं। किसी ने कहा विवाह के लिए। किसी ने उत्तर दिया कलेवा के लिए और कितनों ने तो कहा भण्डारा के लिए। जिस कार्य के लिये लोगों ने दान दिया है, सारे रुपये उन्हीं कार्यों में लगाये जायेंगे। किसी ने नहीं कहा कि पैसा आपकी निजी सेवा के लिए दे रहा हूँ। तब आप बतावें मेरे पास निजी कोष कहाँ है ? कभी-कभी श्री किशोरीजी प्रेरणा कर किसी से कुछ दिलवादेती हैं, तब उसी से निजी सेवा कार्य होता है। जितने रुपये प्राप्त हुए थे सब सरकारी कोष के हैं—और मैं उस धरोहर को बचाकर उचित अवसर के लिये सुरक्षित रखता हूँ। इस उत्तर से प्रेमीजी की बोलती ही बन्द हो गयी।

(ङ) हरिहरगंज, जिला गया में अनुपम विवाह-कलेवा का आयोजन-बेगुसराय सम्मेलन से एक दो दिन आगे श्री अलबेला बाबा गुरुशरण जी के सहित बेगुसराय पधारे। श्री बाबा ने गुरुशरण जी से कहा कि एक विवाह तुम्हारी जन्मभूमि, ग्राम शतगावाँ के पास ही कराना चाहता हूँ। तुम गुरुदेव से प्रार्थना करो तो इस आयोजन की स्वीकृति तुम्हें देंगे। परस्पर मिलन-जुलन के बाद चरित्रनायक ने हरिहरगंज में विवाहोत्सव सम्पन्न करने की स्वीकृति दे दी। श्री हरिहरगंज में बसन्त काल में विवाह-कलेवा सम्पन्न हुआ। औरंगाबाद से हरिहरगंज तक जगह-जगह पर दुलहे की अपूर्व पूजा आरती हुई और हजारों की संख्या में लोग उत्सव में सम्मिलित हुये। उस अवसर पर गुरुशरण बाबू की जन्मभूमि को भी चरित्रनायक ने पधार कर पावन किया।

च—३६ दिनों के मयादी बुखार में पथ्य आम और दूध प्रसाद देकार बुखार को बिदा किया गया।

१८६७ में गुरुशरण बाबू इतना रोग ग्रस्त हो गये कि उतनी लम्बी अवधि तक आज तक के जीवन में कभी बीमार नहीं पड़े थे। अर्थाभाव, लम्बा चौड़ा परिवार, सारी व्यवस्था का भार उन्हीं के मत्थे था। दवा-दारू लगातार होते गये पर मर्यादा बुखार छोड़ने को तैयार न हुआ। डाक्टर ने चालीसवें दिन पथ्य देने का निर्णय किया था। अन्न से भेंट नहीं, केवल फल दूध पर जीवन कायम रखा गया था। रह-रहकर रो पड़ते थे। कारण रहित कृपाल गुरुदेव के दर्शन की कामना बढ़ती गयी। ३६ दिनों पर श्री जगत बाबू, (बबुआजी) के घर किशोरी बाग में गुरुदेव आ गये हैं। यह सूचना उन्हें मिली। उनने अपने पुत्र को भेजकर सूचना की पुष्टि करा ली। चरित्रनायक ने सम्वाद दिया कि वे गुरुशरण बाबू के घर जाकर स्वयं उन्हें दर्शन देंगे। पर दिल नहीं माना। भोर होते ही वे छड़ी के सहारे रिक्शा, रोड पर आकर पकड़े और किशोरी बाग आ गये। अपने गुरुदेव का दर्शन पाकर निहाल हो गये। उन्हें छोड़कर कहीं

जाने का मन ही नहीं हुआ, गुरुदेव ईश्वरदयाल बाबू के घर गये, गुरुशरण बाबू भी वहाँ रिक्शा पर चले गये।

उन्हें गुरुदेव ने भर पेट दूध और आम को भोग लगाकर पथ्य रूप में दिया। रात्रि में वे अपने निवास लौटे। पुनः प्रातःकाल रिक्शा कर अपने छोटे लड़के मनमोहन के साथ जगत बाबू के निवास आ गये। वहाँ भोग लगा हुआ खींचड़ी एवं चोखा प्रसाद पाकर ईश्वरदयाल बाबू के घर गुरुदेव के साथ आये। यहाँ उन्होंने रामार्चा पूजन में दिन पर कार्य किया। रात्रि में डालडा से बनी पूड़ी, पूआ तरह-तरह की सब्जी भरपेट पाकर दस ग्यारह बजे घर आये। यहाँ भी नियमानुसार ही-वलिकस आदि पाकर सो गये, खाने-पीने की बात परिवार वालों को नहीं बतायी गयी। चालीसवाँ दिन पाँच-छ साल का पुराना चावल सीझाकर परवर के रस के साथ वे पथ्य पाये। बुखार तो पहले विदा हो चुका था।

छः—बड़ी लड़की अरुण के विवाह में असम्भव सम्भव हो गया

यों तो शरणागत होने के बाद गुरुशरण बाबू ने जीवन की समस्याओं के समाधान में अपने गुरुदेव का वरदहस्त बराबर अपने ऊपर पाया, तो भी कुछ घटनायें विशेष उल्लेखनीय हैं। बड़ी लड़की अरुण का शुभ विवाह भी उन्हीं विशेष समस्याओं में एक था। उस समय गुरुशरण बाबू की निजी आय कम थी। एक ही कमाने वाले थे। लड़कों की शिक्षा और लड़कियों की शिक्षा में काफी व्यय होते थे। अर्थ संग्रह की कोई गुंजायश नहीं थी। शरीर से भी स्वयं असमर्थ-सा बन गये थे। आपकी पत्नी को उस समय तक लकवा मार दिया था। वह भी गुरुदेव कृपा से ही जीवित रह रही थीं। चरित्रनायक ने १९६० में जगत बाबू को सपत्नीक श्री अवध वास दे दिया। पर गुरुशरण बाबू की समस्याओं के समाधान के लिये उन्हें कुछ काल तक पटने में ही रोका गया। निर्णय ऐसा लिया गया कि बड़े लड़के ललिता जो डाक्टरी पढ़ रहा था, उसका भी ब्याह और लड़की का ब्याह एक साथ ही सम्पन्न किया जाय जिससे लड़के के लिये प्राप्त दहेज आदि का उपयोग लड़की के ब्याह में किया जाय। गुरुदेव कृपा से सुयोग १९६१ ई० में आ गया। तो भी जहाँ विवाह तय हुआ वहाँ लड़के के अभिभावक मात्र पाँच सौ रुपये के लिये पूर्व निर्णय को भङ्ग करना चाह रहे थे। इधर पाँच सौ रुपये की व्यवस्था का प्रयास जारी रहा, उधर स्वयं लड़के ने भी अच्छा दृष्टिकोण अपनाया और अपने अभिभावक से कह दिया—"मात्र पाँच सौ रुपये के लिये समाज में किसी भले आदमी के साथ विवाह सम्बन्ध भङ्ग नहीं किया जा सकता दूसरे दिन रुपये भी मिल गये और अभिभावकों के दृष्टि कोण में भी गुरुदेव कृपा से परिवर्तन आ गया। इस प्रकार विवाह सम्पन्न हुआ। इस घटना के बाद उनका बड़ा लड़का डाक्टर ललिता नौकरी पा गया और गुरुशरण बाबू की भी प्रोन्नति हो गयी। इस प्रकार परिवार के जीवन में आशातीत परिवर्तन आ गया शादी, ब्याह, पढ़ाई, लिखाई सभी कार्यों में सुविधा हो गयी। कृपा भई गुरुदेव की, "लुची दोनों जून" गुरुदेव कृपा की बलिहारी है।

४—श्री जगतनारायण सिन्हा (बबुआ जी)—पटना ने १९३७ में श्री अवध धाम में ही सरयू तट पर श्री सिद्ध किशोरीजी के आदेशानुसार चरित्रनायक से गुरु-मन्त्र ग्रहण किया। हमारे चरित्रनायक से उनका प्रेम तो १९३५ ई० से ही हो चुका था। निजी अनुभूति बताते हुए उन्होंने विशेषकर चरित्रनायक की सर्व शक्तिमता एवं सर्वज्ञता का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

(क) सर्वज्ञता—हमारे चरित्रनायक ने एक साल झूले के अवसर पर अपनी शिष्या (जगत बाबू की धर्मपत्नी) से पूछा, प्रसन्न हो न ? उत्तर मिला "जी हाँ महाराज जी"। अब झूलते-झूलते ही चली जाओगी न ? उत्तर मिला "जी हाँ महाराज जी।" श्री जगत बाबू की धर्मपत्नी शरीर से सर्वथा

असमर्थ हो चुकी थीं। उनकी अष्टयाम सेवा ही जगत बाबू का कुछ वर्षों से भजन बन गया था। इसी परिस्थिति में दम्पत्ति का श्री अवध वास हो रहा था। सर्वज्ञ गुरुदेव तो निज शिष्या की जो जगत बाबू की धर्मपत्नी थी उसके शरीर त्याग की तिथि जानते ही थे। इसी परिस्थिति में चरित्रनायक ने उपरोक्त प्रश्न किया था। और प्रसन्नतापूर्वक उत्तर भी मिला। जिस दिन युगल स्वरूप सरकार गोलाघाट से झूला भूलकर आये, ठीक उसी समय शिष्या ने शरीर त्याग किया। जीवन मरण की बातें हमारे चरित्र नायक जानते थे। इसके उदाहरण जीवन चरित्र के पूर्व खण्डों में भी आ चुके हैं।

(ख) सर्वशक्तिमता—इस सम्बन्ध में अपनी लड़की उषा के शुभ विवाह को ही उदाहरण रूप में प्रस्तुत किया गया है। लड़की के व्याह के सम्बन्ध में जगत बाबू कुछ कर नहीं पा रहे थे। खिन्न होकर उनकी धर्म पत्नी ने कहा आप श्री महाराज जी को पत्र लिख दें। वही विवाह की व्यवस्था करा देंगे। जगत बाबू ने वैसा ही किया। चरित्रनायक ने भी उत्तर दिया कि आपको कुछ नहीं करना है। समय आने सारी व्यवस्था हो जायगी।

तदनुसार एक समय एक लड़का जगत बाबू के पास निजी कार्य से आया था। देखने सुनने में बहुत अच्छा था। इसी अवसर पर चरित्रनायक भी आ गये और प्रसन्न होकर उन्होंने अपने गले का माला जयमाल रूप में लड़के को पहना दिया। बाद टीपन आदि मिलाने से अच्छा बन भी गया। आर्थिक कठिनाई बहुत बड़ी बाधा बनी थी। समाधान जादू जैसा हुआ। विवाह के समय तो जगत बाबू ज्वर-पीड़ित हो पड़ गये पर सारा प्रबन्ध सुचारु रूप से होता गया। बारात के लोग पूर्णतः सन्तुष्ट होकर लौटे। जिनसे आशा नहीं, वैसे लोग सहायक हुए। सारी सुविधायें गुरु कृपा से ही सम्भव हो सकीं।

(ग) सर्वव्यापकता—चरित्रनायक की सर्वव्यापकता का अनुभव जगत बाबू को तब हुआ जब वे एक बार अपने घर से लौटकर सिवान रेलवे स्टेशन के पुल पर चढ़कर दूसरी ओर जा रहे थे। दिन में लगभग बारह बज रहा था। जगत बाबू भूख-प्यास से व्याकुल हो गये और कहाँ कुछ पाने को मिल जाय, इसी चिन्ता में पड़े थे। अचानक अपने गुरुदेव को उन्होंने सीढ़ी पर चढ़ते हुए देखा। दौड़कर दण्डवत् किया तो पता चला कि श्री महाराज जी जनकपुर से युगल सरकार के साथ वापस आ रहे हैं। चरित्रनायक ने दण्डवत् के बाद जगत बाबू से कहा कि चलो पहले हम लोग कुछ पा लें। जनकपुर का चूड़ा पास में है। यही तो जगत बाबू भी चाह रहे थे। उसे चरित्रनायक ने पूरा कर दिया। जगत बाबू दही ले आये, बाद भगवान् का भोग लगाया गया। अपने प्रसाद का पत्तल चरित्रनायक ने जगत बाबू की ओर बढ़ा दिया। भरपेट भोजन के बाद जगत बाबू को जाने का आदेश मिल गया।

५—श्रीलक्ष्मी प्रसाद वर्मा—ग्राम वृन्दावन 'जिला मुजफ्फरपुर इस समय पटना रेलवे सर्विस डाकतार विभाग के एक शाखा-के-शाखा पदाधिकारी रूप में कार्य कर रहे हैं आप १९३५-३६ ई० से ही ही हमारे चरित्रनायक के एक आदरणीय शिष्यों में रहे हैं। चरित्रनायक की कृपा से उन्हें विवाह-कलेवा एवं चौथारी उत्सव पद्धति का पूरा ज्ञान है और वे कहीं-कहीं स्वतन्त्र रूप से श्री चरित्रनायक की पद्धति के अनुसार विवाह-कलेवा का सुख प्रेमियों को देते रहते हैं।

अपनी निजी अनुभूति से कतिपय घटनाओं का वर्णन उनने लिख भेजा है जिनके सारांश उल्लेखित किये जाते हैं।

[क] जब आप नवीं क्लास के विद्यार्थी थे, तब ही से आपको रामायण गान, हरिकीर्तन में जन्मजात अनुराग था। एक बार हमारे चरित्रनायक १९३५-३६ में रामदेनी बाबू के घर वृन्दावन आ पधारे। उनके दर्शनार्थ अपने साथियों के साथ लक्ष्मी बाबू वहाँ गये। रामायण सम्बन्धी कुछ शंका का निवारण

कराना चाहा। अनुमति पाकर उन्होंने प्रश्न पूछा "अस विचारि जिय जागहु ताता। मिलहिँ न जगत सहोदर भ्राता" प्रश्न इतना ही था कि श्री लक्ष्मणजी सहोदर भ्राता कैसे हुए ? यह सुनते ही चरित्र-नायक झल्लाते हुए बोल पड़े, यह जानकर तुम्हें कौन महान् ज्ञान हो जायगा, क्या लाभ होगा ? अपने लाभ की बात सोच समझकर रामायणजी से ढूंढ़ निकाले, वही औरों से सीखें तो मानव जीवन सार्थक हो जाय। मिथिला निवासी होते हुए भी मिथिला की बातें जानने की प्रवृत्ति न होकर युद्ध काण्ड की ओर ध्यान जाना अस्वाभाविक है। आनन्द की बातों में मग्न न होकर युद्ध काण्ड की ओर ध्यान जाना ऐसे ज्ञान से जीवन में सरसता थोड़े आयगी ? किसी स्थान पहुँचने के अनेक मार्ग हैं पर सुगम मार्ग की खोज-कर उस पर चलने में ही आराम होगा इन बातों का लक्ष्मी बाबू पर काफी प्रभाव पड़ा और उनके जीवन का दृष्टिकोण ही बदल गया।

(ख) वृन्दावन के पास ही ग्राम खान जहाँ चक में चरित्रनायक एक बार नाम-नवाह कलेवा आदि का कार्यक्रम सम्पन्न कर रहे थे। श्री लक्ष्मी बाबू, माता-पिता से न बताकर, उसी ग्राम में गये और श्री रामदेनी बाबू से सिफारिस करवा कर उन्होंने चरित्रनायक से युगल-मन्त्र ग्रहण कर लिया। उनके माता-पिता परिवार का विश्वास था कि कण्ठी तिलक धारण करने से सन्तान सुख, सांसारिक सुख दुर्लभ हो जाता है।

(ग) शरणागत होने के बाद एक दूसरे अवसर पर उन्होंने चरित्रनायक से ऐसा प्रश्न कर दिया कि अब उन्हें क्या करना चाहिये। चरित्रनायक ने कहा "कूप में गिरी हुई बाल्टी ऊपर से रस्सी में झगड़ लगाकर निकाली जाती है। भवकूप में पड़े हुए जीव को कृपा डोरी से गुरुदेव निकालते हैं। इसके बाद यह उनका काम है कि जीव का कल्याण कर मार्ग में लगावें और अन्तिम लक्ष्य तक पहुँचावें।' गुरुदेव का भरोसा रखते हुए उनके बताये मार्ग पर चलते रहना ही शरणागत जीव का कर्तव्य है।

(घ) एक बार चरित्रनायक ने पटने में लक्ष्मी बाबू के निवास स्थान पर युगल झाँकी सुख देने की स्वीकृति की और लक्ष्मी बाबू से कहा भगवान् के लिये भोग में स्वयं बनाऊँगा तू सवा सेर चावल सवा सेर दाल एवं सवासेर बैंगन का प्रबन्ध कर देना।

सन्ध्या में झाँकी के अवसर पर अनेकों प्रेमी एवं गुरु भाई आ पहुँचे। अपूर्व सुख युगल झाँकी से बरसा, लोग प्रेम विभोर हो गये। प्रसाद पाने के समय भी चरित्रनायक ने सबों को बैठाकर स्वयं पवाया। बहुसंख्यक लोगों के पाने के बाद भी प्रसाद अवशेष रहा जिसे लक्ष्मी बाबू का सारा परिवार पाया। गुरुदेव कृपा की जय। उनके गरीब नेवाज विरदावली की जय।

(ङ) श्री राधाकृष्ण ठाकुर द्वारा जनकपुर धाम में आयोजित विवाह कलेवा उत्सव में लक्ष्मी बाबू पटने के कई गुरुभाइयों के साथ सम्मिलित हुए उन्हें अष्टयाम सेवा में श्री युगल सरकार को पद सुनना यही प्रधान सेवा मिली हुई है। श्री विवाहोत्सव के दिन अन्य गायकों को सुयोग मिला पर इन्हें पद गान सेवा का सुयोग नहीं मिल पाया।

दूसरे दिन कलेवा अवसर पर हृदय की जानने वाले गुरुदेव उन सभी लोगों को पद गान का सुयोग दिया जो विवाह में नहीं गा सके थे। लक्ष्मी बाबू को तो प्रायः सारा कलेवा कार्य ही सम्पन्न करने का आदेश मिल गया जिससे इन्हें अकथनीय आनन्द की उपलब्धि हुई।

[च] बिना पूर्व तैयारी के ही रामार्चा पूजन सम्पन्न कराया गया

श्री लक्ष्मी बाबू की हार्दिक इच्छा एक रामर्चा पूजा कराने की थी। सुयोग नहीं मिल रहा था। एक बार चरित्रनायक श्री भास्कर पाठक की जन्मभूमि विरमपुर विवाहोत्सव कराकर ट्रेन से पटने आ रहे थे।

उन्होंने ट्रेन को ही आदेश दिया कि रामार्चा पूजा आज ही करा लो अन्यथा पुनः अवसर मिलने की आशा नहीं रखना। चरित्रनायक ने यह भी समझाया कि टोले-मुहल्ले में इसकी सूचना भी नहीं दी जाय। लक्ष्मी बाबू ने ससंकोच इस आदेश को स्वीकार किया। पटना आते ही सारा सामान मनचाही ढंग से संग्रह होता गया और रामार्चा पूजा प्रारम्भ हो गयी। बिना सूचना से भी आगन्तुकों की संख्या बहुत ही बढ़ गयी। पूजा तो स्वयं चरित्रनायक ने ही अपने प्रताप से करा दिया। आनन्द, समारोह सभी अपूर्व लगा।

छ—श्री लक्ष्मी बाबू के बड़े लड़के के विवाह में कौतुक

श्री लक्ष्मी बाबू ने अपने बड़े लड़के के विवाह की तिथि चरित्रनायक से ही तय करायी। चरित्रनायक ने एक काशी के पण्डित से तिथि चुनाव करने को कहा उनके द्वारा तिथि का चुनाव कर दिया गया। वही तिथि चरित्रनायक ने लक्ष्मी बाबू को बतला दी। जब विवाह का अवसर आया तब तिलक के अवसर पर उन्होंने यह तिथि कन्या पक्ष वालों के पास भेजवा दी। गुरु आज्ञा समझकर उसमें हेर-फेर लक्ष्मी बाबू चाहते ही नहीं थे। तिथि का विरोध घर बाहर सर्वत्र से होने लगा पर लक्ष्मी बाबू अडिग रहे। कृपालु गुरुदेव इस असमंजस की घड़ी में आ पधारे। उन्होंने भी काशी के पंडित की भूल को समझा।

निर्णय यही हुआ कि बारात तो निश्चित तिथि पर ही आये पर विवाह दूसरे दिन के शुभ मुहुर्त में किया जाय। जिस दिन बारात गयी उस दिन श्री युगल सरकार सीतारामजी का शुभ विवाह उसी मण्डप में सम्पन्न कर दिया गया। उचित समाधान पाकर सभी गद्गद हुये। बारात में चरित्रनायक स्वयं गये और उन्होंने युगल सरकार का विवाह सम्पन्न कराया। अपूर्व आनन्द की वर्षा हुई।

६—श्री कृष्णदेव प्रसाद अवर सचिव, बिहार सरकार, पटना सचिवालय ने अपनी अनुभूति बताते हुये कहा—

क—हमारे चरित्रनायक से श्री कृष्णदेव बाबू का शिष्य होने के कई वर्ष पूर्व से ही श्रद्धा प्रेम बना हुआ था। एक बार भक्तवर श्री रामाजी के आश्रम सरेयाँ सिवान में युगल विवाह लीला देखने कृष्ण बाबू गये हुये थे। उनके मन में आया कि उनकी चरित्रनायक से गुरुवत् भावना तो बन चुकी है पर क्या सचमुच गुरुदेव 'तत्पदम्दर्शितम्येन'। को इस जीवन में चरितार्थ कर देते हैं। भगवान् के चरणकमल का दर्शन हो सकता है! ऐसा भाव उनके हृदय में विवाहोत्सव के दिन उठा। कलेवा के दिन जैसे ही कलेवा समाप्त होने के बाद वे युगल स्वरूप के महावर रंजित पादपद्मों को स्पर्श करते हुए दण्डवत् करने गये तो उन्हें उन चरणों से अपूर्व ज्योति छिटकती हुई मालूम पड़ी और चरण इतना मुलायम मालूम पड़ा जितना कोमल तत्व का उनने जीवन में स्पर्श भी नहीं किया था। उन्हें पूर्ण विश्वास होगा कि चरित्रनायक ही उनके गुरुदेव होने लायक हैं। इस घटना के बाद ही उन्होंने चरित्रनायक से दूसरे अवसर पर युगल-मन्त्र ग्रहण कर लिया।

ख—एक बार चरित्रनायक विश्वनाथ बाबू के निवास स्थान पर आकर ठहरे हुये थे। कृष्णदेव बाबू ने वहाँ जाकर चरित्रनायक को अपने घर बालभोग के लिये आमन्त्रित किया और निश्चित समय पर चरित्रनायक को लेने गये। उसी समय एक प्रेमी कुछ बालभोग का सामान लेकर आ पहुँचे और चरित्रनायक से भोग लगाने का अनुरोध किया। उन्हें उत्तर मिला कि मैं बाजार की बनी मिठाई आदि भरसक नहीं पाता हूँ। क्षमा करें, यह कहकर चरित्रनायक कृष्णदेव बाबू के घर आ गये।

यहाँ पर घर का बना बालभोग का सामान उन्हें पवाया जाने लगा। उसी समय कृष्णदेव बाबू के छोटे भाई विष्णुदेव बाबू भी बाजार की मिठाई, आदि लेकर सपरिवार आ पहुँचे। उन्होंने भी बाजार के

सामान में से ही चरित्रनायक के मुख में खिलाना आरम्भ किया। कृष्णदेव बाबू भीतर-भीतर डर रहे थे कि कहीं बाजार के सामान की वजह से चरित्रनायक पाना ही न बन्द कर दें। उनके हृदय में तुरन्त यह प्रकाश आया कि हार्दिक प्रेम से दिया हुआ जूठा बैर भी भगवान को सरस मालूम पड़ा था।

(ग) राम मन्त्र सर्वोपरि है—एक साल कृष्णदेव बाबू पारिवारिक संकट निवारण के चलते आर्थिक कठिनाई में पड़ गए थे। ऋण तक लेना पड़ गया था। ऋण सोध की चिन्ता उन्हें सता रही थी। इसी अवसर पर कोई सन्त उनके घर आए और उन्होंने एक मन्त्र कृष्णदेव बाबू को बता दिया कि इसी के जप करने से अर्थ लाभ हो जायगा। 'आरत के चित रहे न चेतू' कृष्णदेव बाबू ने उसका जप आरम्भ कर दिया। इसी बीच आषाढ़ गुरुपूर्णिमा के अवसर कृष्णदेवजी मुजफ्फरपुर गए। वहाँ सामूहिक गुरु पूजा में वे सम्मिलित हो गये। उस अवसर चरित्रनायक ने सत्संग के क्रम में कहा 'भगवान् राम का ही मन्त्र तारक मन्त्र कहा गया है। अन्य सभी मन्त्र, र, और म से युक्त होकर ही बनते हैं और र, म से ही शक्ति पा शक्तिशाली होते हैं। तो भी राम-मन्त्र पाये लोग भी तुच्छ स्वार्थ की सिद्धि के लिये अन्य मन्त्रों की शरण लेते हैं।' अन्तर्यामी गुरुदेव के श्रीमुख से ऐसी बानी सुनकर कृष्णदेव बाबू ने अपनी भूल को का समझा। दूसरे ही दिन से उन्होंने दूसरे मन्त्र का जाप बन्द कर दिया।

(घ) नर रूप में नारायण—कृष्णदेव बाबू के लड़कों से एक सिद्ध संन्यासी महात्मा से प्रेम है। उक्त संन्यासी बाबा अचानक कृष्ण देव बाबू के घर पधारे। उनके बैठक के कमरे में जब संन्यासी महात्मा ने प्रवेश किया तब उनकी दृष्टि दीवार में स्थापित एक फोटो पर गयी। वे तुरन्त खड़े हो गये और कुछ मन्त्रोच्चारण करते हुए प्रणाम किया। वह चरित्रनायक का ही फोटो था जिसकी पूजा कृष्णदेव बाबू नित्य किया करते थे। संन्यासीजी ने कहा कि कृष्णदेव बाबू आप धन्य हैं। ऐसे गुरुदेव आपको कैसे प्राप्त हो गए ? वे तो नर रूप में नारायण ही हैं।

ङ—एक बार कृष्णदेव बाबू अपनी धर्मपत्नी के साथ अवध अगहण मास प्रधान विवाह पंचमी उत्सव के अवसर पर आये हुये थे। चरित्रनायक के स्थूल नेत्र तो कभी से बन्द थे। हाथ पकड़कर ही लोग उन्हें लिये चलते थे। प्रातः कालीन नाम कीर्तन के बाद चरित्रनायक कुछ मुकदमे की बात कर रहे थे। कृष्णदेव बाबू दूर मानसिक दण्डवत कर बैठे थे। बातचीत के क्रम में चरित्रनायक बोल उठे कहिये 'सेक्रेटरी साहब, मैं मुकदमें के सम्बन्ध में सही रास्ते पर हूँ कि नहीं। दूसरे दिन भी उसी प्रकार दूर से ही दण्डवत् कर कृष्णदेव बाबू दूर ही बैठे थे। इस दिन भी चरित्रनायक उनका नाम लेकर पूछ बैठे कहिये ठीक है न।' कृष्णदेव बाबू के मन में निश्चय हो गया कि चर्मचक्षु तो बन्द हैं पर अब अन्तर्दृष्टि से ही आवश्यक कार्यों का सम्पादन हो रहा है।

७—श्री विद्यापति सिन्हा, (लाला बाबू) डाक तार विभाग, टेलीफोन की लेखा-शाखा में एक पदाधिकारी के रूप में पटना मुख्यालय में कार्य करते हैं। आपने सर्वप्रथम श्री अनन्त वेदान्तीजी महाराज से गुरुमंत्र ग्रहण किया था। आगे चलकर इनका भाव प्रेम हमारे चरित्रनायक से बढ़ता गया और उन्होंने सम्बन्ध भाव तथा अष्टयाम सेवा की दीक्षा चरित्रनायक से ही ली। तब से इनका आना जाना श्री विश्रहुति भवन अयोध्या में ही होने लगा। इन्होंने अपनी कतिपय अनुभूतियों की चर्चा की है जिसके विवरण नीचे दिये जाते हैं—

चरित्रनायक के उत्तराधिकारी के सम्बन्ध में पूर्वाभास

(क) लाला बाबू ने बताया कि १९६५-६६ ई० में जब वे श्री अवध गये हुए थे, उसी समय कुछ लोगों ने चरित्रनायक से यह प्रश्न किया कि आपके उत्तराधिकारी कौन होंगे, यह बात अभी तक अन्धकार

में ही पड़ी हुई है। अपने जीवन काल में यदि कुछ प्रकाश आप देते तो हम लोगों का उत्साह बना रहता। इस पर चरित्रनायक ने उत्तर दिया 'मैंने तो भक्तवर श्री रामाजी से यह अनुरोध किया है कि वे वैजनाथ शरण को (वर्तमान महन्त) को मुझे दे दें। अभी तक उनकी स्वीकृति नहीं मिली है।' आगे श्री किशोरीजी की जैसी मर्जी हो। इससे पता चलता है कि वर्तमान महाराजजी का जन्म ही उनके उत्तराधिकारी के रूप में हुआ था।

(ख) एक बार चरित्रनायक पटने आये और लाला बाबू ने उन्हें बुला कर अपने घर पर उनकी आरती पूजा की। लाला बाबू द्वारा अर्पित माला चरित्रनायक ने उनके पिताजी को पहनाते हुए यह कहा कि आप यह माला लाला को पहनाकर उसे अपना हार्दिक आशीर्वाद दे दें। उन्होंने वैसा ही किया। यह घटना १६६७ की है। लगता है कि चरित्रनायक को लाला बाबू के पिता के अन्तिम काल का पता लग गया था, इसीलिये उन्होंने हार्दिक आशीर्वाद दिलवा दिया। उनके पिताजी का देहान्त १६६८ ई० में हो गया। पिताजी के शरीर छूटने की सूचना चरित्रनायक को पत्र द्वारा दी गयी तब उन्होंने लाला बाबू को उत्तर दिया कि आपका पत्र श्री सरयूजी को भेज दिया गया। जो पत्र मैं भेज रहा हूँ, उसकी पूजा विधिवत् श्राद्ध के दिन कर देना। इस घटना से यह बोध कराया गया कि साक्षात् गुरुदेव और पत्र रूप उनके प्रतीक में कोई भेद नहीं रखना है।

(ग) एक बार लाला बाबू ने चरित्रनायक से निवेदन किया कि मुझसे भजन नहीं बन रहा है। गुरुदेव ही सर्वस्व हैं, अतएव मेरे बदले गुरुदेव ही भजन कर दें। उत्तर मिला कि जो शिष्य भजन का बहुत भूखा होता है और सब प्रकार से असमर्थ होने के कारण भजन नहीं कर सकता है, वैसे शिष्य का भजन गुरुदेव कर देते हैं। परन्तु जो शिष्य दिन रात माया से खेलता है और भजन में समय नहीं देता, वैसे शिष्य के लिये गुरुदेव भजन नहीं करते।

८—श्रीकृष्ण ठाकुर पटना सचिवालय में सरकारी कार्य करते हैं उनका घर जिला दरभङ्गा है। ये कई वर्षों से चरित्रनायक के कृपापात्र हैं। उनने भी एक दो निजी घटनाओं की चर्चा की है—

(क) १६६४ ई० में अपनी पत्नी के लगातार बीमार रहने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही बिगड़ती गयी और उनका परिवारिक जीवन भयानक रूप से दुःखमय हो गया। इलाज के लिये पास में पैसे तक नहीं रह गये और बीमारी की अवधि एक मास से भी अधिक हो चली। ऐसी स्थिति में उन्होंने अपने गुरुदेव को बार-बार याद किया। अचानक वे जगत बाबू के निवास स्थान पर आ पहुँचे। सूचना पाकर श्री ठाकुर गुरुदेव के दर्शन के लिये गये, उन्हें ठाकुरजी ने अपनी सारी हालत बता दी। गुरुदेव से उन्होंने कहा कि अब औषधि के लिये पैसे नहीं हैं। आपका शीथ प्रसाद ही उसकी अन्तिम औषधि है। उन्हें समझा-बुझाकर चरित्रनायक ने निवास स्थान लौटा दिया। उसके बाद ही श्री उपेन्द्र मिश्र से प्रसाद भेज दिया गया जिससे श्री ठाकुरजी की धर्मपत्नी पाते ही चंगी हो गयीं। सदा के लिये रोग जाता रहा।

(ख) १६६५ ई० में श्री ठाकुर ने चरित्रनायक से श्री अवध में झूला-सुख लेने के लिये आशीर्वाद प्राप्त किया। परिणाम यह हुआ कि अर्थाभाव होते हुए भी ऐसे प्रेमी सहारा बन खड़े हो गये जिन्होंने हर प्रकार से आर्थिक सहायता देकर उन्हें श्री अवध पहुँचाया। अवध जाने पर पता चला कि चरित्रनायक रूठकर टिकरी आश्रम में पड़े हुए हैं। अपने साथी श्री लखन जी और लाला बाबू को साथ लेकर श्री ठाकुर टिकरी पहुँचे जहाँ प्रतिदिन किंकर्य के साथ-साथ सम्बन्ध भावना की शिक्षा भी दी गई। बड़े अनुरोध करने पर चरित्रनायक श्री अवध वापस आ गये। श्री अवध में झूला सुख के साथ-साथ श्री

विवाह उत्सव आनन्द प्रदान कर चरित्रनायक ने सप्रेम आशीर्वाद पूर्वक सबों को विदा कर दिया।

९—**श्रीमती सुशीला बहन**—का जन्म स्थान बरुराज मुजफ्फरपुर जिले में है। और उनका ससुराल पंडुई जहानाबाद जिला गया में है। वे अपने पतिदेव के साथ पटना बोरिंग रोड मुहल्ले में अपने ही मकान में निवास करती हैं। उन्होंने भी एक दो घटनाओं की चर्चा की है—

(क) १९५४–५५ ई० में सुशीला बहन अपनी १० महीने की बच्ची के साथ झूला उत्सव देखने श्री अवध आ गयी थीं और वहाँ वे नवलवर भवन के छत पर निवास करती थीं। भाद्र द्वितीया के दिन चरित्रनायक फैजाबाद से स्थान का काम कर लौट आये और श्री नवलवर भवन में ही उन्होंने रात्रि निवास किया जबकि उनका आसन रासकुञ्ज में था। लगभग तीन बजे रात्रि में सुशीला जी की बच्ची नीलम जोर से चिल्लाने लगी। आवाज सुनकर चरित्रनायक चरणामृत लिये हुए छत पर आ गये और बच्ची के मुख में उनने चरणामृत दे दिया। इसके बाद कुछ ही क्षण में नीलम ने शरीर त्याग कर दिया। इस घटना से स्पष्ट है कि चरित्रनायक नीलम की मृत्यु का हाल जान रहे थे और समय भी जान गये थे। उन्हें रासकुञ्ज से आने में ३ बजे रात्रि को कष्ट होता, इसीलिये आज उन्होंने नवलवर भवन में ही विश्राम किया। कृपालु गुरुदेव ने तो चरणामृत देकर उस जीव को तो सुगति प्रदान कर दी।

(ख) श्रीमती सुशीला बहन को एक बार श्री अवध में यह खबर मिली कि उनके पतिदेव बीमार होकर दरभंगे में पड़े हुए हैं। श्री अवध में उत्सव समाप्त होने के बाद चरित्रनायक भी सुशीला जी के साथ छपरे तक आये; और उन्होंने आदेश दिया कि जैसी खबर हो दरभंगे जाकर पत्र द्वारा मुझे सूचित करना। दरभंगा जाकर वह सेवा में लग गयी और पत्र लिखना भूल गयी। एक दिन प्रातःकाल जब वह पतिदेव को दवा देने गयी, तब उन्होंने कहा कि पहले मुझे महाराज जी वाला प्रसाद दो। वे मेरे कमरे आये थे और टेबुल पर प्रसाद रख गये हैं। मैंने रुपये चरण पर चढ़ाना चाहा तब उन्होंने स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा कि बीमारी में तुम्हें रुपये की आवश्यकता है, उसी में खर्च करना। सुशीला जी ने देखा कि टेबुल पर सन्तरा प्रसाद पड़ा है उसी में से तीन चार फाँक लाकर पतिदेव को उन्होंने पवा दिया। इसके बाद उनके पतिदेव रोग मुक्त हो गये। सबसे आश्चर्य लोगों को यह हुआ कि जब कमरे के हर द्वार बन्द थे। तो उन्होंने किस मार्ग से प्रवेश किया? सन्त भगवन्त के लिये सभी असम्भव सम्भव है।

१०—**श्री भास्करानन्द पाठक**—वित्त विभाग, सचिवालय, पटना में नौकरी करते हैं। उनकी जन्मभूमि विरानपुर, जिला शाहाबाद है। वे भी कई वर्ष पूर्व हमारे चरित्रनायक से गुरु-मन्त्र ग्रहण कर चुके हैं। उसके पूर्व से भी उनका भाव प्रेम चरित्रनायक से बना हुआ था।

उन्होंने बताया कि एक समय उनके घर पर विवाह और कलेवा उत्सव चरित्रनायक द्वारा सम्पन्न किया गया था। उस उत्सव में उनके ही परिवार के चार छोटे बालकों को पीत वस्त्र धारण करा उन्हें दुलहा बनाया गया। उन बच्चों में ऐसा आवेश आ गया कि उन बच्चों ने पाँच छः घण्टे मण्डप में बैठे रहकर ससुराल के लोगों से ऐसा उत्तर-प्रत्युत्तर किया, मानो सचमुच में चारों राजकुमार जैसा जनकपुर में किये होंगे। इन बच्चों का उत्तर सारगर्भित होता था। सरस पद गान सुनकर उनके अनुकूल भाव-मुद्रा प्रदर्शन करना और भी अचम्भे की बात लोगों को मालूम पड़ी। क्योंकि बच्चों की पढ़ाई नहीं के बराबर थी और पद के भाव को समझकर उनके अनुसार आचरण करना तो एक सज्ञान का काम था।

एक दूसरी घटना का सम्बन्ध उनके बड़े लड़के की बीमारी से है। उनके लड़के को एक साल मृगी जैसा रोग हुआ था। बड़े-बड़े डाक्टरों से इलाज कराने के बाद भी रोग ठीक न हो सका। श्री भास्कर जी श्री जगन्नाथ बाबू के ग्राम मशरक जिला छपरा उत्सव में गये हुए थे। वहीं उन्होंने सारी बात चरित्रनायक के समक्ष प्रस्तुत कर दी। उनके आशीर्वादी प्रसाद से कालान्तर में वह रोग सदा के लिये बिदा हो गया।

११—पंडित देवनारायण पाण्डेय—कार्मिक विभाग, सचिवालय, पटना में टंकक के पद पर नौकरी करते हैं और हमारे चरित्रनायक के कृपापात्रों में एक हैं। उनकी जन्मभूमि ग्राम कनकपुर, जिला छपरा है। ये १९७० ई० में माघ कृष्ण पंचमी को वार्षिक विवाहोत्सव के दिन पंच मन्दिर में सपत्नीक शरणागत हुए। तथा माघ शुक्ल पंचमी के अवसर पर जो विवाहोत्सव जनकपुर धाम में सम्पन्न हुआ था इनके लड़के अशोककुमार तथा इनकी लड़की मंजू कुमारी जनकपुर धाम में ही शरणागत हुए। अपने गुरुदेव का सभी शिष्यों के प्रति समान भाव की चर्चा करते हुए एक पटने की घटना का विवरण उनने प्रस्तुत किया है।

उन्होंने लिखा है कि एक बार चरित्रनायक गर्दनी बाग में भास्करजी के यहाँ ठहरे हुए थे। पंडितजी तथा श्री हरिनारायण चौधरी जी ने जो एक ही जगह निवास करते थे चरित्रनायक से अपने निवास स्थान चलने के लिये अनुरोध किया। इन लोगों की प्रार्थना स्वीकृत हुई। पर चरित्रनायक ने कहा "चल, चलेके त कहइत बाड़, लेकिन ऊँहाँ आँधी आई।" पंडित जी ने उत्तर दिया कि "सरकार चलल जाए ऊहाँ आँधी कुछ ना करी, जहाँ पर गुरुदेव साक्षात् रहब ता आँधी का कर सकी।" चरित्रनायक यह कहते हुए वहाँ से चले "कि अच्छा–हो आँधी कुछ ना करी, अच्छा चल–चले के उहकइत बाड़ त चलतइ हई लेकिन आँधी आई त समहारीह।" इस पर पंडितजी ने कहा "जी सरकार चलल जाए।" हाँथ धराय हुए पाव-पयादे हमारे चरित्रनायक उन लोगों के निवास स्थान पर आ गये। आने पर श्री हरिनारायण चौधरी के निवास स्थान पर गुरुपूजन हुआ। तत्पश्चात् जब चरित्रनायक वहाँ से चलने लगे तो पंडितजी उनके चरण पर पड़ गये। उन्होंने कहा "के बा?" इस पर पंडितजी ने कहा "हम हई सरकार दीनदयाल शरण।" फिर कहे "का बात बा?" पंडितजी ने अपने निवास स्थान पर पूजा करने के लिये चलने का आग्रह किया। चरित्रनायक ने यह कहते हुए वहाँ से पंडितजी के यहाँ चले कि "अच्छा चल, तब आज तोहरे कन रहब।"

पंडितजी के डेरा में उनका श्रद्धापूर्वक प्रेम-पूजन हुआ और रात्रि में वहीं विश्राम हुआ। सुबह स्वल्प रात्रि रहते जब वे लघुशंका को बाहर निकले, तब लघुशङ्का के बाद उन्हें चौधरीजी के निवास पर पुनः लौटा लाया गया जिसका पता चरित्रनायक को न हो पाया। वहाँ प्रातःकालीन नाम कीर्तन हुआ। इसके बाद चलते समय चरित्रनायक ने दीनदयाल शरण जी से पूछा—"अच्छा तो अब खुश बाड़ न, कल्ह चौधरी जी कन नाम-धुन भइल, आज तोहरा कन। अब दूनों घर बराबर हो गइल।" इस पर किसी ने कह दिया "भोर वाला कीर्तन तो चौधरीजी के निवास पर ही हुआ।" यह सुनते ही चरित्रनायक बहुत क्षुब्ध हुए। उनका बराबर नियम यही था कि जहाँ रात्रि विश्राम हो वहीं प्रातःकालीन नाम कीर्तन भी हो उसके बाद ही स्थान परिवर्तन हो सकता था। इस पर उन्होंने लोगों को बहुत समझाया कि ऐसा नहीं करना चाहिये था इसी पर बहुत उपदेश दे चुपचाप बैठ गये। दूसरी जगह जाने का कार्य-क्रम निश्चित था। यहीं आँधी आयी। अब दीनदयाल जी ने बार-बार प्रार्थना किया कि भूल क्षमा की जाय। प्रातःकाल भी चौधरीजी को श्रद्धा हुई कि नाम कीर्तन

उनके निवास स्थान पर हो। इसके लिये मैं दुखी नहीं हूँ। इसके बाद चरित्रनायक प्रसन्न हुए और बोल उठे "तुलसी का पत्ता चाहे छोटा हो या बड़ा, दोनों से ठाकुर जी का भोग लगता है।" भेद बुद्धि ठीक नहीं।

इसके बाद रिक्से से चरित्रनायक श्री विश्वनाथजी के घर आ गये और आगे के कार्य-क्रम में संलग्न हो गये।

१२—श्रीमती आशा रानी धर्मपत्नी श्री मथुरा प्रसाद वित्त विभाग, पटना ने बताया कि जब उनके गर्भ में तीसरा सन्तान था वे बराबर एक बड़े डाक्टर की राय से ही सन्तान सुरक्षा की व्यवस्था करती रहीं उन्हें पूर्व में दो सन्तान पेट चीरकर ही हुए थे। अतएव डाक्टरों के मत से उनका यह तीसरा सन्तान भी पेट चीरकर ही होगा, ऐसा निश्चित हो चुका था।

ठीक सन्तान उत्पत्ति के दिन बड़ा डाक्टर बोला कि पटना अस्पताल में उस दिन कार्य करने की पारी उनकी नहीं है। अतएव चीर फाड़ का अधिकार दूसरे ही डाक्टर को है। यही सब विचार करते काफी रात हो गयी। तब एक सम्बन्धी डाक्टर की राय से उन्हें कुर्जी अस्पताल लाया गया। जब इन्हें चीर फाड़ वाले टेबुल पर रखा गया तब इन्होंने अपने नेत्रों से देखा कि चरित्रनायक उनके चारों ओर परिक्रमा करते हुए बोल रहे हैं कि कोई चिन्ता की बात नहीं है। सुरक्षित रूप से बच्ची उत्पन्न हुई—जो आज तक वर्तमान है। शायद यह घटना १९७३ ई० की है।

१३—श्री मैथिली सहचारी, निवास स्थान—गया के श्री भागवत सहाय की पुत्री हैं। उनके बड़े लड़के श्री गिरजा नन्दन प्रसाद बिहार विद्यालय परीक्षा बोर्ड के बजट ऑफिसर के रूप में पटने में ही निवास करते हैं और मैथिली सहचारी भी अब यहीं रहती है। इनके चाचा श्री राघव प्रसाद हनुमत् निवास के शिष्य थे, इसलिये इन्हें बालपन से ही भक्ति भाव बना हुआ था।

२० साल की अवस्था में ही इनके पतिदेव चल बसे। विधवापन की अवस्था में ही श्री सिद्ध किशोरीजी की लीलावधि के भीतर ही इन्हें चरित्रनायक का दर्शन हुआ और उनसे ही इन्होंने मन्त्र ग्रहण किया तबसे उन्हें चरित्रनायक की कृपा का कई बार अनुभव हुआ। इन्हीं अनुभवों में से कुछ का विवरण उल्लेखित किया जा रहा है—

(क) एक बार सिद्ध किशोरीजी युगल किशोर के साथ हमारे चरित्रनायक गया आये। श्री युगल सरकार श्री सीताराम जी को दर्शन मात्र से मैथिली सहचारी कई घन्टे तक रोती ही रह गयीं। यह खुद भी नहीं समझ पा रही थीं कि ऐसा क्यों हुआ पर श्री सिद्ध किशोरीजी ने कृपा कर माथे पर हाथ फेर दिया और श्री रामजी से भी हाथ धराकर उनकी सेवा में अर्पण कर दिया। इस घटना से मैथिली सहचारी को साक्षात् भगवान् के दर्शन का ही बोध हुआ। उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया कि यह एकमात्र चरित्रनायक की कृपा का ही फल है क्योंकि भगवान् से तो गुरुदेव ही मिला सकते हैं।

गया की अद्भुत घटना

(ख) एक बार श्री मैथिली सहचारी गया विष्णुपद धाम के प्रधान मन्दिर में पूजन करने गयी तो जैसे ही उनने प्रवेश करके एक पैर मन्दिर में दिया वैसे ही उनने देखा कि चरित्रनायक भी पहले ही से मन्दिर में पूजा कर रहे हैं। चरित्रनायक ने उनकी ओर देखा भी देखते-देखते वे लुप्त हो गये। इन्हें चरित्र-नायक की चिन्ता हो गई और पत्र द्वारा इन्होंने चरित्रनायक से समाचार पूछा। उत्तर मिला कि वे ठीक ही हैं। श्री मैथिली सहचारी ने एक बार चरित्रनायक से यह हठ किया कि अनायास इस प्रकार का दर्शन उन्हें बराबर मिलता रहे। चरित्रनायक ने समझाया कि दर्शन कृपा का फल है, कृपा पर दावा नहीं किया

जा सकता। इस प्रकार का लोभ रखना ठीक नहीं। स्वयं भगवान् की ओर से जो कृपा हो जाय, उसी में सन्तुष्ट रहना उचित है।

(ग) एक बार मैथिली सहचरी के पेट में दर्द हुआ, बहुत दवा-दारू के बाद भी आराम नहीं मिला। अचानक उन्हें ऐसा मालूम पड़ा कि उनके मुख में किसी ने हींग घोलकर डाल दिया है। हींग की गन्ध इतनी बढ़ी कि लोग उनके मुँह को सूँघकर यह आश्चर्य करने लगे कि ऐसी घटना कैसे हुई? कुछ काल के बाद चरित्रनायक से दर्शन हुआ तो उन्होंने बता दिया कि हींग उनके मुख में चरित्रनायक ने ही उनके कल्याण के लिये डाल दिया था। मैथिली सहचारी को यह अचम्भा-सा लगा। स्थूल नेत्र के सामने तो वे सदेह आये ही नहीं, तो भी मुख में हींग कैसे डाल दिया गया?

(घ) एक बार गुरुदेव ने इन्हें सहर्ष आशीर्वाद दिया कि तुम जहाँ भी विचरती रहोगी श्री युगल सरकार तुम्हारी कामनाओं को पूरी करेंगे। एक बार वे बद्रीनाथ यात्रा में गयी हुई थीं और रास्ते में काली कमली वाले के एक धर्मशाला में ठहरी हुई थीं। वहाँ हृदय में ऐसा अरमान अंकुरित हुआ कि यदि युगल सरकार का यहाँ दर्शन हो जाता तो अहोभाग्य! दूसरे दिन सोकर जब उठीं और मोटर ८० आदमी के साथ आगे बढ़ी तो लीला स्वरूप के रूप में पीत वस्त्र धारण किये हुए श्री युगल सरकार का दर्शन हुआ। वे भी अपने जमात के साथ मोटर में चढ़ गये। रास्ते में सीताजी के स्वरूप से श्री मैथिली सहचारी की खूब बातें भी हुईं। कुछ दूर जाने के बाद लगभग १० बजे रात्रि में वे एक स्थान पर उतर गये और मैथिली सहचारी को बतलाया कि बगल में एक स्थान आनन्द बाग नाम का है, वहीं उनका निवास है। सामने एक दीप भी जलते हुये दिखाई पड़ा। श्री स्वरूप सरकार ने आग्रह किया कि लौटती बार यहीं मिलना। यात्रा से लौटकर श्री मैथिली सहचारी ने देखा कि उक्त स्थान पर न कोई मन्दिर है और न कोई झोपड़ी है। इस रूप में भगवान् का दर्शन भी गुरुदेव की कृपा से ही हुआ।

(ङ) श्री मैथिली सहचारी ने बतलाया कि चरित्रनायक का सशरीर दर्शन उन्हें अन्तिम बार मुजफ्फरपुर रेलवे प्लेटफार्म पर हुआ। ट्रेन से उतर कर चरित्रनायक यहाँ रात्रि में विश्राम कर रहे थे। सारे शिष्यमंडल के लोग भोर होते ही वहाँ आ पहुँचे और धूमधाम से गुरुपूजन प्लेटफार्म पर ही हुआ। सामूहिक गुरुपूजन की वह अन्तिम झाँकी थी।

धनबाद से प्राप्त जीवन-अनुभूतियाँ

१४—श्री सरयू शर्मा धनबाद जिलाबोर्ड कार्यालय में पदाधिकारी के रूप में कार्य करते हैं। उन्हें हमारे चरित्रनायक की शरणागति १९५० ई० में प्राप्त हुई और तब से वे उनके चुने हुए सेवक शिष्यों में एक हैं। उनकी सेवा वृत्ति प्रशंसनीय होते हुए भी गुरुनिष्ठा दृढ़तम है। उनने निजी अनुभूतियों का विवरण लिखकर दिया है। जिसे संक्षिप्त रूप में दिया जा रहा है।

(क) एक बार शर्माजी ने चरित्रनायक से श्री अवध बुलाने का अनुरोध किया था पर उन्होंने आदेश दिया कि दो साल के बाद मैट्रिक पास कर तुम श्री अवध आना। श्री शर्माजी के हृदय में यह बात अच्छी नहीं लगी। एक साल वे स्वेच्छा से अन्य साथियों के साथ श्री अवध चले गये। वहाँ पहुँचते ही उन्हें हैजा हो गया। दवा-दारू उपचार होते रहने पर भी शान्ति नहीं हो रही थी। इसकी सूचना चरित्रनायक को किसी ने दे दी। चरित्रनायक उनके सामने आ गये और आते ही जोर से हँस पड़े। श्री शर्माजी का कहना है कि उस प्रकार की जादू भरी हँसी चरित्रनायक के जीवन में उन्होंने कभी नहीं देखी। प्रथम उनका चरणामृत शर्माजी ने पान किया और तब चरित्रनायक ने जो मन भावे वही खाने का आदेश दिया। श्री शर्माजी को ऐसा अनुभव हुआ कि यह तो मानव शरीरधारी साक्षात् भगवान् ही हैं।

मन का हठ भी पूरा किया गया

(ख) श्री शर्माजी का कहना है कि वे अपने ससुराल का पता तक भी नहीं जानते थे और न किसी के द्वारा पत्र ही भेज सकते थे। धनबाद में एक बड़ा ही आवश्यक काम था। जिसमें उनकी धर्मपत्नी का रहना अत्यावश्यक था। १९५८ ई० चैत मास में अपने कुछ साथियों के समक्ष श्री शर्माजी बोल उठे "अगर सचमुच गुरुदेव सर्वव्यापक हैं और सब कुछ जानते सुनते हैं तो हमारी स्त्री को बुला दें अन्यथा मैं कंठी खोलकर रख दूँगा।" उनके इस हठ पर तो जादू के ऐसा काम हुआ। भोर का हठ रात्रि में ही पूरा हुआ। दो बजे रात्रि को उनकी स्त्री पहुँचा दी गयी। इस घटना से शर्माजी की गुरुनिष्ठा तो बढ़ी पर ग्लानि भी बढ़ गयी। बहुत देर तक वे रोते रहे और बार-बार चरित्रनायक से क्षमा माँगते रहे।

गरीब निवाज और अन्तर्यामी

(ग) एक साल आश्विन दशहरा की अवधि में हमारे चरित्रनायक श्री रंगलाल चौधरी के रंगमहल में नाम नवाह सम्पन्न करा रहे थे। एक दिन श्री सरयू शर्मा के हृदय में ऐसा हौसला उत्पन्न हुआ कि यदि चरित्रनायक हमारे निवास स्थान को भी चलकर पवित्र कर देते तो बड़ी कृपा होती। चरित्रनायक उनके हृदय की बात को जान गये और श्री शर्माजी से उन्होंने कहा कि तू श्री रङ्गलाल चौधरी की आज्ञा लेकर मुझे अपने निवास लिवा चलो। श्री शर्माजी ने कहा कि अभी श्री चौधरी जी से ऐसा कहने में डर लगता है। तब चरित्रनायक ने बताया कि अल्प रात्रि रहते कमंडल लेकर तू मुझे लघुशंका कराने लिवा चलना और उधर ही से हम लोग चले जायेंगे। कोई जान नहीं पावेगा। श्री सरयू शर्मा ने वैसा ही किया। लगभग पाँच मील पैदल चलकर हमारे चरित्रनायक श्री सरयू शर्मा के घर गये। वहाँ केवल चिउड़ा भिगोकर नमक के साथ उनने भोग लगाया और पाकर तृप्त हुए। धन्य हैं उनकी कृपालुता और धन्य है उनकी गरीब निवाजी।

(घ) श्री सरयू शर्मा की स्त्री रोगग्रस्त रहा करती थी, इच्छा होने पर भी सन्तान लाभ उन्हें नहीं हो रहा था। चरित्रनायक के दर्शन होने पर उनकी धर्मपत्नी ने अपनी हार्दिक बात अर्पण कर दी। चरित्रनायक ने बताया कि रामार्चा भगवान के सामने अपना सवाल प्रस्तुत करो और उनसे ही कहो कि मनोकामना सिद्ध होते ही रामार्चा पूजन करूँगी। इसके बाद उनकी सारी मनोकामना पूरी हो गयी तो कुछ वर्ष बाद रामार्चा पूजन भी हुआ।

(ङ) १९६० साल की बात है कि चरित्रनायक श्री रङ्गलाल चौधरी के घर गंगा दशहरा के दिन आ पधारे थे। उन्होंने बताया कि उनका जन्मोत्सव आज के दिन जगत बाबू मनाया करते हैं। वे उस अवसर पर उपस्थित नहीं हो सके। धनबाद के प्रेमी भी उनका जन्मोत्सव मनाना चाह रहे थे पर उन्हें १०४° बुखार हो आया था। लगभग ४ बजे सन्ध्या में उन्होंने एक कठवत जल मँगवाया और विधिवत् स्नान कर पूजा का नियम भी पूर्ण किया। उस समय बुखार नहीं था। हम सब प्रेमी पद गाने लगे और चरित्रनायक धीरे-धीरे प्रसाद पाने लगे। इसी प्रकार दो घंटा वे पाते ही रहे और हम लोग पद गाते ही रह गये। हम लोगों के मन में था कि उनका पाना समाप्त हो तब हम लोग उनकी आरती करें पर जन्म के दिन उन्होंने बालक भाव का ही पालन किया। आरती सम्पन्न होने के बाद पुनः बुखार आ गया। इतनी ही देर के लिये बुखार ने उन्हें छुट्टी दी थी। उनके साथ उनके भोग का यही सम्बन्ध था। जब कोई सरकारी सेवा आवश्यक होता था तब भोग रूपी रोग भी उन्हें अल्पकाल के लिये मुक्त कर भगवत सेवा करने में उनकी सहायता ही करता था। कम बोलना, कम खाना, कम सोना, कम जल से स्नान करना कम-से-कम वस्त्र देह पर रखना और कम-से-कम जगह में सोना उनके आचरण में प्रत्यक्ष दीखता था।

अधिक जल गिराने से भी भगवान् के यहाँ हिसाब देना पड़ेगा ऐसा वे बोलते थे। अतएव एक बाल्टी जल ही उनके स्नान के लिये काफी था। श्री शर्माजी चरित्रनायक के अन्तिम काल में भी उपस्थित थे। उस समय भी चरित्रनायक के मुख से वे यही धीमे स्वर में सुनते थे—"आहा, रामजी आगइले। बबुआ लोग आगइले। सब दामाद आ गइले, जै हो किशोरीजी आदि।

शरीर त्याग के बाद भी चरित्रनायक द्वारा कृपा-प्रदर्शन

(च) शर्मा जी ने बताया कि २० अप्रैल, १९७१ ई० को रात्रि में उनके पिताजी और एक भाई, दोनों की अस्वाभाविक ढंग से मृत्यु हो गयी। इस घटना से मर्माहत होकर वे श्री रंगलाल चौधरी की मोटर गाड़ी से पटना से होते हुए घर आ गये। एक मास बाद वहां श्राद्ध कर्म आदि सम्पन्न कर धनबाद वापस आये। एक दिन रात्रि में लगभग १ बजे रात्रि में रोते हुये चरित्रनायक से प्रार्थना करने लगे कि ऐसी दुर्घटना कैसे हो गई और उन्हें आगे क्या करना चाहिये। यह सोचते ही उनकी स्त्री पर आवेश आ गया और उनके माध्यम से उनका मरा हुआ भाई बोलने लगा 'भैया, मैंने तो वीरगति पायी है। पिताजी तो श्रावण पूर्णिमा तक ऐसे भी संसार छोड़ ही देते, पर अब श्री महाराज जी पूर्णिमा के बाद पिताजी को अपने पास बुला लेंगे। मैं तो अभी कष्ट में हूँ और संकट भोग रहा हूँ, महाराज जी मुझ पर भी कृपा करें, यही प्रार्थना हो।'

इस प्रकार श्री शर्माजी का अनुभव है कि स्थूल शरीर त्याग के बाद भी अपने दुखी भक्तों का दुख दूर करने में वे समर्थ हैं।

१५—श्री रामप्रिया शरणजी चन्द्रभानुपुर धनबाद के निवासी हैं। वे धनबाद में ही एक सरकारी विभाग में नौकरी करते हैं। सन् १९६४ ई० से वे चरित्रनायक के कृपापात्र रहे हैं इनमें कीर्तन, भजन एवं नाम जप से विशेष प्रेम देखा जाता है।

(क) एक समय १९६४ ई० में रामप्रिया शरण ने जामताड़ा जाने के लिये टिकट कटाया और उनके साथी दूसरी ओर श्री अवध जाने के लिये टिकट ले रहे थे। अचानक उन्हें ऐसी प्रेरणा हो गयी कि जामताड़ा का टिकट उन्होंने लौटा दिया और अन्य प्रेमियों के साथ श्री अवध के लिये ही प्रस्थान कर गये। वहाँ जाते ही चरित्रनायक ने उन्हें शरणागति प्रदान कर दी। एक साल के अन्दर ही उन्होंने नौकरी छोड़ दी और चरित्रनायक की कृपा से पुनः वही नौकरी मिल गयी। एक बार जब वे सरैयाँ आश्रम विवाहोत्सव में सम्मिलित होने गये तो दर्शन होते ही सर्वज्ञ चरित्रनायक कहने लगे कि नौकरी नहीं छोड़नी चाहिये थी, श्री किशोरीजी की कृपा से नौकरी पुनः हो गयी, है, तब मन लगाकर कर्तव्य पालन करते रहो। लौटते समय चरित्रनायक ने कहा प्रसाद पाकर ही सिवान ट्रेन पकड़ने जाना। आतुरता-वश श्री रामप्रिया शरण जी ने इस आज्ञा का पालन नहीं किया। सिवान आ जाने पर संयोग वश ऐसा हुआ कि ३ दिन तक अन्न से भेंट नहीं हो सका। वे मन-ही-मन समझ गये कि यह प्रसाद त्याग का ही परिणाम है। ऐसा दंड पाकर भी उनकी गुरुनिष्ठा और बढ़ गयी।

(ख) उन्होंने अपना अनुभव बताते हुए लिखा है कि उन्हें जब जो इच्छा हुई है, चाहे, लौकिक हो या पारलौकिक हो उन सबों की पूर्ति चरित्रनायक ने आज तक की है। १९६८ ई० में जब चरित्र-नायक आश्विन मास में नाम नवाह सम्पन्न कराने के लिये श्री रंगलाल चौधरीजी के घर पर धनबाद आये हुए थे, तब रामप्रिया शरणजी भी नाम जप में भाग लिया करते थे। एक दिन अचानक घर से खबर आयी कि दादी मृत्यु शैय्या पर हैं। उन्होंने चरित्रनायक से कहा कि ऐसी सूचना आयी है पर उनका मन राम रट में ही लगा हुआ है, अब जैसी आज्ञा हो। चरित्रनायक ने उन्हें नाम सेवा में ही रहने का आदेश दिया। थोड़े काल के बाद उनकी दादी की बीमारी सुधर गयी और वह अब तक जीवित हैं। इसी प्रकार

१६६५-६६ में हमारे चरित्रनायक ग्राम लगनापुर, धनबाद श्री विष्णु प्रसाद चौधरी के घर रामार्चा पूजा कराने पधारे। उस समय श्री रामप्रियाशरणजी के भी हृदय में ऐसा हुआ कि उनके घर भी कुछ काल बाद यदि रामार्चा पूजा हो जाय तो बड़ी कृपा होती। विष्णु बाबू के यहाँ रामार्चा होने के बाद ही चरित्र-नायक ने उनके मन का हाल जानकर रामप्रियाजी से कह दिया कि कल ही रामार्चा-पूजन करालो। पैसे के अभाव में यह कैसे हो जायेगा, इसकी चिन्ता राम प्रियाजी को सताने लगी पर उनके गुरु भाई श्री विष्णु प्रसाद चौधरी एवं श्री सरयू शर्मा ने उनका उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि सब ठीक हो जायेगा। इस प्रकार दूसरे ही दिन इनके यहाँ भी रामार्चा पूजन सानन्द सम्पन्न हो गया।

१६—(क) श्री नारायण प्रसाद श्रीवास्तव झरिया मांइन्स बोर्ड आफ हेल्थ धनबाद कार्यालय के प्रधान हैं और कई वर्षों से हमारे चरित्रनायक के कृपापात्र रहे हैं। श्री रंगलाल चौधरी की शरणा-गति होने के बाद नारायण बाबू ने भी चरित्रनायक से मन्त्र ग्रहण किया। १९६० ई० में हमारे चरित्र-नायक श्री रंगलाल चौधरी के हीरापुर मुहल्ला के निवास स्थान में आकर ठहरे हुए थे। दो दिन के लिये हमारे चरित्रनायक ने पुरी के लिये स्थान किया। इसी बीच नारायण बाबू का तीसरा लड़का 'रवि' भयानक बुखार से ग्रस्त हो गया। नारायणजी को यह चिन्ता सताने लगी कि यदि बुखार अधिक दिन तक रह जायेगा, तब अर्थाभाव में उनकी चिकित्सा भी कठिन हो जायेगी। इसीलिये व्याकुलता में उन्होंने युगल-मन्त्र से बुखार को झाड़ दिया। बुखार तो कम हो गया और जैसे चरित्रनायक पुरी से लौट आये उन्हें ठीक उसी प्रकार का भयानक बुखार हो आया। सभी लोग उनकी सेवा में लग गये। एक दिन जब सेवा में नारायण बाबू ही अकेले रह गये तब चरित्रनायक ने कहा—"गुरुमन्त्र में अब विश्वास हो गया ? खैर जाने दो बहुत बड़ा संकट उस लड़के का कट गया, नारायण बाबू चरणों पर गिर पड़े और उसी समय उनकी स्त्री तथा दो लड़के भी हमारे चरित्रनायक के शिष्य हो गये। इस घटना से नारायण बाबू को यह पक्का विश्वास हो गया कि चरित्रनायक अपने शिष्यों का भोग लेकर स्वयं भोगने में भी समर्थ हैं। एक बार उनकी स्त्री भी धनबाद में बीमार पड़कर चरित्रनायक का ध्यान कर रही थीं। पता चला कि उस दिन वही बीमारी चरित्रनायक को श्री अवध में हो गयी और यहाँ नारायण बाबू की स्त्री चंगी हो गयी।

(ख) एक बार श्री अवध में नारायण बाबू अपने मित्रों से यह बोल उठे कि उनका श्री अवध आना विवाहोत्सव देखने के लिये नहीं होता है बल्कि चरित्रनायक का ही निजी प्रेम मुझे खींच लाता है। उत्सव के बाद नारायण बाबू जब धनबाद वापस आने के लिये चरित्रनायक से प्रसाद लेकर दण्डवत् करने लगे तब चरित्रनायक ने उनसे कहा—'तुम्हें श्री अवध राम विवाह देखने के लिये आना चाहिये न कि केवल मेरे लिये।" बेचारे नारायण बाबू तो मन-ही-मन बहुत लज्जित हुए। वे कर ही क्या सकते थे, जीव का स्वाभाव ही ऐसा होता है।

सबसे बड़ा आश्चर्य

नारायण बाबू ने बताया कि जब कभी कठिनाई होती है, चरित्रनायक के ध्यान करने से उसका समाधान बराबर हो जाया करता है। उन्हें चरित्रनायक की सिद्धियों से उतना आश्चर्य नहींहोता था जितना कि उनके दिव्य ईश्वरीय गुणों से। 'ए प्रिय सबहिँ जहाँ लगि प्राणी' श्री रामायण जी की यह चौपाई जैसे श्री रामभद्र जू में चरित्रार्थ होती है ठीक उसी प्रकार मेरे चरित्रनायक में भी सर्वप्रियता चरितार्थ होती है। नारायण जी ने कहा कि अब तक उन्हें चरित्रनायक के जितने शिष्य एवं प्रेमियों का दर्शन हुआ है सबों ने एक स्वर से चरित्रनायक के सम्बन्ध में बराबर यह कहा है 'महाराज जी मुझसे बहुत प्रेम करते थे, उनका सबसे अधिक स्नेह मुझ पर था हर संकट का निवारण वे अहैतुकी कृपा से करते थे।' उनके

दैनिक जीवन के आचरणों का अनुकरण मात्र से भी अनेकानेक कठिनाइयों का समाधान संभव हो जाता था।

१७—(क) श्री परमानन्द राय झरिया वाटर बोर्ड धनबाद में कार्यालय सहायक के पद पर काम करते हैं। आपके भोलापन और विशुद्ध भाव से प्रभावित होकर ही हमारे चरित्रनायक ने अपने साकेत गमन तिथि से लगभग दो मास पूर्व ही शिष्य बहुत आनाकानी के बाद बनाया था। चरित्रनायक ने उनसे कहा "अब शिष्य बनाने का समय नहीं रहा। आजकल लोग शिष्य बनकर गुरु के बताये मार्ग पर चलते ही नहीं हैं। उनके पीछे-पीछे लाठी लेकर गुरु को ही चरवाही करनी पड़ती है। मेरा शरीर अब थक गया मैं अब कुछ करने के लायक नहीं हूँ इतना कहने पर भी यह परमानन्दजी का सौभाग्य था कि चरित्रनायक ने उन्हें अपने शरण में चलते-चलते भी ले लिया। १९७० ई के अक्टूबर मास में ही श्री परमानन्द राय जी सपत्नीक शरणागत हुए और तब से परमानन्द शरण हो गये।

(ख) श्री परमानंदजी ने लिखा है कि चरित्रनायक तो फकीरों के शाहंसाह थे। स्थूल शरीर त्याग के बाद भी उनका दर्शन होता है और वे आज भी संकटों का निवारण करते हैं। किसी प्रश्न के उत्तर देने की शैली जो चरित्रनायक की थी वैसी शैली कहीं नहीं मिलती, आज तो लोग सूर्य का अर्थ भानु बता देना ही सरल समझते हैं। उदाहरण स्वरूप उनने एक नमूना प्रस्तुत किया है। शरणागत होने के पूर्व परमानन्द जी गायत्री मन्त्र का जाप किया करते थे। उन्होंने शरणागति के बाद प्रश्न किया कि अब वे गायत्री मन्त्र का जाप करेंगे कि नहीं। उत्तर में चरित्रनायक ने कहा "एक स्त्री चार पुरुष से प्रेम करती है, और दूसरी एक ही पुरुष से प्रेम करती है। इन दो उदाहरणों में आपको जो अच्छा लगे वही करें।" परमानन्द जी मन-ही-मन समझ गये कि एक ही पर रहना सर्वोत्तम है।

(ग) परमानन्द शरण जी ने १९७१ की एक घटना की चर्चा की है जो चरित्रनायक के शरीर त्याग के बाद घटित हुई। उनके दाहिने जाँघ की हड्डी फूल गयी। बड़े-बड़े डाक्टरों में कुछ ने बताया कि पलस्तर करना होगा और कुछ ने कहा कि बिना आपरेशन के नहीं अच्छा नहीं होगा। यही जाँच-बूझ में सैकड़ों रुपये व्यय हो गये। पर उनका दर्द नहीं घटा। आपरेशन की तैयारी होने लगी। इसी समय उनके मित्र परमेश्वर मण्डल जी ने कहा कि होमियो-पैथी दवा फेल करने पर ही आप चीर-फाड़ करायेंगे इस प्रकार होमियो-पैथिक डाक्टर की दवा होने लगी, दर्द बढ़ गया तब मण्डल जी उनसे मिलने आये। उन्होंने डाक्टर के जाने बाद कहा कि मैंने अपनी आँखों से देखा कि आपके महाराज जी सिरहाने बैठकर आपका माथा सहला रहे थे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अब आपका रोग ही भाग जायेगा। हुआ भी वैसा ही। बिना चीर-फाड़ और पलस्तर के ही वे पूर्णतः ठीक हो गये और आज तक चङ्गे हैं।

मुजफ्फरपुर जिले से प्राप्त निजी अनुभूतियों का विवरण

१८—श्री शैलेन्द्रजी (मन्टू बाबू) कार्यालय सम्वाददाता हिन्दुस्तान (दैनिक) हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, नई दिल्ली, निवास स्थान ग्राम बरुराज जिला मुजफ्फरपुर ने लिखा है—

'मैं बड़ा ही नास्तिक था। २४ साल की उम्र तक हमने यही सोचने में बिता दिया कि भगवान हैं या नहीं। जब सर्वसमर्थ परमपूज्य गुरुदेव के सम्पर्क में आया तो उनकी कृपा से घटित कुछ प्रत्यक्ष अनुभवों के कारण सारा संशय जाता रहा।' पारस-परस कुधातु सुहाई' के अनुसार मैं चाहे कितना ही बुरा था उन्होंने अपने लायक बना लिया।'

कतिपय घटनाओं की चर्चा शैलेन्द्र जी ने की है

(क) १९६४ ई० में पटना सर्चलाइट अखबार में नौकरी के लिये साक्षात्कार का दिन निश्चित था

वे जाने वाले ही थे कि मुजफ्फरपुर में डाक्टर उमाशङ्कर शाही (भरत बाबू) के घर जाने के लिये श्री महाराज जी उसी ओर बढ़ रहे थे। दण्डवत् करने पर उन्होंने शैलेन्द्र जी को भी साथ ले लिया। निवास स्थान पर आते ही श्री महाराज जी ने अष्टयाम नाम जप बिना पूर्व तैयारी के आरम्भ कर दिया और मन्टू बाबू को भी उसमें योगदान देना पड़ा। मन तो उनका पटने में लगा था पर श्री महाराजजी की आज्ञा उलंघन करने की हिम्मत नहीं हुई। बीच में उन्होंने श्री महाराज जू से यह कहा भी कि नौकरी के सम्बन्ध में पटने जाना है और उत्तर मिला कि यह भी नौकरी है। अष्टयाम समाप्त होने पर दूसरे दिन श्री रामचन्द्र प्रसाद साही एम०एल०ए० के घर पर रामार्चा पूजन भी हुआ। अब मन्टू बाबू के मन में यह हुआ कि साक्षात्कार तिथि से दो दिन अधिक बीत चुके, अब जाकर क्या होगा? यह सोच ही रहे थे कि चरित्र-नायक का आदेश पटने जाने को हो गया। आज्ञा उलंघन कैसे करते? सोचा, चलो इस बहाने पटने का सफर तो हो जायेगा। सर्चलाइट कार्यालय आये तो वहाँ के अधिकारी ने कलेंडर देख कर बोला' हाँ आपके लिये तो आज ही को तिथि साक्षात्कार के लिये निश्चित है।' अब तो मन्टू बाबू के आश्चर्य का ठिकाना ही न रहा। घर पर सूचना गई उसमें तिथि कुछ और पर कार्यालय में आने पर वही तिथि निश्चित मिली जिसका निर्णय हमारे चरित्रनायक ने कर रखा था। साक्षात्कार के बाद नौकरी भी मिल गयी। सन्त महिमा एवं नाम महिमा दोनों का ही परिचय जीवन में प्रथम बार मिला।

(ख) अपने छोटे भाई के काम से मन्टु बाबू दिल्ली आये और बहन श्रीमती ध्रुवअली के घर ठहर गये। वहाँ श्री महाराज जू का एक अत्यन्त ही आकर्षक भव्य चित्रपट मिला जिसे देखते ही उन्होंने दण्ड प्रणाम किया। उसके बाद हिन्दुस्तान टाइम्स कार्यालय में कुछ बिहार वासियों से मिलने गये तो पता चला कि वहाँ भी एक सम्वाददाता का पद रिक्त है उन्होंने आवेदन पत्र दिया, साक्षात्कार हुआ और बहाली भी हो गयी। अब तो ये और अचम्भे में पड़ गये कि चित्रपट तक के दर्शन का इतना प्रभाव है, धन्य हैं श्री महाराज जू।

(ग) १९६८ की एक घटना ने तो श्री शैलेन्द्र जी का जीवन ही बदल दिया। दिल्ली में उस वर्ष श्री महाराज जू आये, बहन ध्रुव अली के यहाँ रामार्चा पूजन हुआ। बाद श्री रामशङ्कर सिन्हा (रामा जी) के घर पर भी श्रीरामार्चा की पूजा हुई। उस रात्रि को श्री महाराज जी वहीं विश्राम किये और प्रेस में हड़-ताल होने के कारण मन्टू बाबू भी सेवा में रहे। रात्रि में श्री रामदेनी शर्मा एडवोकेट, हाजीपुर (राम प्रिया शरण जी) को जो भाव भरा उपदेश देते गये उसे सुनकर मन्टू बाबू को अनिर्वचनीय आनन्द मिला। उन दिनों जिस मकान में मन्टू बाबू निवास कर रहे थे उसके सम्बन्ध में उन्होंने श्री महाराज ज से कहा कि लोग कहते हैं कि यह मकान मनहूस है। इस मकान में आते ही हड़ताल हो गया है आदि-आदि। हूँ श्री महाराज जी ने उत्तर दिया 'मकान बहुत सुगुनिया बा, फलाना तारीख के तहार हड़ताल खतम होई वोकरा बाद तोहार तरक्की होई तु स्कूटर लेब आदि' सारी बातें अक्षरशः आगे चलकर सत्य हो गयीं। इस यात्रा में श्री महाराज जी मन्टू बाबू के घर भी गये। हड़ताल के कारण पैसे का तो अभाव था मन्टू बाबू तरह-तरह की भोजन सामग्री बनवाने के फेरे में पड़े हुये थे और स्वयं मांसाहारी होने के कारण किसी वैष्णव परिवार से बर्तन मँगाना चाह रहे थे। महाराज जी जो सोये पड़े हुए थे, बोल उठे—'कहीं से बर्तन लावे क जरूरत न बा, हम खीचड़ी बनाएब, दोसर कुछ ना पाएब।' अब चिन्ता हुई कि शुद्ध मिट्टी का ही बर्तन लाना अच्छा होगा। दिल्ली शहर में मिट्टी का बर्तन कहाँ मिलेगा इसका ज्ञान मन्टू बाबू को नहीं था पर श्री महाराज जू ने इसका मार्ग बता दिया। उन्होंने कहा कि अमुक सड़क-पकड़ कर चले जाव, पास ही कोने में मिट्टी की दूकान है। बर्तन वहीं से लाया गया। पाँच किस्म के एक पाव

दाल की खीचड़ी स्वयं श्री महाराज जी ने बनाई और लगभग २५ आदमियों ने भर पेट भोजन कर लिया। तो भी प्रसाद शेष रह गया। यह तो द्रौपदी का बटुआ-सा चरितार्थ हो गया। मन्टू बाबू के पैसे जेब में ही रखे रह गये। और स्वागत सत्कार भी भरपूर हो ही गया।

(घ) चलते समय का दृश्य और भी चकाचौंध में डालने वाला हुआ। गाड़ी में चढ़ने के लिये सीट सुरक्षित नहीं करायी गयी थी। महाराज जी को लिये हुए वे दिल्ली प्लेट फार्म पर गये और लखनऊ मेल के एक रिजर्व डिब्बे में प्रवेश कर श्री महाराज जी एक सीट की पटरी पर सो गये। मंटु बाबू ने कहा कि यह सुरक्षित डिब्बा है। चेकिंग करने वाले तंग करेंगे। पर रामप्रिया शरण ने कहा कि अभी भी आप महाराज जी को नहीं जानते हैं, यहाँ कोई आयेगा ही नहीं। पता चला कि चरित्रनायक बड़े आराम से पहुँच गये। जैसे ही ट्रेन खुली, मन्टु बाबू की आँखों के सामने आदमी से भरे हुए दिल्ली प्लेट फार्म पर अँधेरा छा गया, बाद एक विद्युत-सी प्रभा चमक पड़ी और श्री महाराज जी के भीतर से राम, लखन सीता की दिव्य मूर्ति की झाँकी प्रकट हुई, बाद ऐसा लगा कि इन मूर्तियों को कोई ट्रेन से लिये जा रहा है। श्री मन्टु बाबू एक पागल की तरह जाती हुई ट्रेन के पीछे-पीछे दौड़ पड़े। कुछ दूर जाकर ट्रेन खड़ी हो गयी। मन्टु बाबू उस डिब्बे तक पहुँच गये जहाँ श्री महाराज जी बैठे थे। श्री रामप्रिया शरण जी ने महाराज जी को सम्वाद दिया कि मन्टु बाबू दौड़ आये हैं। उन्होंने कहा कि कुछ प्रसाद देकर मन्टु बाबू को लौट जाने को कहो। प्रसाद उन्हें मिलते ही गाड़ी चल पड़ी। आज ही इनने मानसिक संकल्प कर लिया कि श्री महाराज जी ही उनके सच्चे गुरुदेव हैं पर गुरुमन्त्र तो उन्होंने युवा रूपधारी गुरुदेव से ही १९७३ में लिया।

अन्त में श्री शैलेन्द्र जी ने लिखा है—"लोग समझते हैं कि श्री महाराज जी साकेतवासी हो गये, मुझे सदा ऐसा अनुभव हो रहा है और दर्शन भी हो रहा है जिसके आधार पर यह कहना पड़ता है कि श्री महाराज जू आज भी वर्तमान हैं। उन्होंने पुराने शरीर को त्यागकर एक युवा शरीर धारण कर लिया है। अब इसी शरीर से सारी लीलायें होंगी। भाव, विश्वास चाहिये, जो मेरे साथ हो रहा है वह औरों के साथ भी हो सकता हैं। वे तो वहाँ भी हैं और यहाँ भी।"

दिल्ली में मन्टू बाबू की माता के साथ एक अपूर्व घटना

एक दिन की बात है कि १९७२ ई० में मन्टू बाबू के स्कूटर से मार्ग में एक बेग गिर गया। उसमें अनेकों आवश्यक सामान थे। इससे खिन्न होकर उन्होंने पूजा पाठ तक छोड़ दी। अपने मन की बात उन्होंने अपनी माताजी से भी बतायी। माँ बेटे दोनों ने तय किया कि श्री महाराज जी से प्रार्थना कर इस सम्बन्ध में पूछ-ताछ की जाय। उधर मन्टू बाबू प्रेस चले गये और इनकी माताजी अकेली निवास भवन में रह गयीं। रात को जब मन्टु बाबू वापस आये तो उन्होंने देखा कि माताजी कुछ घबड़ाई सी हैं, और रह-रहकर उनके नेत्रों से आँसू भी टपक पड़ते हैं। बहुत आग्रह के बाद मातजी ने कहा कि जब वे सूर्यास्त के बाद रसोई घर में भोजन बना रही थीं तो उन्हें सोने वाले कमरे से "घुँघुरू" की आवाज सुनाई पड़ी। वे कौतूहल वश देखने को चल पड़ीं। देखा कि सोने वाले कमरे में जो श्री सीताराम जी तथा महाराज जी वाला चित्रपट है, उसमें से दिव्य ज्योति-पूर्ण किशोर रूप युगल सरकार तथा श्री महाराज जू पैरों में "घुंघरू" के साथ आँगन में घूम रहे हैं। उन्हें श्री महाराज जी ने बुलाकर कुछ रहस्य भरी बातें भी बतलायीं। उन्होंने सबों को प्रणाम किया और बाद तीनों ही उनके देखते-देखते चित्रपट में समा गयीं। माताजी ने कहा कि वे तभी से रो रही हैं। इस घटना के बाद भी घर परिवार में बहुत कल्याण हुआ और मन्टु बाबू के भी मनोरथ पूर्ण होते गये।

श्री शैलेन्द्र बाबू के साथ एक और अनोखी घटना घटित हुई। उन्होंने कुछ वर्ष पूर्व श्री महाराज जू से कहा था कि मुझे विदेश भ्रमण की हार्दिक इच्छा है। श्री महाराज जी ने कहा "केकरो से कहीह मत हम सरकारी दरबार में डाली लगा देब" एक दो साल बीतने पर श्री शैलेन्द्र जी ने पुनः पत्र लिखा तो उन्हें पोस्ट कार्ड द्वारा उत्तर मिला कि श्री मनु शतरूपा को जो वरदान मिला था उसके पूरा होने में कितना समय लगा था। इधर हाल में पहली बार विदेश यात्रा का अति सुन्दर मौका उन्हें मिल गया। सामान बाँधकर वे जा ही रहे थे कि उनके सामने श्री महाराज जी का वह पोस्ट कार्ड टेबुल पर अचानक आ गया आँखों में आँसू आ गये और उन्होंने मान लिया कि "वृथा न होइ देव ऋषि वाणी।

१९—श्री शैलेन्द्र जी की माता बरुराज मुजफ्फरपुर से लिखती हैं कि एक बार घर की नैया डूबने वाली ही थी कि कृपालु गुरुदेव ने शरण में लेकर कृपा बल से जीवन नैया को रास्ते पर ला दिया। उनका कहना है कि श्री महाराज जू के जीवन काल में उन्होंने यह पूछा था कि आपके शरीर छोड़ने के बाद किससे अपना दुःख सुख कहूँगी। वा राय सलाह पूछूँगी। श्री महाराजजी ने उत्तर दिया था कि आवश्यतानुसार दर्शन देकर वे ही राय बतायेंगे। इसके अनुसार एक घटना दिल्ली की पूर्व में लिखी जा चुकी है। १९६१ के बाद से जो कुछ भी इच्छायें हुई हैं, उन सबों को चरित्रनायक ने पूरी की है। जब भी उनको चिन्ता होती है, चरित्रनायक किसी-न-किसी रूप में प्रकट होकर उसका निवारण कर देते हैं।

श्री महाराज जी के अन्तिम काल में जब वे श्री महाराज जी के दर्शन के लिये अवध जा रही थीं, तो रेलगाड़ी में ही ऐसा लगा कि श्री महाराज जू खड़े होकर यह कह रहे हैं—"कार्तिक में देले रह से माला ले ल" श्री अवध में पहुँचने के पूर्व ही श्री महाराज जू की अन्तिम झाँकी हो चुकी थी। पर प्रसाद रूप में वहाँ माताजी ने उन्हें वहीं माला दिया। जिसको महाराजजी ने रेलगगाड़ी में दिखाया था।

२०—श्री महेश्वर प्रसाद साही बरुराज जिला मुजफ्फरपुर ने जिन अनुभूतियों लिखकर भेजा है। उनके सारांश नीचे दिये जाते हैं।

(क) १९३७ ई० में बिहार विधान सभा के लिये सदस्य के चुनाव में सफल होने के लिये श्री वृजनन्दन शाही ने श्री रामदयालु बाबू के साथ जाकर श्री महाराज जू से आशीर्वाद माँगा। श्री महाराज जी ने कहा कि चित्रकूट धाम में जाकर आप नाम नवाह करा दें, आप विजयी हो जायेंगे। उस एम० एल० ए० के चुनाव में जैतपुर के एक लखपति महन्त वृजनन्दन बाबू के विरुद्ध खड़े थे। लाख रुपये खर्च करने पर भी जैतपुर महन्त असफल हो गये और वृजनन्दन शाही मात्र दस हजार रुपये व्यय कर बहुमत से विजयी बने। इस विजय के उपलक्ष में श्री वृजनंदन शाही ने विवाह-उत्सव का आयोजन बरुराज में किया उस अवसर पर श्री महाराज जू श्री सिद्ध किशोरीजी युगल सरकार के साथ पधारे और बड़े ही आनन्द पूर्ण वातावरण में उत्सव सम्पन्न हुआ। श्री महेश्वर बाबू तभी से श्री महाराज जू के भक्त बने।

(ख) १९४४ ई० में पूज्य महाराज जू ने बरुराज के एक मन्दिर में श्री युगल सरकार सीताराम जी की मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा की जो आज तक वर्तमान है।

(ग) कई वर्षों से प्रेम रहने के फलस्वरूप श्री महेश्वर बाबू ने १९६१ में सपत्नीक गुरु मन्त्र ग्रहण कर लिया और जनवरी १९६८ को दिघवारा स्टेशन पर सम्बन्ध पत्र प्राप्त करने का उन्हें भी सौभाग्य हुआ।

(घ) १९७२ ई० में पेट की गड़बड़ी तथा बुखार से महेश्वर बाबू बेहोश पड़े हुए थे। बेहोशी अवस्था में उन्हें कई लोकों का दर्शन होता रहा। पर मन में व्यग्रता कायम ही रही। तीसरी रात्रि को जब सारा परिवार सोया हुआ था अचानक उनके कमरे में साक्षात गुरुदेव प्रकट हुए। उन्हें साष्टाङ्ग दण्डवत् करते ही गुरुदेव ने पीठ थपथपाया और अन्तर्धान हो गये। सुबह होते ही सारी बीमारी जाती रही।

(ङ) १९६५ में गुरुदेव ने ४८ घंटे के नाम जप का संकल्प महेश्वर बाबू से कराया। उस अवसर पर बिना पूर्व सूचना के युगल लीला स्वरूप आ पधारे। उन्हें देखते ही गुरुदेव ने कहा कि नाम जप के प्रभाव से ही भगवान् इस रूप में प्रकट हुए। उस रात मनोहर झाँकी का भी सुख सबों को मिला।

च—महेश्वर बाबू के दो लड़के पढ़ने में साधारण होते हुए भी महाराज जू की कृपा से बिना पैरवी के अच्छी नौकरियों पर लग गये हैं।

छ—उनको अपनी एक कन्या के विवाह के लिये श्री अवध में रहते हुए उनके बड़े लड़के मन्टु बाबू का एक पत्र दिल्ली से आया कि एक अच्छा लड़का उपलब्ध है, आकर देख जाइये। इन्होंने पत्र की बात श्री महाराजजी से बताई। पूज्य गुरुदेव ने कहा कि जाने को तो आप जा सकते हैं पर पैसे की प्रधानता आजकल बहुत बढ़ रही है। श्री महेश्वर बाबू दिल्ली में लड़का देखकर भागलपुर आ गये और इसी जिले के एक ग्राम में लड़के का घर देखने गये। वहाँ साठ-सत्तर हजार रुपये की माँग तिलक दहेज के रूप में की गयी। अब श्री महाराज जी की पूर्व बातें इनकी समझ में आ गयी। १९७० ई० की बसन्त पंचमी के अवसर पर जनकपुर धाम में विवाह उत्सव हुआ। वहाँ से बिदा होने के समय गुरुदेव ने एक माला उनके गले में डाल दिया और कहा कि अब जाकर 'फलदान' दे दें। वहाँ से लौटते ही मुशहरी ग्राम में एक लड़का तै हो गया तथा एक सप्ताह के भीतर फलदान भी हो गया।

ज— श्री महेश्वर बाबू की बड़ी पुत्र-बधू, उसकी दो बहन और एक भाई को कोई सन्तान न हो पाये। ज्योतिषियों के मत से इन्हें कोई संतान का योग ही नहीं था। पर गुरुदेव ने प्रारब्ध को भी बदल दिया। उनके आशीर्वाद से नवम्बर, १९६९ में इन्हें एक पोता उत्पन्न हुआ।

२१—श्रीमती राम तनुक देवी, निवास स्थान, ग्राम किशुनपुर, जिला सीतामढ़ी ने कुछ आप बीती बातें बतायी हैं। उनका कहना है कि वे आर्य समाजी विचार की थीं। बराबर कांग्रेस आन्दोलन में भाग लेती थीं। १९३२ ई० में श्री रामदयालु बाबू के साथ वे कुछ काल तक हजारीबाग जेल में रही जहाँ रामदयालु बाबू के सत्संग से प्रभावित होकर उनका मन सगुन साकार पूजा की ओर भी खिँच गया। तब से वे मन्दिर बिहारी की पूजा करने लग गयीं। उनके पूर्व गुरुदेव का देहान्त हो गया तब प्रथम श्री रामदयालू बाबू ने १९३७ ई० में उन्हें त्रिवहुती भवन में हमारे चरित्रनायक की सेवा में भेज दिया। वहाँ उन्हें श्री सिद्ध किशोरी जी सहित चरित्रनायक का दर्शन हुआ और अष्टयाम सेवा भी प्राप्त हुआ जिसका अभ्यास श्री सिद्ध किशोरीजी युगल सरकार के साथ होता था।

क—१९३४ के भूकम्प में किशुनपुर ग्राम का मन्दिर ध्वस्त हो गया। देवीजी ने चरित्रनायक को आमन्त्रित कर एक मन्दिर की नींव दिलवायी। मन्दिर तैयार हो जाने पर प्राण-प्रतिष्ठा विधि भी चरित्र-नायक द्वारा ही सम्पन्न की गयी। मंदिर बिहारी की आरती के समय एक ऐसी दिव्य झाँकी मूर्ति में प्रकट हुई कि देवीजी के नेत्र चकाचौंध में पड़ गये। साक्षात् दर्शन का आनन्द प्राप्त हुआ। उस अवसर पर चरित्रनायक एक मास तक विशुनपुर में ही रहे। आठों लीलास्वरूप सरकार के साथ नाम नवाह, रामार्चा, विवाह-कलेवा आदि उत्सव प्रथम बार बड़े पैमाने पर सीतामढ़ी अनुमंडल में हुए। बरुराज एवं विशुनपुर सरैयाँ के परिवार भी, इस विवाह पंचमी में सम्मिलित हुए। यहीं माघ बसन्त पंचमी के अवसर पर विवाह उत्सव आज तक वहाँ मनाया जाता है।

ख—१९६२ ई० में अगहण कृष्णपंचमी के अवसर पर नाम नवाह, बाद विवाह, कलेवा उत्सव बहुत ही समारोह के साथ श्री देवीजी के अनुरोध पर श्री अवध में भी किशुनपुर जैसा विशाल पैमाने पर मनाया गया। देवीजी के भाई राजेन्द्र बाब ने रामार्चा पूजा भी की। उस अवसर पर वशिष्ट बाब की स्त्री

भी आयी थीं। अँधेरी रात में उत्सव के बाद विवहुति भवन के कुएँ में बहुत रात बीतने पर किसी के धड़ाम से गिरने की आवाज आई। कई लोगों के साथ देवीजी भी दौड़ पड़ी। लालटेन देखाने से पता चला कि कोई स्त्री गिर पड़ी है। श्री महाराजजी के पास दौड़ी हुई देवीजी आयीं तब उन्होंने कहा कि उसे बाहर निकलवा लीजिये, कुछ न होगा। वैसा ही हुआ भी। निकालने पर किसी प्रकार की चोट उनके शरीर पर नहीं पायी गयी और न कपड़े ही फटे। कुएँ में ज्यादा पानी होने पर भी वे थोड़े ही जल पर खड़ी रहीं, न जाने कुएँ में उन्हें खड़े रहने की व्यवस्था भगवान ने कैसे कर दी।

२२—श्री नन्दकिशोर शाही बरुराज जिला मुजफ्फरपुर ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करते हुए चरित्रनायक की बहुमुखी गुण गरिमा का उल्लेख किया है। उन्होंने बताया कि उनका प्रथम सम्पर्क चरित्र-नायक से ६-४-३७ को हुआ जबकि वे उनके पूज्य चाका स्वर्गीय श्री बृजनन्द शाही और उनके ससुर श्री रामदयालु सिंह से आमंत्रित होकर बरुराज पधारे थे और कई दिनों तक रहकर श्री सिद्ध किशोरीजी युगल सरकार की अपूर्व झाँकी का आनन्द सबों को प्रदान किया था। उनके परिवार के लोग उसी समय से आकर्षित होकर अधिक संख्या-में श्री अवध आने-जाने लगे। कई माताओं ने तो आजीवन श्री अवधवास का संकल्प ले लिया। उन लोगों के बहाने परिवार के अन्य लोगों को भी श्री अवध आने, श्री सरयू स्नान, कनक भवन दर्शन एवं अनेकानेक सन्त से मिलन का सौभाग्य प्राप्त होता गया। उनके अनोखे स्वभाव एवं चरित्र, त्याग-मय जीवन, सरलता एवं सादगी तो प्रथम दर्शन में ही आकर्षित कर लेते थे। लाखों की सम्पत्ति श्री विवहुति भवन में आती गई पर वे सदा सन्तसेवा एवं कंगला सेवा में प्रतिवर्ष लुटाते ही रहे। सादा भोजन, 'सादा वस्त्र, सादा ओढ़ना, सादा बिछावन, स्वयं प्रसाद बनाकर भगवान् को भोग लगाना और विवाह कलेवा तथा झाँकी के अवसरों पर घण्टों तक रसमय खुद पदों का गान करना एवं सुख माथे पर आरती रखकर गाते हुए नृत्य करना ये सभी अनुपम दिव्य गुण उनमें वर्तमान थे। रामार्चा पूजन, राम विवाह एवं नाम नवाह उनकी उपासना के प्रधान अंग थे। वे काठ के कमंडल, काठ ही की थाली और काठ ही के ग्लास का प्रयोग अपने जीवन में बराबर करते रहे।

श्री शाहीजी के घर परिवार की समस्याओं के समाधान में चरित्रनायक का आशीर्वाद बराबर ही लाभदायक सिद्ध हुआ। १९४२ में श्री बृजनन्दन शाही के साकेत वास के बाद भाइयों का राग द्वेष ने १९४८ ई० में भयानक रूप धारण कर लिया, पर चरित्रनायक की कृपा से धीरे-धीरे सभी झमेले शान्ति पूर्वक सुलझ गये। भाइयों के बीच बटवारे में भी-चरित्रनायक के प्रताप से ही शान्ति बनी रही। अब सभी अपना-अपना जीवन शान्तिपूर्वक बिता रहे हैं।

२३—श्री जगदीश नारायण मिश्र, ग्राम इटहा, जिला मुजफ्फरपुर ने अपनी अनुभूतियों को बताते हुए निम्नांकित घटनाओं का विवरण प्रस्तुत किया है जिसको सारांश रूप में उल्लेखित किया जा रहा है।

गुरुदेव के तुलसीदल ने गये हुए प्राणपखेरू को भी वापस कराया

क—१९६९ के जून मास में मिश्रजी मृत्यु शैय्या पर पड़े हुए थे। दवा-दारू एवं सारे उपचार विफल हो रहे थे। आर्त होकर उन्होंने अपनी मर्मवेदना, पत्र द्वारा चरित्रनायक के पास पहुँचायी और उत्तर में एक लिफाफे में रखकर तुलसीदल उनके लिए भेजा गया। श्री मिश्रजी ने तुलसी दल का सेवन कर लिया और रोग की भयानकता जाती रही। लगता है कि उनकी आयु पूरी हो चुकी थी इसीलिये एक रात्रि में उन्होंने मृत्यु के सारे दृश्यों को देखा। उनके सामने लाल और सुडौल शरीर वाले कुछ व्यक्ति

इकट्ठे हुए जिनके शरीर खुले थे और कमर में वे पीत वस्त्र धारण किये हुए थे। वे लोग अनेक जीवों को पकड़कर यम यातना दे रहे। यह यातना पाने वालों में उनके कुछ परिचित लोग भी दीख पड़ते थे। अब श्री मिश्रजी को आपने सम्बन्ध में चिन्ता हो रही थी। उसके बाद ही उन्होंने देखा कि कुछ दूत उन्हें भी पकड़ने आ गये और श्री मिश्रजी को ले जाकर अपने मालिक के समक्ष पेश किया। पता नहीं कि वे धर्मराज थे या यमराज थे। इसी समय एक परिचित साथी अच्छी वेश भूषा में आ पहुँचे और उन्होंने सबों को डाँटकर कहा 'ये तो अपने आदमी हैं, इन्हें क्यों पकड़ लाया गया'। उसके बाद ही उन्हें छोड़ दिया गया। उस साथी ने लौटने का मार्ग भी बता दिया। श्री मिश्रजी के देखते-ही-देखते उनका साथी अन्तर्धान हो गया। लगता है, यम यातनाओं का भीषण दृश्य दिखलाने के लिये ही श्री मिश्रजी को अल्पकालीन मृत्यु का अनुभव दिया गया। उन दृश्यों की यादगारी से वे अभी बड़े भयभीत हो जाते जाते हैं गुरु की कृपा से असम्भव भी सम्भव हो जाता है। उन्हें पड़े-पड़े थोड़े ही नाम जप के फलस्वरूप सूर्य उगने के कुछ पूर्व श्री रामजी की दिव्य झाँकी भी एक क्षण के लिये मिली पर वे चरण स्पर्श नहीं कर पाये और दिव्य रूप लुप्त हो गये।

चरित्रनायक के साकेत गमन का पूर्वाभास

ख—श्री मिश्रजी ने बताया है कि गुरुदेव के साकेत गमन के कुछ दिन पूर्व उन्होंने श्री मिश्रजी से स्वप्न में ही कुछ सेवायें ली, चीउड़ा प्रसाद पाये, उसके बाद ही शरीर शिथिल होने लगा और मालूम पड़ा कि गुरु महाराज शरीर छोड़ रहे हैं। नींद टूटते ही वे व्याकुल हो गये और चार पाँच दिनों के बाद ही पता चला कि श्री महाराज जी ने शरीर छोड़ दिया। अर्थाभाव एवं बीमारी से उत्पन्न कमजोरी के कारण वे कुछ भी नहीं कर सके।

२४—श्री अवध बिहारी शर्मा, निवास स्थान दिलावरपुर, विदुपुर जिला मुजफ्फरपुर के हैं। वे अभी उत्तरी पूर्वी रेलवे में गार्ड के पद पर समस्तीपुर में पद स्थापित हैं। चरित्रनायक के अनन्य सेवक-शिष्यों में आप छोटेपन से ही रहे हैं। आपने भी कई घटनाओं की चर्चा की है जिसका विवरण निम्न-लिखित है—

क—एक बार हमारे चरित्रनायक उनके निवास स्थान दिलावरपुर पधारे तो उनके पिताजी ने चरित्रनायक से प्रार्थना की कि उनके दो पुत्रों में किसी को भी लड़का नहीं हुआ है जबकि व्याह किये हुए १२ वर्ष बीत गये। हमारे चरित्रनायक ने प्रसन्न चित्त से कहा कि युगल सरकार की कृपा से आपको दो पोते होंगे। श्री अवध बिहारी बाबू का कहना है कि एक साल के भीतर ही दोनों भाइयों को पुत्र लाभ हुआ।

ख—एक बार की बात है कि जिस मालगाड़ी में वे गार्ड थे, वह गाड़ी अचानक उलट गई। फलस्वरूप उनकी वृद्धि तथा तरक्की बन्द हो गयी। उन्हें गार्ड पद पर रहना सम्भव नहीं हुआ। वे ग्राम वृन्दावन में श्री हनुमत जयन्ती के अवसर पर चरित्रनायक से मिलने आये। उसी स्थल पर उन्हें आशीर्वाद हुआ कि आप चन्द हफ्तों के भीतर ही असालतन गार्ड का काम पायेंगे। कुछ ही दिनों के बाद उन्हें असालतन गार्ड के पद पर कार्य करने का आदेश प्राप्त हुआ।

ग—गार्ड होने के पूर्व श्री अवध बिहारी बाबू ने कन्ट्रोल आफिस में असालतन क्लर्क का काम करते हुए १० साल व्यतीत किया। वे बार-बार गार्ड की ट्रेनिंग में जाने के लिये प्रयास कर रहे थे पर सफलता नहीं मिल रही थी। चरित्रनायक की कृपा से उन्हें गार्ड की ट्रेनिंग में जाने का सुयोग एवं ट्रेनिंग के बाद परीक्षा में भी पूरी सफलता प्राप्त हुई। वे अच्छा दर्जा पाकर सफल हुए।

घ एक बार श्री अवध बिहारी बाबू के यहाँ बहुत धूम-धाम से विवाहोत्सव सम्पन्न हुआ। उस अवसर पर उनके ग्राम के एक भाई ने विद्युत फिटिंग कर विवाह की शोभा बहुत ही बढ़ा दी। उनकी सेवा से प्रसन्न होकर श्री अवध बिहारी बाबू के अनुरोध पर उस भाई को चरित्रनायक की शरणागति प्राप्त हुई।

२५—श्री योगेन्द्र प्रसाद शाही, ग्राम रामपुर हरि, जिला—मुजफ्फरपुर हमारे चरित्रनायक के अनन्य प्रेमियों में कई वर्षों से हैं। इनके मन्त्र गुरु तो दूसरे ही महात्मा हैं पर एक साल श्री सीताराम शाही रामपुर हरि के निवास स्थान पर चरित्रनायक का दर्शन पाकर उनके भाव, व्यवहार से बड़े ही प्रभावित हुए। उनने लिखा है '१९६३ ई० में मुकदमा तथा बीमारी इत्यादि के प्रकोप से मैं बहुत दुःखी हो गया और कई बड़े-बड़े सन्तों के पास जाकर अपना दुःखड़ा रोया। जहाँ जिनकी महिमा सुनी, उनसे कहा सुना। भाँति-भाँति के अनुष्ठान बताये गये पर मैं फलीभूत नहीं हो सका। अन्त में श्री सीताराम शाही के दरवाजे पर अपना सारा दुःख श्री महाराज जी को सुनाया। रामार्चा पूजा चल रही थी, उसकी समाप्ति के बाद श्री महाराज जी ने हमें रामार्चा पर का चढ़ाया हुआ तुलसीदल अपने साथ रखने के लिये दिया। सारे कष्ट का निवारण-हुआ, मनोनुकूल मुकदमों का फैसला हुआ और परिवार के सभी सदस्य निरोग हो गये। ऐसी जमीन की प्राप्ति हुई जिसकी आशा स्वप्न में भी नहीं थी।" इस प्रकार श्री योगेन्द्र शाही जी जब भी श्री अवध आते हैं चरित्रनायक के शरीर छूटने के बाद भी विवहुति भवन का दर्शन करना नहीं भूलते। उनका कहना है कि चरित्रनायक ने उन्हें अपने किन्हीं भी शिष्यों से कम नहीं भाव प्रेम दिया। जय भक्तवत्सल श्री महाराज जी की।

२६—(क) श्री रामशीष शाही, जीवर जिला मुजफ्फरपुर के हैं। वे कटिहार में उत्तरी पूर्वी रेलवे कार्यालय में एक पदाधिकारी के रूप में काम करते हैं। श्री शाही जी को हमारे चरिनायक का प्रथम दर्शन १९६१ ई० में रामपुर हरि निवासी श्री सीताराम शाही के घर पर हुआ था। उसी साल १४-८-६१ ई० को वे अपने साथ श्री सीताराम शाही, श्री कल्याण शाही, श्री बतहु शाही एवं श्री राजदेव शाही को लिये हुये श्री अवध झूला देखने के लिये प्रस्थान कर गये। रास्ते में पता चला कि हमारे चरित्रनायक टीकरी आश्रम पर ठहरे हुए हैं। अतएव ये भी सभी लोग टिकरी स्टेशन उतर कर चरित्रनायक के आश्रम में गये और वहाँ इनका दर्शन हुआ। सभी लोगों ने रात्रि विश्राम टीकरी में ही किया और दूसरे दिन चरित्रनायक के साथ ही श्री अवध पधारे। इन लोगों के साथी में श्री राजदेव शाही का एकमात्र पुत्र शत्रुघ्न शाही घर छोड़कर कई महीने पूर्व ही भाग गया था। पता चला कि वह श्री अवध में साधु होकर किसी स्थान में है। इस प्रकार और लोग तो झूले झाँकी का आनन्द लेने लगे पर राजदेव शाही प्रतिदिन अपने पुत्र की खोज में ही समय बिताने लगे। झूला समाप्त होने तक भी लड़का नहीं मिला और सारा जमात घर वापस जाने के लिये तैयार हो गया। इस अवसर पर श्री राजदेव शाही ने अपना दुःखड़ा चरित्रनायक को सुनाया उन्होंने कहा कि शत्रुघ्न मेरा एकमात्र पुत्र है, अकेला घर लौटकर मैं क्या करूँगा ? इस पर चरित्रनायक ने उन्हें कहा कि आप ठहर जायँ तो लड़का आपका मिल जावेगा। सभी लोग चले गये और राजदेव शाही ठहर गये। चरित्रनायक ने उन्हें नवलवर भवन मन्दिर के भगावान के सामने जाकर प्रार्थना करने का आदेश दिया। श्री राजदेव शाही ने वैसा ही किया। दूसरे दिन प्रातःकाल जब वे चरित्रनायक को दण्डवत् करने गये, तो उन्होंने बताया कि हनुमानगढ़ी फाटक पर ही आपका लड़का अभी मिल जायेगा देर करने से वह अपने गुरुदेव के लिये फलहार लाने चला जायेगा क्योंकि आज एकादशी है। यह सुनते ही श्री शाही जी हनुमानगढ़ी गये और उनके लड़के से भेंट हो गयी। हनुमानगढ़ी में उसके गुरुदेव ने

विहुती भवन आने का आदेश दिया। वहाँ आने पर हमारे चरित्रनायक के समझाने-बुझाने पर वह लड़का अपने पिता राजदेव शाही के साथ घर वापस हो गया।

(ख) श्री रामाशीष शाही ने जून १९६६ ई० में अपने घर पर चरित्रनायक द्वारा रामार्चा पूजा सम्पन्न करवायी। उसी साल उन्होंने उनसे गुरुमन्त्र भी ग्रहण कर लिया। उनकी धर्मपत्नी ने तो आगे ही मन्त्र ग्रहण कर लिया था। १९६९ जुलाई मास की एक घटना का उल्लेख श्री शाही ने किया। अपने नवीन घर में गृह प्रवेश के अवसर उन्होंने चरित्रनायक को श्री अवध से बुला लिया। पक्की सड़क से अपने ग्राम में आने के लिये उन्होंने एक बैलगाड़ी की व्यवस्था कर ली। उनके दरवाजे तक जाने के लिये दो मार्ग थे। एक मार्ग से लगभग दो मील की दूरी तय करनी पड़ती पर उसमें कीचड़ कम पड़ता। एक दूसरे रास्ते में कीचड़ ज्यादा थी पर दूरी कम थी चरित्रनायक ने इसी रास्ते को पसन्द किया और वहाँ ज्यादा कीचड़ होने पर कुछ पैदल ही चले जायेंगे। श्री शाही जी ने हठपूर्वक दो मील वाले रास्ते से ही बैलगाड़ी बढ़वाया। कुछ दूर के बाद ही गाड़ी उलट गयी। चरित्रनायक को चोट कम आयी। अन्य लोग भी सुरक्षित ही बच गये। केवल रामरूप शरण जी का एक दाँत टूट गया। गुरु आज्ञा नहीं पालन करने का परिणाम अब मालूम पड़ गया। वहाँ श्री रामार्चा पूजा बड़े धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। इसके बाद चरित्रनायक नरमा ग्राम में महेन्द्र बाबू के घर तथा रामपुर हरि में श्री सीताराम शाही के घर रामार्चा पूजन सम्पन्न कर मुजफ्फरपुर अपने सबसे पुराने शिष्य श्री रामदेनी सिंह के घर पधारे। वहाँ विहँसते हुए रामदेनी बाबू ने दण्डवत् किया। रामदेनी बाबू की धर्मपत्नी ने चरित्रनायक से कहा 'अब इन्हें श्री अवध ले जाइये' उत्तर मिला' जब इन्हें अवधवास के लिये तुमसे माँगा था तब तो इन्हें रोक रखा। अब क्या ले जाऊँ ? उसके बाद मुसापुर में श्री रामार्चा पूजन कर एक दो दिन के बाद वे मुजफ्फरपुर मार्ग से लौटे, तब ट्रेन रुकने पर कई भाइयों ने सम्वाद दिया 'श्री रामदेनी बाबू साकेतवासी हो गये' चरित्रनायक तो जानते ही थे पर इसे दो दिन आगे बोलना उचित न होता—

(ग) श्री रामाशीष शाही ने कटिहार में पदास्थापित श्री चन्द्रमा सिंह रेलवे गार्ड सम्बन्धी घटना का कुछ विवरण भेजा है जो चरित्रनायक के साकेत गमन के बाद घटित हुई थी। १९७० ई० अगहन शुक्ल पञ्चमी के प्रधान विवाह उत्सव में सम्मिलित होने के लिये चन्द्रमा बाबू ने श्री अवध के लिये प्रस्थान किया। उन्होंने श्री रामाशीष बाबू से चरित्रनायक का गुणगान सुना था और उनके दर्शन के लिये तीव्र इच्छा उत्पन्न हो गयी थी। कटरा स्टेशन पर ही इन्हें टिकट कलक्टर श्री ठाकुर से पता चल गया कि चरित्रनायक का साकेत गमन हो गया। निराशामय वातावरण में चन्द्रमा बाबू श्री अवध आये और दो तीन दिन ही रहकर लौट गये। लौटने पर उन्होंने एक दिन स्वप्न देखा कि इन्हें मारने के लिये कुछ लोग औजार के सहित तैयार हैं। भयभीत होकर उन्होंने चरित्रनायक की ही पुकार की कि महाराज जी आप ही बचाइये। उनका रूप तो इनने कभी देखा नहीं था पर प्रार्थना करते ही एक वृद्ध महात्मा कमण्डल लिये हुए प्रकट हो गये। मारने वाले सब भाग गये। उन्होंने बूढ़े महात्मा को दण्डवत् किया जिनका रूप हर प्रकार चरित्रनायक के ही फोटो से मिलता-जुलता था स्वप्न भङ्ग होने पर उन्होंने पाया कि उनके नेत्र आँसुओं से भरे थे। जिसका कभी नहीं दर्शन किया, जिसकी कभी कोई सेवा नहीं की वह सन्त शरीर त्याग के बाद भी इस प्रकार की कृपा करेंगे, यह सोचने से और भी बार-बार ग्लानि हुई कि ऐसे सन्त का दर्शन शरीर रहते नहीं कर सका। चन्द्रमा बाबू अब शरणागत हो चुके हैं और बराबर अनन्य भाव से सपरिवार विहुति भवन आया-जाया करते हैं।

(घ) स्वप्न में श्री रामाशीष बाबू को गुरुदेव का दर्शन

चरित्रनायक के साकेत गमन के बाद भंडारा समारोह सम्पन्न कर रामाशीष बाबू कटिहार वापस आ गये। लौटने पर इन्हें बराबर चरित्रनायक की याद आती और ये रोते ही रहते। एक दिन ऐसा हुआ कि सोने की अवस्था में भी वे रोते ही रहे और नींद टूटने पर भी आँसू का आना बंद नहीं हो रहा था। वे मन में घबड़ा रहे थे कि ऐसी अवस्था में उन्हें कोई देख न ले। खैर, कृपा से सम्भाल हो गया। दूसरे दिन जैसे ही वे बिछावन पर गये, अर्ध निद्रा की अवस्था में उन्होंने देखा कि साक्षात् श्री महाराज जी कई सेवकों के साथ आये है, जगह दल-दल जैसा है, वहाँ पुआर बिछा है, श्री महाराज जी चिन्तित अवस्था में हैं। दर्शन देते ही वे बोल पड़े "तुम लोग हमरा के तङ्ग कर देल, का बीचार बा कि हम अइसने जर्जर शरीर में रहीं। हमरा न चले बनन ह, और ना कुछ करे बनत ह, लाचार पुरान शरीर छोड़ देहनी, अवर नया शरीर में बानी। एकरे विश्वास करके तू लोग भाव प्रेम कर, एही में कल्याण बा। आगे हमार वो रूप के ध्यान करके हमरा के तङ्ग मत करींह।" इसके बाद ही रामाशीष जी ने देखा कि चरित्रनायक का एक दिव्य शरीर हो गया और वे अन्तर्धान हो गये। नेत्रों के आँसू भी न जाने कैसे सूख गये।

२७–(क) श्रीराम श्रेष्ठ चौधरी ग्राम शकरी सरेयाँ जिला मुजफ्फरपुर के हैं। अभी आप सर्किल इन्सपेक्टर-सह-कानूनगो के पद पर समस्तीपुर में पद स्थापित हैं। श्री चौधरी हमारे चरित्रनायक के बहुत ही पुराने शिष्यों में हैं। उनका कहना है कि वे चरित्रनायक की कृपा से रंक से बदल कर अब राज-सुख ऐसा आनन्द भोग रहे हैं। १९३४ ई० के भूकम्प के बाद उन्होंने जिला परिषद मुजफ्फरपुर में मात्र बीस रुपये प्रति मास के वेतन पर अपना जीवन आरम्भ किया था। श्री रघुवंश शुक्ल जो जिला परिषद में ही ऊँचे पद पर थे पूर्व में ही चरित्रनायक से गुरुमन्त्र ले चुके थे। ये ही शुक्ल जी ने श्री चौधरी को अवध ले जाकर १९३६ ई० में ही चरित्रनायक से अनुनय विनय कर उन्हें शरणागति प्रदान करा दी। तब से श्री चौधरी चरित्रनायक के अनन्य निष्ठायुक्त शिष्यों में रहे हैं। इसके एक दो साल के बाद ही श्री माताजी (चरित्रनायक की धर्मपत्नी) का साकेत गमन हाजीपुर में श्री रामदयालु बाबू अध्यक्ष, बिहार विधान सभा के स्थान पर हो गया। श्राद्ध के दिन जब "चुमावन" देने का अवसर आया तब श्री चौधरी के पास पैसे ही नहीं थे। उन्हें ग्लानि हो रही थी कि सभी गुरु-भाई और प्रेमी यथाशक्ति चुमावन दे रहे हैं और वे ऐसा असमर्थ हो रहे हैं। उनकी इस मानसिक अवस्था को चरित्रनायक ताड़ गये और उन्हें बुलाकर दस रुपये दे दिये। उन्होंने आदेश दिया कि बिना संकोच के इस रुपये से चुमावन कर लो। चरित्रनायक अन्तर्यामी का प्रथम परिचय पाकर श्री राम श्रेष्ठ चौधरी गद्‌गद हो गये। चरित्रनायक की गरीब नेवाजी ने तो उन्हें और भी खींच लिया।

(ख) श्री अवध की एक घटना की चर्चा करते हुए श्री चौधरीजी ने लिखा है कि १९३६ ई० में गोलाघाट पर झाँकी होने वाली थी। उस साल एक नये ढङ्ग का रिक्सा स्थान में आया था। गोलाघाट श्री सिद्ध किशोरीजी युगल सरकार को पहुँचाने के लिये श्री रघुवंश शुक्ल के इशारे पर वे ही रिक्शा चालक बन गये। अपने स्थान से कुछ दूर जाने के बाद एक ढालू रोड मिली जहाँ पर रिक्शे का सम्हाल करना कठिन हो गया। हैण्डिल इनके हाथ से छूट गया और रिक्शा उलटने-सा हो गया। श्री चौधरी तो अलग फेंका कर बेहोश-सा हो गये पर सिद्ध किशोरी जी ने पुकारा "महाराज जी!" आवाज होते ही देखा गया कि चरित्रनायक रिक्शा का हैण्डिल पकड़कर खड़े हैं। इस प्रकार सबों की जान बच गयी।

[ग] एक साल श्री चौधरी छपरे में कानूनगो के पद पर कार्य कर रहे थे। उनकी जन्म-भूमि सकरी सरेयाँ में रामार्चा पूजन एवं भूले झाँकी की तिथि पूर्व से ही निश्चित थी। चरित्रनायक को मुजफ्फर-

पुर से ही वहाँ आ जाना था। इन्होंने बार-बार छुट्टी लेने का प्रयास किया पर इसी समय जिलाधीश द्वारा निरीक्षण की तिथि तै हो गई थी। इसीलिये इन्हें छुट्टी नहीं मिल रही थी। बेचारे रो-रोकर मन में चरित्र-नायक का ही ध्यान कर रहे थे और प्रार्थना कर रहे थे। अकस्मात् एक जादू जैसा काम हुआ। मशरक थाने से खबर आ गयी कि वहाँ भारी विद्रोह हो गया है और अशान्ति फैल रही है। कलक्टर साहब तो चटपट निरीक्षण कार्य छोड़कर शान्ति व्यवस्था के लिये मशरक चले गये। इधर चौधरी जी भी कार्यालय के बड़े बाबू के हाथ में दरखास्त फेंककर टैक्सी द्वारा घर के लिये प्रस्थान कर गये। घर पहुँचने पर पता चला कि चरित्रनायक जमात के साथ ठाकुर बाड़ी में ही ठहर गये हैं। श्री चौधरी के नहीं आने के कारण वे उनके घर नहीं आना चाह रहे थे। श्री चौधरी दौड़े हुए मन्दिर गये और चरित्रनायक को दण्डवत् कर उनने सारी बातें बतायीं। चरित्रनायक ने हँसते हुए कहा कि तुम टैक्सी से घर आये हो तो मैं भी तुम्हारे घर टैक्सी से ही जाऊँगा। अब तो चौधरी जी तो और चक्कर में पड़ गये कि टैक्सी कहाँ से लायी जाय इसी समय धनबाद के श्री रंगलाल चौधरी चरित्रनायक को मुजफ्फरपुर से खोजते हुए अपनी कार से ठीक उसी समय पहुँच गये जिस समय टैक्सी की चर्चा हो रही थी। उसी कार से सभी लोग चौधरी जी के घर आ गये। कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ।

चरित्रनायक के आसन में एक बड़े सर्प का निवास

[घ] १९५२ ई० में श्री चौधरी जैपुर खजौली अंचल में सर्किल इन्सपेक्टर के पद पर कार्य कर रहे थे। चरित्रनायक जनकपुर में रंग-होली मनाकर आठों लीला स्वरूप सरकार तथा परिकर के साथ खजौली आ पधारे। यहाँ भी रामार्चा विवाह एवं कलेवा उत्सव का कार्यक्रम पारी-पारी से हो रहा था। बारात के दिन एक अद्भुत घटना हो गयी। जब बारात बाजे-गाजे के साथ जनवासे में आई तब उसके बाद ही दुलहा सरकार विवाह मंडप पधारे। उसी समय एक बड़ा-सा सर्प चितकबड़े रंग का मंडप के दक्खिन-पूर्व से निकलकर मंडप की परिक्रमा करते हुए महाराज जी के आसन के पास पहुँच गया। वहाँ फण खड़ा करके झूमने लगा। बाद चरित्रनायक के बिस्तर में प्रवेश कर गया। कलेवा के दिन भी वही सर्प शृंगार कुञ्ज के सामने खड़ा हो झूमने लगा और दुलहा सरकार के साथ-साथ मंडप की ओर चल पड़ा। आगे-आगे सर्प जा रहा था और पीछे-पीछे दुलहा सरकार, लोग उसके साथ खेल रहे थे। थोड़ी देर के बाद वह सर्प पुनः विलीन हो गया। चरित्रनायक की आज्ञा बिना उसे कोई छू तक नहीं सकता था। लोगों के मत से वह बहुत ही विषैला सर्प था। सबों की राय हुई कि चरित्रनायक का आसन झाड़ दिया जाय। इस पर चरित्रनायक ने उत्तर दिया "मेरे नाम के साथ शंकर भी लगा है, सर्प तो शंकर का शृंगार है, वह किसी को कष्ट थोड़े दे रहा है ? उसकी इच्छा पर है कि वह रहे या जाय।"

छपरा जिले से प्राप्त अनुभूतियों का विवरण

२८—श्री कपिलदेव नारायण सिंह, वकील, सिवान हमारे चरित्रनायक के प्रिय शिष्यों में हैं। उन्हें चरित्रनायक का प्रथम दर्शन छपरा तुलसीदास जी की मठिया में लीला स्वरूप के साथ १९५५ में हुआ था। उसी समय के दर्शन में युगल सरकार उन्हें साक्षात् मालूम पड़े। मन में निश्चय हो गया कि ये ही महात्मा हमारे गुरुदेव होने लायक हैं। इसी के अनुसार उन्होंने अपने छपरा निवास स्थान पर १९५७ ई० की जानकी नवमी तिथि पर गुरुमन्त्र ग्रहण किया।

(क) प्रथम बार लड़की के विवाह के अवसर पर चरित्रनायक की कृपा से ऐसा अनुभव हुआ कि रुपये की कमी होने पर कोई-न-कोई आकर उन्हें रुपये देकर काम चला देता था।

(ख) एक लड़की का विवाह इन्होंने श्री विद्याभूति भवन मण्डप अयोध्या में ही किया। बारात

विशुनपुर सरैयाँ जिला मुजफ्फरपुर से आयी थी। श्री नागेश्वर बाबू, जो चरित्रनायक के ही कृपापात्र थे, उन्हीं के लड़के से विवाह सम्पन्न हुआ। इस विवाह के अवसर पर भी अनोखी घटना-घटित हुई। श्री महाराज जी ही विवाह-विधि करा रहे थे। अवसर आने पर उन्होंने समधी जी (नागेश्वर बाबू) से कहा कि आपको दहेज क्या चाहिये, माँग लीजिये। तब नागेश्वर बाबू बोल उठे कि उन्हें श्री युगल सरकार और गुरुदेव में प्रीति बनी रहे और उनकी दिव्य झाँकी भी मिलती रहे। ऐसा कहते हुए उनका हृदय भर गया और वे चरित्रनायक के चरणों पर पड़ गये। चरित्रनायक ने जैसे ही उनका माथा स्पर्श कर दिया उनकी अवस्था पागल जैसी हो गयी। यह अवस्था कई मास तक बनी रह गयी। परिवार के लोगों ने उन्हें पागल समझा, उन्हें सरयू जी में बार-बार डुबोया गया और कई बाल्टी जल से नहला-नहलाकर स्नान कराया गया जिससे उनका मस्तिष्क ठण्डा हो जाय। चरित्रनायक की कृपा से ही जब उनकी अवस्था कुछ शान्त हुई तब उन्होंने कहा 'मुझे तो श्री महाराज जी के हाथ से माथा स्पर्श होते ही तुरन्त दिव्य झाँकी मिलने लगी, उसे देख-देखकर मैं विह्वल और पागल-सा होने लगा। परिवार के लोगों को क्या पता कि मेरी आन्तरिक अवस्था क्या थी ? उस झाँकी को सहन करने में असमर्थ जानकर ही चरित्रनायक ने वह दृश्य आँखों से ओझल करा दिया। उनका कहना था कि वे श्री महाराज जी के ही रूप में से कभी हनुमान जी को देखते थे और कभी श्री सीताराम जी युगल जोड़ी को देखते थे।

२९—श्री जगन्नाथ सिंह, ग्राम मशरक जिला छपरा के निवासी हैं। ये तीन-सुकीया, आसाम प्रान्त में एक माननीय ठीकेदार एवं व्यवसायी रूप में जीविका उपार्जन करते हैं। चरित्रनायक के ये बड़े ही प्रिय एवं पुराने शिष्यों में हैं। गुरुदेव की कृपा से उन्होंने भौतिक क्षेत्र में लाखों की सम्पत्ति हासिल कर ली है। तो भी सदा अमानी रहकर गुरुदेव की सेवा निष्ठा युक्त भावना से करते आये हैं। गुरुधाम से अपना सम्बन्ध आज तक भाव पूर्ण बनाये हुए हैं। उन्होंने अपनी एक दो अनुभूतियों की चर्चा की है—

(क) १९६३ ई० में झूला उत्सव देखने के बाद जगन्नाथ बाबू चरित्रनायक को लेकर ट्रेन से सिवान के लिए चल पड़े। और भी कई गुरु भाई साथ थे। भक्तवर श्री रामाजी के आश्रम सरैयाँ में उनकी जन्म जयन्ती उत्सव सम्पन्न करने के लिये ही चरित्रनायक वहाँ जा रहे थे। टिकट कटाने के समय चरित्रनायक ने जगन्नाथ बाबू से कह दिया कि हमारे लिये टिकट न लेना। 'मैं अन्धा हूँ और अन्धे का टिकट नहीं लगने का कानून है।' उस दिन मजिस्ट्रेट चेकिंग की बात चल रही थी। इसलिये जगन्नाथ बाबू ने चुपके एक टिकट कटवा ली। इस प्रकार ट्रेन के डिब्बे में बैठकर प्रस्थान कर गये। बगल के ही डिब्बे में मजिस्ट्रेट एवं पुलिस अधिकारी बैठे थे। गाड़ी सिवान तक पहुँच गयी, तब तक कोई चेकिंग करने वाले उस डिब्बे में नहीं आये। गुरु आज्ञा नहीं मानने की ग्लानि जगन्नाथ बाबू को मन-ही-मन सता रही थी। स्टेशन पर उतरते ही चरित्रनायक का हाथ पकड़कर वे चलने लगे। रास्ते में चरित्रनायक बोल उठे 'ठीकेदार साहब जानते थे कि आज उनके गुरुदेव पकड़े जायेंगे तथा जेल जायेंगे कहाँ गया वह मजिस्ट्रेट, और कहाँ गयी वह पुलिस ? टिकट कटाने से क्या लाभ हुआ ? जब गुरु की बातों में विश्वास ही नहीं तो गुरु भक्ति कैसी ? हम जिसके हैं वह मेरा सार-संभार बराबर करता है।' यह पंक्ति 'आप समाज-साज-सब-साजी' बिल्कुल सत्य है। बेचारे जगन्नाथ जी तो यही सोचने में लग गये कि टिकट तो उनने चुपके कटायी, किसी से उनने बताया ही नहीं, फिर भी सारी बातें जान गये। 'धन्य हैं मेरे आराध्यदेव, उनका जय-जयकार हो।' जगन्नाथ बाबू का मन बोल उठा।

(ख) एक दूसरी घटना मशरक की है। जगन्नाथ बाबू की भतीजी की शादी थी। गुरुदेव एक रोज पहले आ गये, यद्यपि कोई सूचना नहीं थी। बारात के स्वागतार्थ ३९६ रसगुले तथा ३९६ लाल मोहन

आदि इसी संख्या के अनुरूप तैयार किये गये थे। चरित्रनायक ने बारात के दिन कहा कि सामान सत्र कहाँ बन रहा है ? भण्डार में मैं जाकर भोग लगाऊँगा। यहाँ भी जगन्नाथ जी ने अपनी मर्जी लगा दी। इन्होंने मन में सोचा कि इन्हें कष्ट क्यों दिया जाय, एक ब्राह्मण से भोग लगवा दिया जायेगा। गुरुदेव नहीं माने और बिना कहे ही भण्डार की ओर चल पड़े। तब जगन्नाथ बाबू दौड़कर हाथ पकड़ लिये और साथ-साथ चल पड़े। चरित्रनायक ने कहा कि तुम नहीं समझते हो, वह भण्डार तो श्री किशोरी जी का है। भण्डार में जाकर सभी भोग सामान में उन्होंने तुलसीदल छोड़ दिया और तब जगन्नाथ बाबू के साथ बाहर आये।

एक घण्टे के बाद ही यह सूचना मिली कि इस बारात में बिहार के मुख्य मन्त्री जी आ रहे हैं और उनके साथ बहुत बड़ा जमात भी आ रहा है। जगन्नाथ बाबू का कहना है कि एक हजार लोगों ने एक साथ बैठकर नाश्ता किया, लाल मोहन, रसगुला आदि की कोई कमी नहीं हुई। यहाँ भी रामायण जी में वर्णित 'सिय महिमा' को प्रकट चरित्रनायक ने ही करा दी और दुलहा सरकार के जमात को उन्होंने पूरी सेवा करा दी। लाज बच गयी। सभी गद्गद हो गये। जै गुरुदेव।

(ग) एक तीसरी घटना सिधवलिया स्टेशन की है। श्री जगन्नाथ बाबू अपने गुरुदेव को लेकर विशुनपुर अपने कृषि फार्म पर गये। उस रात उधर ही जगन्नाथ बाबू के सम्बन्धी स्वर्गीय श्री रामयश कुँअर के घर ठहर गये। दूसरे दिन अवध जाने के लिये जगन्नाथ बाबू पच्चीस-तीस आदमी के साथ ट्रेन में चढ़ाने आये। रेल में कहीं जगह नहीं लोग छत पर चढ़े थे और हैन्डिल पकड़ कर भी खड़े थे। जगन्नाथ जी ने कहा कि सरकार कल सुबह की गाड़ी से जायँ, बड़ी भीड़ है।' चरित्रनायक ने उत्तर दिया कि मुझे प्लेट फार्म पर अमुक दिशा में ले चलो। वहाँ जगह नहीं मिलेगी तो लौट जाऊँगा। चरित्रनायक के बताये हुए स्थल पर उन्हें खड़ा कर दिया गया। सामने एक ऐसा डिब्बा लगा जिसमें केवल दो बेंच थे। एक बेंच पर दो डाक वाले बैठे थे। उसमें से एक ने कहा कि महाराज जी आप इसमें आ जाइये। श्री महाराज जी चढ़ गये और उनके साथ ही श्री परमेश्वर पाठक गुरु भाई भी अवध तक पहुँचाने गये।

३०—श्रीमती सीता सचहरी ग्राम सदानन्दपुर, जिला बेगुसराय की रहने वाली हैं आप चरित्रनायक के दृढ़ अनुरागिनी शिष्याओं में एक हैं।

एक सम्पन्न परिवार की महिला होते हुए भी श्री अवध में प्रति वर्ष अधिक-से-अधिक समय देने की चेष्टा करती हैं आप भगवान की सेवा करते हुए दैहिक किंकर्य अपने स्थान में बराबर ही करती रहती हैं। तन, मन, धन से सेवा करने का भाव बढ़ता ही जा रहा है। अपनी अनुभूतियों के सम्बन्ध में बताते हुए उन्होंने कहा—

(क) सर्वप्रथम १९५६ ई० में वे श्री अवध आकर माधुरी कुञ्ज में ठहर गयी थीं। हमारे चरित्रनायक के दर्शन के लिये श्री सीता सहचरी उसी अवसर पर विवहुति भवन आईं और नवलवर भवन में चरित्रनायक का दर्शन प्राप्त हुआ। दण्डवत करने के समय चरित्रनायक ने बड़े ही प्रेम से आशीर्वाद दिया मानो पूर्व परिचित हों। उनके भाव व्यवहार से प्रभावित होकर श्री सीताजी शिष्या बन गयीं। उनके पति-देव १९५४ में ही इंगलैण्ड चले गये थे और किसी विषय का विशेषज्ञ होने के लिये अध्ययन में लगे थे। जिस समय श्री सीता सचहरी चरित्रनायक से मिलने गयी थीं उसी समय उन्हें बताया गया कि श्री सीता सहचरी को पुत्र रत्न की प्राप्ति अब तक नहीं हो पायी है। यह सुनकर चरित्रनायक करुणा से भर गये और बोल उठे कि किसी को भी संसार में सब सुख नहीं होता है। और चाहे जो भी हो, इन्हें एक पुत्र अवश्य

देता होगा। इस प्रकार आशीर्वाद प्राप्त कर सीता बहन घर लौट गयीं। उनके पतिदेव १९५० ई० के अगस्त मास में विदेश से लौट आये और १९५८ ई० में उन्हें एक पुत्र रत्न भी प्राप्त हुआ।

(ख) श्री सीताजी के पतिदेव को विदेश से लौटने पर किसी बड़े पद को प्राप्त करने की तीव्र अभिलाषा हुई। पर मिलने में कठिनाई हो रही थी। इसी चिन्ता से वे उदास रहा करते थे। हर प्रकार से योग्य एवं सुशील होते हुए भी किसी ऊँचे पद की प्राप्ति नहीं होने के कारण उनकी बुद्धि मारी गयी। इसी निराशामय अवस्था में उन्होंने १९६० में प्राण त्याग कर दिया। इस प्रकार सीता बहन जवानी में ही विधवा हो गयीं। उन्हें चरित्रनायक के पूर्व वाक्य याद पड़ गये कि स्वामी का सब सुख नहीं होगा। शायद इसी घटना को जानते हुए चरित्रनायक आशीर्वाद देते समय बहुत रो पड़े थे। अब तो और भी विश्वास हो गया कि उनकी जीवन नैया के खेवैया एकमात्र गुरुदेव ही रह गये। १९५६ के बाद सीता बहन १९६६ में ही अवध आयीं। उनका बच्चा बराबर बीमार रहा करता था। इसलिये १९६२ में तीन लड़कों के समय चरित्रनायक अकेले सदानन्दपुर आकर ठाकुरबाड़ी में ठहर गये थे। स्नान पूजा के बाद सतुआ पा लिये। उनके आने की सूचना सीता बहन को भीतर महल में नौ बजे दिन में मिली। पर पारिवारिक परम्परा के अनुसार वे बाहर नहीं आ सकती थीं। किसी प्रकार चरित्रनायक का दर्शन उन्हें चार बजे सन्ध्या में हुआ और चरित्रनायक आशीर्वाद एवं सन्तोष देकर विदा हो गये। तब से बच्चा ठीक रहने लगा। १९६८ में चरित्रनायक ने श्री बैजनाथ शरण जी को सदानन्दपुर भेजकर यह सूचना दिलवायी कि वे स्वयं आना चाहते हैं। उसके बाद ही चरित्रनायक वहाँ गये, बिना कोई सामान लिये अपनी ओर से विवाह उत्सव सम्पन्न करा दिया। वहाँ से जीप गाड़ी से पटने के लिये प्रस्थान उन्होंने किया। बरौनी में पेट्रोल खतम हो गया तो भी बिना पेट्रोल की पटने तक चली गयी।

[ग]चरित्रनायक के प्रति सीता बहन के परिवार का भी प्रेम धीरे-धीरे बढ़ता गया और १९७० ई० माघ वसन्त पञ्चमी में होने वाले विवाह के अवसर पर तो उनके सारे परिवार के लोगों ने विवाह, कलेवा आदि का सुख लिया।

दरभंगे जिले से प्राप्त कुछ अनुभूतियाँ

३१—श्री नीरस चौधरी निवासी ग्राम मभौलिया जिला दरभंगे के हैं। आप कई वर्षों तक जिला हरिजन कल्याण पदाधिकारी के पद पर नौकरी कर कुछ काल से आपने अवकाश ग्रहण कर लिया है। श्री चौधरी चरित्रनायक के प्रिय एवं अनुरागी शिष्यों में हैं। आपका प्रथम सम्पर्क चरित्रनायक से १९५३ ई० में धनबाद में श्री रामयतन लाल जिला जन सम्पर्क पदाधिकारी के निवास स्थान पर हुआ। दंड प्रणाम के बाद श्री चौधरी यह सोचने लगे कि महात्मा जी को न दाढ़ी है न और न जटा है, तो भी वे साधु कहे जाते हैं। इसी आश्चर्य में चौधरी जी मन-ही-मन उलझे हुए थे। सन्ध्याकाल में जब आठ लीला स्वरूप सरकार को बैठाकर नाम एवं पद कीर्तन प्रारम्भ हुआ तब चौधरी जी मन्त्र-मुग्ध होकर सुनते रहे और बाहरी ढंग ढाँचे की ओर से उनका मन बिल्कुल हट गया। इस प्रथम दर्शन में ही चौधरी जी को ऐसा लग गया कि चरित्रनायक सचमुच भीतर से सन्त हैं यद्यपि सन्त होने का बाहरी लक्षण कोई भड़कीला नहीं है।

दूसरे दिन स्थानीय गायकों के एक दल ने आकर चरित्रनायक को विनय पत्रिका एवं सूरदास पदावली से कई पद सुनाया। अधिक देर तक भगवान कृष्ण से सम्बन्धित पदों को सुनाने के बाद जब विनय पत्रिका के पद आरम्भ हुए तब चरित्रनायक ने हँसते हुए कहा कि बहुत देर तक माखन मिश्री खाते-खाते जब जी उमठ गया तब राम दरबार की ओर आये हैं। चौधरी जी के हृदय में अब दूसरी शङ्का हो

गयी कि महात्मा जी अवतारों के सम्बन्ध में भेद-बुद्धि रखते हैं। पर आगे चलकर जब इनकी शरणागति श्री अवध में रास-कुञ्ज में हुई जहाँ कृष्ण भगवान् की ही आरती पूजा हुआ करती थी, तब इनकी यह शङ्का भी निमूॅल हो गयी। इन्हें स्पष्ट हो गया कि हमारे चरित्रनायक एकमात्र भगवान् के भेदहीन उपासकों में हैं।

रामयतन बाबू के घर उनके आँगन में श्री सीताराम विवाह एवं कलेवा उत्सव सम्पन्न हुआ, उसमें श्री चौधरी को पहले-पहल विवाह लीला का सुख प्राप्त करने का अवसर मिला। इस अवसर पर श्री केदारनाथ जी सब जज, श्री धर्मदेव बाबू अव्वल मुन्सिफ अन्य कई मुन्सिफ, वकील तथा श्री रंग लाल चौधरी एडवोकेट भी उपस्थित होकर विवाह-कलेवा का आनन्द लेते रहे। इसके बाद चरित्रनायक धनबाद से बिदा हो गये।

अद्भुत ढङ्ग से शरणागति की प्राप्ति

१९५४-५५ में एक बार श्री चौधरी, श्री रङ्गलाल बाबू एवं श्री राधाकृष्ण ठाकुर के साथ श्री अवध गये और उन लोगों ने चरित्रनायक से इनका परिचय कराते हुए यह कहा कि इन्हें भी शरण में ले लिया जाय तब उत्तर मिला "यह तो मिथिला के पंडितजी हैं।" इस प्रकार उस बार गुरु-मन्त्र नहीं मिला। पुनः शायद १९५६ ई० में श्री नीरस चौधरी रंगलाल बाबू एवं राधाकृष्ण ठाकुर के साथ श्री अवध की ओर जाने वाली मेलगाड़ी में चढ़कर एक साथ चले। नीरस चौधरी को गया ही उतर जाना था। पर दोनों साथियों ने गया पहुँचने के पूर्व ही से यह हठकर दिया कि इस बार श्री अवध चलिये। इसी वाद-विवाद में गाड़ी गया से छूट गयी और नीरस चौधरी श्री अवध आ पहुँचे। इस बार बिना आनाकानी के ही इन्हें शरणागति मिल गयी। उस समय से श्री चौधरी अपने गुरुदेव के अनन्य अनुरागी शिष्यों में रहे हैं, तब से इनके जीवन की बागडोर चरित्रनायक के ही हाथ में रहा है और अनेक पारिवारिक संकट का निवारण हुआ है।

[३२] श्री रामनन्दन ठाकुर, ग्राम मुसापुर, जिला समस्तीपुर के रहने वाले हैं। आप उत्तरी पूर्वी रेलवे के अधीन एक गार्ड के पद पर कार्य करते हैं। आप बहुत वर्षों से चरित्रनायक के एक सरल एवं निश्छल शिष्यों में रहे हैं।

[क] एक बार उनके ग्राम में चरित्रनायक ने विवाह एवं कलेवा उत्सव में अपूर्व अनंन्द की वर्षा की। उस अवसर पर उनके एक पड़ोसी श्री शिवचन्द्र ठाकुर चरित्रनायक की मन-ही-मन परीक्षा ले रहे थे। अन्त में सन्तुष्ट होकर उन्होंने दीक्षा लेने के लिये चरित्रनायक से प्रार्थना की। तब उत्तर मिला "मैं किस लायक हूँ कि आपका गुरु बनूँ। आप ज्ञानी हैं और अनेकों सन्तों की परीक्षा ले चुके हैं। मेरी परीक्षा भी तो आप परोक्षा रूप से ले ही रहे थे।" बिना कहे ही उनके पेट के सारी बातों को उनने बता दिया तो वे और भी लज्जित हो गये। बार-बार क्षमा याचना कर उन्होंने गुरुमन्त्र ग्रहण कर लिया।

(ख) श्री रामनन्दन ठाकुर ने लिखा है कि उन्हें जब भी जीवन में चरित्रनायक के दर्शन की इच्छा हुई, तब-तब चरित्रनायक ने ही कष्ट करते हुए अचानक आकर उन्हें और उनके परिवार को दर्शन दिया। उनकी दयालुता एवं कृपालुता का वर्णन कहाँ तक किया जाय।

[३३] श्री राधाकृष्ण ठाकुर, ग्राम गोही, निवासी जिला समस्तीपुर के हैं। वे कई वर्षों से बोयालर इन्सपेक्टर के राज पत्रित पद पर कार्य करते आ रहे हैं और अभी जमशेदपुर में पद स्थापित हैं। वे १९५५ ई० से ही चरित्रनायक के एक प्रिय एवं अनुरागी शिष्यों में रहे हैं। उन्होंने निजी अनुभूतियों की चर्चा करते हुए यह बताया कि १९५५ ई० में चरित्रनायक के ही एक शिष्य रामतयन बाबू से सम्पर्क

हुआ और चरित्रनायक के गुण गान सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्हें बड़ी तीव्र इच्छा चरित्रनायक के दर्शन की हुई। धनबाद में रहते हुए ही, उन्हें शिष्य होने के पूर्व ही, चरित्रनायक का दर्शन अपने ही निवास स्थान पर कुछ क्षण के लिये हुआ और बाद वे अन्तर्ध्यान हो गये। जब १९५५ के अन्तिम भाग में श्री ठाकुर शरणागति प्राप्त करने श्री अवध गये तो उन्होंने उसी रूप को पाया जिसका दर्शन धनबाद में कुछ क्षण के लिये हुआ था। बिना संकोच के चरित्रनायक ने इन्हें अपनी शरण में ले लिया। इस प्रकार इन्हें विशेषता पूर्ण शरणागति प्राप्त होने का गौरव प्राप्त हुआ।

[क] श्री ठाकुर धनबाद से बदलकर १९५८ ई० के अक्टूबर में मुजफ्फरपुर आये। वहाँ गुरुदेव अचानक आये। सबों का दण्डवत् होने के बाद श्री ठाकुर जी की धर्मपत्नी ने एक साल की बच्ची "मंजु" से भी गोड़ लगवाना चाहा पर उत्तर मिला "अभी इनसे गोड़ नहीं लगवाना है" आगे चलकर यह वचन रहस्यमयी साबित हुआ। उसी साल छठ के बाद इस बच्ची को "डीपथीरिया" रोग हो गया। एक दिन स्वांस बन्द हो गयी और मालूम पड़ा कि मृत्यु हो ही गयी। श्री महाराज जी का चरणामृत प्रथम बार दिया गया, अन्दर नहीं जा सका। पुनः दोबारे दिया गया वह भी मुख तक ही रहा, जब तिबारे दिया गया तब एक आध कण अन्दर प्रवेश कर गया और प्राण लौट आया।

[ख] एक बार मुजफ्फरपुर में बसन्त पञ्चमी के अवसर पर विवाह एवं कलेवा उत्सव श्री ठाकुर के घर सम्पन्न हुआ। चरित्रनायक मकान के छत पर ठहरे हुए थे। बिना उनसे पूछे ही भोजन सामान तैयार किये गये और भोग लगाया गया। दाल घट गयी पर गरम जल मिलाकर कमी पूर्ति की गयी। जैसे ही ठाकुर जी छत पर गये, चरित्रनायक ने कहा "बिना पूछे सामान अन्दाज पर क्यों लगाते हैं ? दाल घट न गयी थी ?" ठाकुर जी ने इसे अपने लिये चेतावनी मान ली। बिना गुरुदेव से पूछे ऐसे अवसर पर कुछ नहीं करने का संकल्प उनने कर लिया। उनके अन्तर्यामीपन से वे बड़े प्रभावित हुए।

ग—एक समय श्रीब्रह्मदेव बाबू श्री अवध से मुजफ्फरपुर आये और श्री ठाकुर को लेकर तुरकी सरेयाँ गये जहाँ श्री महाराजजी ठहरे हुए थे। वहाँ जाते ही चरित्रनायक ने यह कह दिया 'मैं भगत को श्री अवध में नहीं पाया, तब ब्रह्मदेव बाबू ने उत्तर दिया कि भगत श्री अवध से अलबेला बाबा के आश्रम चला गया है। इस प्रकार ठाकुर ने देखा कि चरित्रनायक एक स्थान पर रहते हुए भी सब जगह की खबर स्वयं रखते हैं। वे एक देशीय होते हुए भी सर्वदेशी हैं।

शिष्य का भोग अपने लेकर भोगने में भी समर्थ

घ—एक साल हमारे चरित्रनायक श्री राधाकृष्ण ठाकुर के घर मुजफ्फरपुर आये और वहाँ से विदा होकर श्रीसीताराम शाही के घर बस द्वारा रामपुर हरि जाने के लिये बस स्टैंड आ गये। उस समय श्री ठाकुर की नाक पर एक बड़ा बरें जैसा घाव हो गया था और नाक में छेद तक हो गया था। दवा-दारू से लाभ नहीं हो रहा था। श्री सीताराम शाही ने इसकी चर्चा चनित्रनायक से कर दी। उन्होंने श्री ठाकुर के नाक को स्पर्श किया, वह घाव छूते ही गायब हो गया और नाक का छेद भी बन्द हो गया। इसके बाद चरित्रनायक रामपुर हरि चले गये और वापस आने पर श्री ठाकुर ने देखा कि वही घाव चरित्रनायक के नाक पर बैठा हुआ है। पूछने पर चरित्रनायक ने कहा कि मैंने तुम्हारा भोग ले लिया है। मुझे ठीक होने में अधिक देर नहीं लगेगी।

ङ—एक दूसरी बार चरित्रनायक मुजफ्फरपुर आये तो उस समय श्री ठाकुर के पिता श्री रामेश्वर ठाकुर भी वहीं पर थे। वे चरित्रनायक को लेकर राधा कृष्ण जी के साथ ग्राम गोही गये। वहाँ आने पर चरित्रनायक ने दो-तीन बार ऐसा कहा 'कोई आलू रखने का मकान बनाता है, हमें झोपड़ी भी नहीं रहेगी ?'

इन शब्दों के मर्म को उस समय कोई जान नहीं पाया। इसी समय लड़कों के विवाह के लिये अगुआ आ गये और चरित्रनायक ने विवाह ठीक करने का आदेश दिया और स्वयं ठाकुर जी के साथ कार से मुजफ्फरपुर लौट गये।

उनके जाते ही गाँव में आग लग गई, आस-पास के कई मकान जल गये पर 'बच गयी मड़ैया विभीषण की'। श्री ठाकुर का मकान बिल्कुल बचा रहा।

चित्रपट के दर्शन मात्र से प्रेत बाधा शान्त

च— ग्राम गोही में श्री राधाकृष्ण जी की चचेरी बहन की शादी अवसर पर एक जादू टोने वाली, ग्राम की स्त्री दुलहा देखने आयी। श्री ठाकुर की निजी बहन ने परदा कर दिया और वह दुलहा नहीं देख पायी। अपना इस प्रकार का अपमान समझकर उसने कुछ टोना कर दिया। श्री ठाकुर की बहन अनाप-सनाप बोलने लगी। नूनू बाबू ने जो वहीं पर थे, भीड़ हटवा कर चरित्रनायक का एक चित्रपट. पूजा घर से मँगवाकर ठाकुर जी को बहन की नजरों के सामने रखा सामूहिक प्रार्थना होने लगी। थोड़ी ही देर में प्रेत बाधा शान्त हो गया।

श्री कनक भवन अयोध्या में दिव्य दर्शन

एक बार दो मास भ्रमण के बाद श्री रामाशीष शाही, नूनू बाबू, श्री रामदेनी शर्मा चरित्रनायक के साथ श्री अवध आये। सभी व्यक्ति तो यात्रा से थके हुए थे पर चरित्रनायक ने तीनों व्यक्तियों को कनक महल दर्शन के लिये जाने का आदेश दिया। थकावट के कारण इच्छा न होने पर भी सन्ध्या में तीनों ही साथी दर्शन के लिये कनक महल गए। महल पहुँचने पर श्री नूनू बाबू एवं रामदेनी शर्मा मंडप में जाकर पद गान करने लगे पर रामाशीषजी आँगन में ही बैठकर युगल सरकार की झाँकी निहारने लगे। अकथनीय दिव्य झाँकी श्री रामाशीष जी को दो तीन बार मिली लौटने पर चरित्रनायक को दंडवत् करते ही वे बोल उठे कि मन की आश पूरी हुई न ? श्री रामाशीष बाबू तो आश्चर्य में हो गये कि श्री महाराजजी भी सब देख रहे थे। चरित्रनायक ने बताया कि शुद्ध भाव एवं निष्ठा से जाय तो कनक महल बिहारी तो कामधेनु-सा फलदायक हैं। निराश कोई नहीं लौटता।

श्री अवध में प्रेतोद्धार

एक बार श्री रामाशीष शाही की बहन विवहुती भवन छत पर अपनी माँ के साथ बैठकर विवहुती भवन मंडप में रामार्चा पूजा देख रही थीं। अचानक वह ज्ञान शून्य हो गयी और अनाप-सनाप बोलने लगी। नीचे बुलाकर चरित्रनायक के चरणों पर माथा रखवाया गया। तुरन्त शान्त हो गयी चरित्रनायक ने बताया कि किसी भी प्रेत की श्री अवध में स्वतन्त्र गति नहीं है। अपने धार्मिक परिवार के साथ ही वे यहाँ आ पाते हैं और आकर मुक्ति लाभ करते हैं।

३४—श्री श्याम सुन्दरी सहचरी ने जो श्री अवध वास कर रही हैं बताया कि उनके पुत्र श्रीराम चन्द्र शाही की भूमि एक ग्राम में अच्छे दाम में बिक चुकी थी। उनके दूसरे पुत्र डाक्टर भरत की हिस्से वाली भूमि का उचित दाम मिलने की आशा नहीं थी। चरित्रनायक ने आशीर्वाद दिया तो भरत बाबू की भूमि श्री रामचन्द्र बाबू से भी अधिक दाम में बिक गयी।

३५—श्री राजनन्दनी सहचरी अभी विवहुती भवन में रहकर श्री अवध वास कर रही हैं। उनका कहना है कि उनकी पत्नी श्री ध्रुव अली की लड़की को पुत्र सन्तान नहीं हो रहा था। चरित्रनायक ने आशीर्वाद दे दिया तो पुत्र पैदा हुआ।

३६—श्री केशव बाबू, चुटहा मुजफ्फरपुर का कहना है कि एक बार श्री अवध से घर लौटने के लिये उन्हें चरित्रनायक की आज्ञा मिल गयी। सामान गट्ठर ठीक कर जब वे दंडवत् करने गये तो चरित्रनायक को सोये हुए पाया। उनके उठने तक तो जिस गाड़ी से जाना था वह छूट चुकी थी। अब दंडवत् कर वे दूसरी गाड़ी पकड़ने चले। स्टेशन पहुँचने पर पता चला कि पहली गाड़ी आगे जाकर कहीं उलट गयी। यात्रियों के जान-माल की बहुत क्षति हुई। अब केशव बाबू ने समझा की सोने के बहाने चरित्रनायकने उन्हें जान-बूझकर रोक रखा था।

एक बार केशव बाबू के पेट में दर्द था। चरित्रनायक ने सतुआ प्रसाद में से एक गोली बनाकर उन्हें दे दिया। दर्द छूट गया।

३७—श्री जय कृष्ण मिश्र, निवासी ग्राम पकड़ी-गनेशपुर उत्तर-प्रदेश के हैं। आप चरित्रनायक के श्रद्धालु शिष्यों में एक हैं और कई वर्षों से श्री अवध आया जाया करते हैं।

उनने अपनी निजी अनुभूतियों का विवरण भेजते हुए लिखा है कि १९६० अगहण शुक्ल पंचमी के अवसर पर प्रधान विवाहोत्सव देखने के बाद वे घर वापस आने को तैयार हो गये। रात्रि में १२ बारह बजे वे चरित्रनायक को दण्डवत् करने गये। उस समय श्री किशोरीजी एवं श्री शत्रुघ्न जी [चुलबुलवा सरकार] भी चरित्रनायक के बगल में ही सोये हुए थे। श्री शत्रुघ्नजी ने चरित्रनायक को जगा कर इन्हें आशीर्वाद देने कहा। चरित्रनायक ने जब इनके माथे पर अपने हाथों को रखा, उस समय उन्होंने इनके सम्बन्ध में श्री किशोरी जी उनके मन की सारी बातें बतायीं मानों इनके दिल की सारी बातें आगे से ही चरित्रनायक जानते थे। प्रसन्नता पूर्वक आशीर्वाद पाकर वे घर लौट आए तब मनोकामनाएँ पूरी होने लगीं।

१—भूमि सम्बन्धी बँटवारे का काम बिना न्यायालय की शरण लिये शान्तिपूर्वक सुलझ गया।

२—उन्हें सब रजिस्ट्रार का असालतन पद प्राप्त हो गया।

३—मानसिक परिवर्तन तो आशातीत होता गया है।

उनका कहना है कि बिना कहे ही चरित्रनायक सारी बातें जानकर उसकी पूर्ति करने में सर्व-समर्थ थे।

—०—

नवम खण्ड

हमारे चरित्रनायक की जीवन लीला अवधि के अन्तिम वर्षों की कतिपय उल्लेखनीय महत्व सूचक बातें

१९६० से १९७० ई० की अवधि में चरित्रनायक ने अनेकानेक लीलायें की, शिष्यों को अवसर-अवसर पर बहुमूल्य उपदेश दिये तथा भक्ति विहीन मानव जीवन की निस्सारता पर कई बार प्रकाश डाला। जीवन की इस अवधि में उनके स्थूल नेत्र बिल्कुल बन्द रहे। कहीं जाने घूमने की स्थिति में नहीं रहने पर भी उन्हें हाथ पकड़कर ले जाया गया और उनसे श्री रामार्चा पूजन, श्री सीताराम विवाह लीला, एवं कलेवा उत्सव, तथा नाम-जप-नवाह उत्सव अधिक-से-अधिक संख्या में सम्पन्न कराये गये। रामार्चा पूजन के मन्त्र तथा रामार्चा-कथा तो उन्हें कण्ठस्थ ही थे। एक दिन में एक ही साथ पाँच-पाँच चौकियाँ लगायी जातीं और पाँच आदमी द्वारा रामार्चा पूजन विधि एक ही साथ पूरी करायी जाती। वे कभी-कभी भरे हुए हृदय के साथ भावापन्न अवस्था में बोलते सुन गये 'हे श्री किशोरी जू ! मैंने तो आपसे स्थूल नेत्र बन्द करने का वरदान यह सोचकर माँगा था कि इस अवस्था में मुझे देखकर आपके आश्रित वर्ग मुझे श्री अवध में ही स्थिर रहने देंगे। केवल श्री अवध में ही रहकर जीवन लीला के अन्तिम भाग बिता सकूँगा।' महात्मा कबीर ने गर्मी से तपते पैर को बचाने के लिये जूते की इच्छा की। उसी समय पैर तो जल ही रहा था, एक सिपाही ने सिर पर गट्ठर रखकर उसे ढोने का आदेश दिया। बेचारे कबीर का मन बोल उठा 'या विधना तू क्या कीन, तरका माँगा ऊपर का दीन।'। ठीक कबीर जैसी अपनी अवस्था चरित्रनायक बताया करते थे। यह भी एक लीला ही थी जिससे सहर्ष चरित्रनायक ने अन्तिम काल तक सम्पन्न किया। इस अवधि में जो उल्लेखनीय महत्वकारी बातें हुईं वा जिन उपासना विषयों की चर्चा चरित्रनायक ने की उनमें कुछ ही विवरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

१—आश्रितों के कल्याण हेतु २४ चौबीस अवतारों की लीला करने में गुरुदेव समर्थ

एक साल प्रधान विवाह भण्डारा उत्सव समाप्त होने के बाद एक शिष्य के हृदय में ऐसा अरमान अंकुरित हुआ कि अब तो लोग सब बिदा हो रहे हैं, चरित्रनायक के साथ प्रसन्न मुद्रा में कुछ आन्तरिक सत्संग कर अपने मन का मैल दूर कर सकूँगा। उसी रात को चरित्रनायक पक्की भण्डार वाली कोठरी में ही मालपूआ प्रसाद रात तक वितरण करने के बाद रात्रि विश्राम वहीं कर रहे थे। प्रातःकाल वह शिष्य सरयू स्नान कर लौटा और चरित्रनायक की खोज करते हुए रासकुञ्ज तक आया जहाँ उस समय श्री सिद्ध किशोरीजी की माता का आसन था। हाथ में सरयू जल लिये हुए शिष्य के हृदय में ऐसा आया कि पहले गुरुदेव का चरणामृत उतार लूँ बाद विमल हो उनसे आन्तरिक सत्संग करूँगा। लोगों ने बताया कि चरित्रनायक तो निजी पाखाने के द्वार पर कम्बल ओढ़े बैठे हैं। अब तो चेला राम का मन ही मुर्झा गया। बाद तो वह अपने मन में ही कोसने लगा कि 'जब देखो तब क्रोध लीला वा मान लीला। महात्मा जी ने तो लीलाओं की ही सिद्ध कर ली है। हमेशा पहेली बने रहते हैं।' लोग तो दूर से ही खड़े देख रहे हैं। जो भी मनाने गये डाँट-फटकार सुन गये। किसी की हिम्मत नहीं जो आगे बढ़े। उस समय जाड़े का दिन था, लगभग सात बजे भोर का समय होगा। सूर्योदय होते ही जहाँ-तहाँ खड़े हो सेवक

समाज धूप ताप रहे थे। कुछ प्रेमियों ने उक्त शिष्य को कहा कि आपको यदि आज जाना है तो हिम्मत न हारिये—वहीं पहुँच जाइये।

शिष्य भी सरयू जल लिये पाखाने के पास आ पहुँचा। दुर्गन्ध तो नाकों में आने लगी क्योंकि भूमि में गढ़ा बनाकर ऊपर में बैठने के लिये काठ की पटरी दी हुई थी। वही पाखाना अपने लिये चरित्र-नायक ने बनवा रखा था। ऊपर मुँह खुला होने से दुर्गन्ध का आना स्वाभाविक ही था। किसी के आने की आहट सुनकर चरित्रनायक बोल उठे 'इधर मत आओ' निवेदन किया गया—'मुझे चरणामृत लेना है।' वे कहने लगे 'कहीं पेखाने में बैठे हुए गुरु का भी चरणामृत लिया जाता है ?' इधर से जवाब दिया गया कि 'कहीं गुरुदेव भी कभी किसी अवस्था में अपावन होते हैं ?' उनने देखा यह तो हठी चेला है। तब कुछ धीमी आवाज में बोलने लगे। कुछ सहारा पाकर शिष्य भी पास ही बैठ गया और कहने लगा 'गुरुदेव मैं हर उत्सव के बाद यह चेष्टा करता हूँ कि भीड़ हटने के बाद आपसे प्रसन्न मुद्रा में सत्संग कर ही लौटूँगा। हर बार मैं देख रहा हूँ कि आप प्रत्येक उत्सव के बाद कुछ-न-कुछ लीला कर ही बैठते हैं। मेरे हिस्से में आपकी लीला ही पड़ जाती है जिसके समझने का सामर्थ भी आप पूरा देते ही नहीं।' कहते-कहते गला रुँध गया, एक दो बूँद आँसू भी आ गये। उन्होंने शिष्य से कहा कि यह अपना सौभाग्य समझो कि गुरुदेव की रहस्य भरी लीला देखने का अवसर मिल जाता है। लोग तो आये, गाये बजाये, चलते बने। उन्हें भीतरी बातों से क्या मतलब ?

प्रश्न यह हुआ कि आज आप कौन सी-लीला कर रहे हैं ? उत्तर मिला 'यह बाराह अवतार की लीला है' शूकर बनने पर शूकर का कुछ स्वाभाविक गुण तो लीला में आना ही चाहिए।' पुनः सवाल किया गया कि समझा-बुझाकर भी तो काम निकाला जा सकता है। उन्होंने उत्तर दिया कि हठी जीव लेक्चर देने से अपना दुर्गुण नहीं पहचानता है। प्रत्येक उत्सव के अवसर पर सेवकों से अपराध होता ही है। उसका प्रायश्चित कराने के लिये उनका अपराध प्रकट कर सुधार करने के लिये ही प्रत्येक उत्सव के बाद लीला अस्त्र का प्रयोग करना पड़ता है। गुरुदेव तो चौबीसों अवतार की लीला करने में समर्थ हैं। आवश्यतानुसार ही लीलायें की जाती हैं। कभी शिक्षा के लिये और कभी शिष्यों की कसौटी कर उनकी गुरु-निष्ठा जाँचने के लिये भी लीलायें की जाती हैं। गुरु भूल नहीं करते, सदा उनका विधान, उनकी लीलायें मङ्गलमयी होती हैं ऐसा निष्ठापूर्ण भाव शिष्यों के हृदय में रहना चाहिये। तभी रहस्य बूझ पड़ेगा।

यदि गुरु अति क्रोध में हों तो, समझो कि नरसिंहावतार की लीला हो रही है, यदि वे लोभी बन हाथ पसार रहे हैं तो बूझो कि वामन अवतार की लीला हो रही है एवं किसी कामिनी से हँस बोल रहे हैं तो समझो कि कृष्णावतार जैसी लीला कर रहे हैं। यह तो जीव की निजी कुत्सित भावना है, उसी भाव का चश्मा पहन कर भगवान् कृष्ण की लीलाओं पर लांछन लगता है आदि। इस प्रकार से चौबीसों अवतार के चरित्र शिष्य शिक्षा के लिए प्रकट किए जा सकते हैं। जो गुरुदेव के प्रत्येक चरित्र को इस दृष्टिकोण से देखने का अभ्यास करता है और शंका होते ही शंका निवारण गुरुदेव से करा लेता है, उसी का जीवन सफल हो सकेगा।

२—गुरुदेव से कपट का फल एक बार शूकर योनि की प्राप्ति

एक दूसरे साल श्री अवध में चौथारी एवं भण्डारा हो जाने के बाद की बात है। गुरुदेव रासकुंज के बाहरी चबूतरे पर धूप ताप रहे थे। उस समय रासकुंज के सामने ऊपर से छत नहीं पाटा हुआ था। अत-एव प्रचुर धूप आती थी। बिल्कुल एकांत अवसर था, वे अकेले ही वहाँ पर थे। अचानक एक शूकर का बच्चा

उन्होंने देखा उस बच्चे के नेत्रों में आँसू
सामने आ गया। उस समय गुरुदेव के स्थूल नेत्र भी कायम थे। उन्होंने देखा उस बच्चे के नेत्रों में आँसू हैं और एकटक उन्हीं की ओर देख रहा है। उनने ध्यान से विचार कर देखा तब पता चला कि यह तो उन्हीं का एक शिष्य है जिसका निवास मिथिला क्षेत्र में था। गुरुदेव ने उसे कहा कि मैंने तुम्हारे कपट व्यवहार का कोई ख्याल नहीं किया था। तुम्हारे शरीर त्याग के समय अपना चरणामृत भी बिना तुम्हारे माँगें ही दे आया था। तो भी अपराध क्षमा न हो सका। करुणामयी किशोरीजी से ऐसा प्रकाश मिला कि गुरुदेव ने अपना चरणामृत दिया था, इसीलिए उसका सूकर शरीर श्री अवध में ही मिला, और काक-भुसुण्डी जैसा उसका ज्ञान कायम रहा। तब ही तो वह जन्मते ही अपने गुरुदेव के निकट आ सका। गुरुदेव तो करुणा से भर गये, उनने उसके प्रति कहा 'चिन्ता न करो। उनके न्याय मर्यादा का पालन तो हो ही गया। अब तुम्हारे ऊपर कृपा शीघ्र हो जायगी'। विवहुती भवन के आस-पास ही उस सूकर के बच्चे का शरीर छूट गया। उसे सन्त जूठन भी मिल चुके थे। दूर से यह घटना देखने वाले लोगों के छेड़-छाड़ करने पर ही चरित्रनायक ने उपरोक्त रहस्य को खोला था। लेखक ने भी इस घटना की पुष्टि सत्संग के अवसर पर १९६२ ई० में करायी थी। गुरुदेव से साँच रहे, तो भगवान् भी नहीं बिगाड़ सकते। गुरुदेव से कपट होने पर, गुरुदेव ने तो आप ही क्षमा कर दी पर स्वामिनी जू की ओर से हल्का दण्ड तो हो ही गया। इस घटना से स्पष्ट है कि चरित्रनायक पशु भाषा भी बूझते थे।

३— श्री अवध में सर्वोधार

१९६१–६२ ई० की अवधि में श्रीमती भुवनेश्वरी देवी ग्राम–अखौरी खाप, जिला पलामू की अपनी पागल बेटी के साथ १९६० ई० की जुलाई से ही श्री अवधवास कर रही थी। उनने बताया है कि एक बार चरित्रनायक बाहर भ्रमण में चले गये थे। आश्रम में दो तीन पुरुष वर्ग थे। एक दिन श्री विवहुती भवन में एक बहुत बड़ा साँप प्रकट हुआ। लोगों ने हल्ला किया। पुरुष वर्ग ने बिना बूझे उस सर्प को मार कर सप्त सागर में फेंक दिया।

कुछ ही दिनों में चरित्रनायक भ्रमण से वापस आ गये। रात्रि विश्राम कर जब वे भोर में उठे, तब नाम ध्वनि के बाद उन्होंने पूछा कि उस सर्प को किसने मार दिया? वह तो कई वर्षों से हमारे साथ था, उसने कभी किसी का कोई नुकसान नहीं किया। रात्रि में वह चरित्रनायक से आकर दुखड़ा सुना गया था। उसके उद्धार के लिये उसी दिन साधु-भंडारा किया गया और उस सर्प के नाम जय बोलाकर उसका उद्धार किया गया।

भुवनेश्वरी देवी ने यह भी बताया कि जब तक वे श्री अवध रखी गयी उनने कभी भी ऐसा अनुभव नहीं किया कि चरित्रनायक श्री अवध में नहीं हैं। 'कमठ अण्ड की नाईं' सभी आश्रम वासियों की सुधि दूर रहकर भी चरित्रनायक रखते थे। वे मरणासन्न बीमार पड़ गयी, आश्रमबासी बोलने लगे कि तू न बचोगी, घर से परिवार मँगा लो पर चरित्रनायक की कृपा से किसी को भी बाहर से बुलाने का मन नहीं हुआ। बिना दवा-दारू के ही भोग भोगवा दिया गया।

४—बिहार विधान सभा के अध्यक्ष श्री रामदयालु बाबू को गुरु दरबार से तीन साल निलम्बित

एक बार सत्संग के क्रम में कई प्रकार की बातें हो रही थीं उसी समय यह प्रसंग भी आया कि जिस प्रकार संसार में सरकारी अधिकारियों से कोई भूल होती है। तो गवर्नमेन्ट के द्वारा वे निलंबित किए जाते हैं और निर्धारित अवधि के भीतर उन्हें सफाई देकर अपने को निर्दोष प्रमाणित करने की सुविधा प्रदान की जाती है। उसी प्रकार का विधान गुरु दरबार में भी है। चरित्रनायक ने इस सुधार प्रणाली की स्वयं पुष्टि की थी। उदाहरण में बिहार विधान सभा के अध्यक्ष श्री रामदयालु सिंह का नाम लिया गया। वे भी

चरित्रनायक के कृपापात्र १९३६-३७ ई० में ही हो गये थे। कहा जाता है कि एक बार श्री किशोरीजी [लीला स्वरूप वेषधारी] ने अपने में एक अधिकारी के साथ कृपापूर्ण व्यवहार करने का सुझाव रामदयालु बाबू को दिया। उस अधिकारी को रामदयालु बाबू ने निलम्बित कर रखा था और आधे वेतन पर वे अपने परिवार का पोषण करने में असमर्थ थे। रामदयालु बाबू को यह संदेह हो गया कि किसी के बहकावे में आकर ही श्री किशोरीजी ने सांसारिक जन जैसा व्यवहार किया। उन्हें यह भी संदेह हुआ कि शायद चरित्रनायक के पास वह निलम्बित अधिकारी गया होगा। उसका दर्द दुःख सुनकर चरित्रनायक ने ही श्री किशोरीजी से ऐसा कहवा दिया ऐसी शंका होते ही रामदयालु बाबू ने एक पत्र चरित्रनायक को लिखा कि उपरोक्त घटना के फलस्वरूप उनकी स्वरूप सरकार में श्रद्धा घट गयी है आदि।

चरित्रनायक ने उनके पत्र के उत्तर में यह आदेश दिया कि बिना भीतरी रहस्य समझे आपने गुरु एवं भगवान् में शंका की है। अतएव आप गुरु दरबार से तीन साल निलम्बित रहेंगे। आत्म निरीक्षण करते रहें। तीन साल की अवधि बीतने पर पत्र लिखकर मुझसे आदेश प्राप्त होने पर ही हमसे मिल सकेंगे। तीन साल तक रामदयालु बाबू श्री अवध जाने पर भी चरित्रनायक का दर्शन नहीं कर पाये। अवधि बीतने तक उन्हें पर्याप्त प्रकाश मिल चुका। आदेश प्राप्त करने पर ही वे पुनः गुरुसेवा में आने जाने लगे।

५—शबरी के घर राम जैसी लीला

चम्पारण जिले का भावल ग्राम बड़ा ही सौभाग्यशाली ग्राम रहा है। वहाँ के माननीय सज्जन श्री विन्ध्याचल बाबू एवं कञ्चन बाबू चरित्रनायक के अनन्य निष्ठावान शिष्यों में हैं। वहाँ बड़ा ही सुन्दर शीशा-मण्डित विवाह मण्डप निर्माण श्री सिद्ध किशोरीजी के लीला-काल में हुआ था। झाँकी-झूला के के अनेक सुन्दर कार्य-क्रम वहाँ बराबर ही होते आये हैं। फाल्गुन शुक्ल पक्ष में वहाँ प्रति वर्ष विवाह उत्सव होता आ रहा है। जब भी चरित्रनायक वहाँ जाते थे, बराबर इन्हीं प्रेमियों के घर निवास करते थे। उक्त दो सज्जनों ने गुरु कृपा से लाखों की सम्पत्ति का उपार्जन कर लिया है।

किसी पारिवारिक विवाह में निमन्त्रित होकर चरित्रनायक एक साल शायद विन्ध्याचल बाबू के घर आये थे। वहीं पर अष्टयाम सेवा सीखने के लिये पटने से लक्ष्मी बाबू, मुजफ्फरपुर से अवध बिहारी बाबू नागेश्वर बाबू भी आये हुए थे। आनन्द उत्सव में समय सबों का बीत रहा था।

उधर वहाँ से सात आठ मील की दूरी पर एक गरीब ग्वालिन चरित्रनायक की शिष्या थी। उसके हृदय में रोज ही यह भाव हो रहा था कि मालिक लोग के घर तो चरित्रनायक बराबर आते हैं और ठहरते हैं। क्या वे मुझ दीन की झोपड़ी में कभी भी आ सकेंगे? क्या वे मेरा रूखा-सूखा सत्कार स्वीकार करेंगे? शायद वे आ जायें, यह सोचते ही कभी वह घर आँगन साफ करती, कभी घर तक जाने वाले रास्ते को ठीक करती। मकई मडुआ, चावल, गेहूँ का प्रबन्ध भी करती। यहीं मानसिक अवस्था उसकी शबरी जैसी कई दिनों से हो रही थी।

मर्यादा पोषक चरित्रनायक को सब पता हो गया। कोई बहाना की तलाश में यहाँ वे भी लग गये। एक दिन भोर ही कोई कारण निकाल कर पैदल ही भाग चले। पीछे-पीछे लक्ष्मी बाबू आदि भी चल पड़े। वे बार-बार पीछे देख डाँट फटकार करते गये पर इन लोगों ने साथ नहीं छोड़ा। सीखने आये थे अष्टयाम सेवा तो भावल में इन्हें कौन सिखाता? आधी दूर जाकर सभी इकट्ठे हो गए। जाना एक गरीब के घर, जमात इतना बढ़ गया। तो भी सबों के साथ बढ़ते ही गये और लगभग १२ (बारह) बजे दिन में भूखे-प्यासे आ गये। दूध की कराही भरी हुई है, गर्म दूध पी लीजिये, चावल है महा प्रसाद ही बना

लीजिये। वह सब भाँति सेवा लिये तैयार थी। स्वयं चरित्रनायक को ही भोग तैयार करना पड़ा। सभी सेवा सत्कार से तृप्त हो गये। वह भी गुरुदेव दर्शन अनायास पाकर फूले नहीं समाती थी।

विश्राम के बाद इसी शिष्या ने हठ किया कि गुरुदेव आप भावल लौट जायँ। वहाँ विवाह है, आशीर्वाद देकर ही आप भावल छोड़ें। यह लीला तो इसी शबरी के लिए हुई ही थी। शबरी के घर राम जैसा आचरण दिखाकर चरित्रनायक ने सबों को निहाल कर दिया। उनके लिये सभी बराबर हैं। यदि दूसरा कोई उद्देश्य होता तो वे उसी की पूर्ति में जाते, भावल नहीं लौटते। जय गुरुदेव !

६—शरणागति प्रदान करने में विशेषता के दो अनुपम नमूने

(क) श्री गोपाल शुक्लजी मुजफ्फरपुर के रसूलपुर जिलानी मुहल्ले में अपने ही मकान में निवास करते हैं। जब वे पुलिस विभाग में दरोगा पद पर कार्य करते थे, उनके बड़े भाई श्री रघुवंश शुक्लजी जिला परिषद कार्यालय मुजफ्फरपुर में ही नौकरी करते थे। रघुवंश बाबू चरित्रनायक के शिष्य १६३६ ई० के पूर्व ही हो गये थे। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि उनके भाई श्री गोपाल शुक्लजी भी शरणागत हो जायँ। एक बार ऐसा अवसर आया कि श्री गोपाल जी छुट्टी में भाई के पास ही रह रहे थे। उसी अवसर पर चरित्र नायक भी कहीं से आ पधारे।

श्री रघुबंश शुक्लजी ने श्री गोपाल शुक्ल से मन्त्र लेने के सम्बन्ध में चर्चा की। उन्होंने उत्तर दिया कि वे मांसाहारी हैं, अभी मास खाना हटात् नहीं छूट सकता। यदि आपके गुरुदेव मांसाहारी को मन्त्र देने में समर्थ हों, तो मन्त्र दिलवा दीजिए। मन्त्र में ताकत होगी तो उसी से हमारा मांस खाना छूट जायगा। चरित्रनायक को सारी बातें बतलायी गयीं। उन्होंने कहा यदि गोपाल जी को हार्दिक इच्छा हो तो मन्त्र दिया जा सकता है। श्री गोपाल शुक्ल तैयार हो गये और उन्हें मन्त्र प्रदान कर दिया गया। शायद उन्हें कहा गया कि एक माला मन्त्र जाप अवश्य कर लेना। कण्ठी को पूजा अवसर पर बाँध लेना बाद पूजा स्थल पर ही रख देना। कई वर्षों के बाद श्रीशुक्लजी निरामिष हो गये। आप चरित्रनायक के अनन्य शिष्यों में हो गये। श्री अवध भी आते-जाते हैं और अब नौकरी से अलग हो गये हैं। चरित्रनायक के शिष्यों में श्री गोपाल शुक्लजी अपने जैसा एक ही हैं।

(ख) कई वर्ष पूर्व चरित्रनायक गया जिले के जहानाबाद क्षेत्र में अधिक आया जाया करते थे। विवाह-कलेवा की झाँकी से एक स्थानी मुसलमान भाई इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने भी चरित्रनायक का शिष्य बनने के लिए अथक प्रयास किया। अन्ततोगत्वा चरित्रनायक ने मन्त्र देकर उन्हें अपना शिष्य बना ही लिया। ये मुसलमान बन्धु कई वर्षों तक कण्ठी बाँधे, तिलक लगाये श्री अवध आते-जाते रहे। अपने समान ये भी एक ही रहे। यों तो चरित्रनायक के स्थान में एक मुसलमान राज-मिस्त्री बराबर लगे रहे। बाप के हटने के बाद बेटा भी बहाल होकर मन्दिर निर्माण कार्य बराबर करता रहा।

७—भेदहीन उपासक

हमारे चरित्रनायक के स्थान में एक मन्दिर रासकुञ्ज कहाता है जहाँ भगवान कृष्ण की प्रतिमा स्थापित कर बराबर पूजा आरती होती रही है। आज तक पूजा आरती जारी है। श्री नवलवर भवन में श्री सीताराम जी के विग्रह की नित्य पूजा-आरती होती है। इस प्रकार अपने इष्टदेव के कट्टर अनन्य उपासक होते हुए भी उनने अन्य अवतारी लीलाओं का कम सम्मान नहीं किया। वृन्दावन की रासमण्डली ने एक मास तक आपके ही स्थान में रहकर कृष्ण लीला का सुख बरसाया। आपके दृष्टिकोण इस प्रकार बराबर भेदहीन बने रहे। सभी श्रेणी के सन्तों का समान आदर, पूजा वे आजीवन करते कराते रहे।

८—सामूहिक सत्संग में ही बिना पूछे सबों के प्रश्न का उत्तर देना

श्री अवध में हजारों शिष्य प्रेमी हृदय में तरह-तरह का प्रश्न लेकर आते पर व्यस्त कार्यक्रम रहने के कारण चरित्रनायक प्रातःकाल एवं सन्ध्या काल नाम कीर्तन के बाद या अन्य अवसर निकाल कर सत्संग के विषय आप ही छेड़ते। प्रश्न के रूप में अनेकानेक रहस्यों पर उदाहरण देते हुए आप प्रकाश डाला करते थे। श्रोतागणों को मालूम पड़े कि उनके हृदयस्थ प्रश्नों का ही उत्तर चरित्रनायक दे रहे हैं। सत्संग की यही प्रणाली आजीवन चलती रही। गोपनीय प्रश्नों के लिये ही कभी किसी को एकान्त अवसर दिया जाता था।

९—उत्तरा खण्ड के एक पहाड़ी महात्मा ने चरित्रनायक को राजयोगी कहा

एक दिन खिन्न मुद्रा में चरित्रनायक श्री अवध में बैठे तरह-तरह की बातें बोल रहे थे। उस क्रम में उन्होंने अपने दुर्गुणों का पहाड़ खड़ा कर दिया। इतने अवगुण भण्डार होते हुए भी लोग 'मुझे महात्मा क्यों कह देते हैं! न जाने लोगों के दिमाग में महात्मा की क्या परिभाषा है जो इतनी जल्दी महात्मा की पहचान कर उपाधि बाँट देते हैं। एक बार मैं कारण वश उत्तरा खण्ड हिमालय क्षेत्र में भ्रमण कर रहा था। एक दिन मैं गाछ के नीचे पड़ा हुआ था तो देखा उधर के पहाड़ से निकल कर एक पुराने सन्त इधर आ रहे हैं। मैं दण्डवत करना चाह ही रहा था कि वे बोल उठे 'राजयोगी जी दण्डवत्' मैंने कहा कि 'सरकार आप मेरे जैसे नीच को क्यों शर्मिन्दा कर रहे हैं?' उनने उत्तर दिया 'तुम दुनियाँ को ठग सकते हो, मुझे नहीं। भृगुलता का चिन्ह जिनके वक्षस्थल पर होता है वह तो राजयोगी से बड़ा होता है। वह काला-सा पसरा हुआ चिन्ह जो तुम्हारे वक्षस्थल पर है वह तो भृगुलता चिन्ह है।' शास्त्र का वचन झूठा नहीं हो सकता' इतना कहने के बाद वे संत तो लुप्त हो गये। मैं सोच में पड़ गया कि मुझे कुछ क्यों नहीं बुझाता है?' चरित्रनायक के पास ही लेखक भी बैठे थे। प्रश्न पूछ बैठा 'गुरुदेव। आप क्या हैं यह तो आपही जानें?' कृपा कर दुराव न करते हुए बतावें कि आपने योगाभ्यास कभी किया कि नहीं?' उत्तर मिला कि 'मैंने 'नौती, धौती ब्रह्म दँतवन का अभ्यास कुछ दिनों तक किया था। अन्तरी बाहर निकाल कर धोया था। पर यह तो योग का पहला पाठ है। 'कोई सुख न मिला, छोड़ दिया।'

उन्होंने कहा कि जो सुख श्री किशोरीजी की शरण में पाया वह कहीं नहीं। 'भयो न सुखी अबहिँ की नाईं।'

राजयोगियों को संकल्प सिद्धि, सर्वगति, आकाश मार्ग गमन, नाना रूप धारण आदि सारी शक्तियाँ होती हैं। चरित्रनायक के सम्बन्ध में इस प्रकार के छिट-पुट उदाहरण आ चुके हैं पूर्व में भी मैरो-गञ्ज रेलवे स्टेशन पर एक अदृश्य सन्त की ऐसी सम्मति की चर्चा की जा चुकी है। चरित्रनायक ही कहा करते थे कि जितनी प्रकार की उपलब्धियाँ अन्य साधनाओं से हो सकती हैं, वे सारे-के-सारे नाम-जाप से सम्भव हैं, श्री नाम महाराज तो उसके आगे भी ले जाते हैं। चरित्रनायक महान नाम-जापक आजीवन रहे। यदि उपरोक्त राज-योगियों के लक्षण उनमें लक्षित हो गये तो आश्चर्य ही क्या?

एक दूसरी विचारणीय बात यह है कि जो नित्य पार्षद अवतरित होते हैं उनमें तो अनेक शक्तियाँ एवं दिव्यगुण जन्मजात ही निहित रहते हैं। आवश्यकता पड़ने पर ही वे गुण वा शक्ति जन-कल्याण हेतु प्रकट होती हैं। उनका प्रयोग अपने को ही भगवान बनाने के लिये नहीं किया जाता। चरित्रनायक तो नित्य पार्षदों में थे। उन्हें साधना करते कभी किसी ने नहीं देखा था।

१०—अभ्यन्तर नाम-जप का दिग्दर्शन

एक बार मुजफ्फरपुर में ही चरित्रनायक से नाम महात्मा की चर्चा हो रही थी। चरित्र लेखक

के साथ श्री गोपाल शुक्ल एवं डाक्टर विन्देश्वरी प्रसाद सिंह थे। अभ्यन्तर नाम-जप की बात आ गयी। रात में लगभग १२ (बारह) बज गये। हम लोगों ने बार-बार अनुरोध किया कि उसका कुछ दिग्दर्शन कराया जाय। चरित्रनायक ने उत्तर दिया कि उस स्थिति में नाम के सभी अक्षर उच्चारित भी नहीं हो पाते और समाधि-सी हो जाती है। वाह्य जगत् से सम्बन्ध टूट जाता है। तो भी हम लोगों के हठ पर चरित्र-नायक ने अभ्यन्तर नाम-जप दिखला ही दिया। वे 'सी' दो मिएट तक यहीं बोलते रह गये, नेत्रों से प्रवाह जारी हो गया, नेत्र बन्द हो गये और लगभग १५ मिनट तक समाधि सी-बनी रही। १५ मिएट तक आँसू के बून्दों का गिरना बन्द नहीं हुआ। बाद चरित्रनायक ने नेत्र खोले और बताया कि परमार्थ वा विश्व कल्याण तो बैखरी नाम से ही होता है।

११—अजपा-जप के सम्बन्ध में चरित्रनायक के विचार

चरित्र लेखक ने एक बार हठ किया 'गुरुदेव अपनी ओर से प्रसाद रूप में मुझे अजपा-जप का वरदान दे दें' इसी के उत्तर में उन्होंने बताया कि पहले अजपाजप की स्थिति समझ लें, तब माँग करें। जिसे कोई पारिवारिक जिम्मेवारी नहीं है वा जो विरक्त हो चुके हैं, जिन्हें शरीर कायम रहे या न रहे आदि की चिन्ता नहीं है' 'अजपाजप' के योग्य वही लोग हैं। किसी चींटी को मिश्री का ढ़ेला मिल गया, वह बाहर से स्वाद न लेकर उसी में प्रवेश कर गयी। वह तो मिश्रीमय हो गयी। उसको क्या स्वाद मिल रहा है, वही जाने। पचाने की शक्ति भर ढ़ेले को चूसते रहती तो इसका स्वाद कम अपूर्व नहीं। अजपा-जप की पूरी स्थिति का उदय हो जाने पर कोई शारीरिक व्यवहार सम्भव नहीं। केवल नित्य कर्मों के लिये ही, जब तक शरीर रहता है, तब तक की छुट्टी नाम महाराज देते हैं, बाद तो तन्मयता रहती है। अपनी स्थिति नाम से भिन्न रहती ही नहीं। अतएव भक्त वर्ग को तो अजपा-जप के लिये हठ नहीं करना चाहिये। भगवान जो करें करावें, उसी में सुखी रहे।

१२—अनेकानेक रूप धारण कर कल्याण करने में समर्थ

पूर्व पृष्ठ में कुछ ऐसे विवरण आ चुके हैं। जिनसे आभास मिलता है कि चरित्रनायक एक ही समय एक से ज्यादा रूप धारण कर भगवत सम्बन्धी कार्यक्रमों का पालन अथवा भक्तों का आपद् निवा-रण किया करते थे। चरित्र लेखक अपने निजी अनुभवों से भी चरित्रनायक के उक्त सामर्थ की सत्यता का अनुमोदन करता है। लेखक का १९५८ से १९६९ ई० तक का जीवन कई दृष्टिकोण से भौतिक क्षेत्र में आपद्काल ही कहा जा सकता है। ऐसे अवसर पर प्रतिपल सहारे की आवश्यकता होती है। 'कमठ आण्ड की नाईं' तो चरित्रनायक सुधि लेते ही रहते थे पर उस पर भी तृप्ति नहीं होने के कारण वे रूप धारण कर भी प्रकट हो सन्तोष, शिक्षा देकर आँसू पोंछा करते थे। चरित्र लेखक उन अवधियों में गया, गिरीडीह, पलामू एवं चाईबासा के जङ्गली क्षेत्रों में ही पद स्थापित था। भ्रमण काल में जब कहीं डाक बँगले में विश्राम करता रहता, निराश भरी परिस्थिति में चिन्ताग्रस्त रहता तब वे कभी संन्यासी कभी ब्राह्मण वा कभी भिखारी वेष में आकर बातें करते, निदान बताते। उसी क्रम में कुछ ऐसी बातें कह देते जिससे पूर्ण विश्वास हो जाता कि यह तो गुरुदेव ही हैं। जैसे ही यह धारणा दृढ़ होने लगती वे आगे बढ़ने के लिये छुट्टी माँगने लगते। यदि ठहरने को अधिक आग्रह किया जाता तो वे तुरन्त अन्तर्ध्यान हो जाते। एक बार बड़ा-सा झूल पहने, गया जिले के बाराचट्टी विकास प्रखण्ड के क्षेत्र में ग्रैंडट्रंक रोड पर अवस्थित घने जङ्गल के एक बँगले में यह कहते प्रातःकाल ही आ गये 'नित्य-अनित्य का झगड़ा बन्दे, बहुत बोखार लगा है, बाबू, बड़ी भूख भी लगी है, कुछ खिलाओ' शरीर छुआ तो बिल्कुल ठण्डा। पूछा

गया क्या पायेंगे ? उत्तर मिला 'बाबू एक पाव सतुआ' चरित्र लेखक को उन्हें जो कुछ परोक्ष रूप से समझावा-बुझावा करना था वे तरह-तरह की बातों के प्रसंग में कह गये। भावी विपत्ति का भी संकेत कर गये। लेखक ने ऐसा कोई व्यवहार नहीं किया जिसके आधार पर वे समझ जाते कि लेखक उन्हें पह-चान रहा है पर हृदय में तो था ही कि वे गुरुदेव ही हैं। उन्होंने लेखक को तो स्नान पूजा की छुट्टी दी और बोले 'मैं बैठता हूँ बाहर, आप उठेंगे, तब जाऊँगा।' चरित्र लेखक ने अपने सभी कर्मचारी को चेता दिया कि इन्हें अकेला न छोड़ना, पूजा कर उठा तो उन्हें नहीं पाया। जो कर्मचारी इनके पास बैठा था वह बोला 'क्या बताऊँ हुजूर, मेरे बगल में आपके बाहर में आने तक थे। पता नहीं किस दिशा में गये' लोग चारों ओर दौड़ाये गये, कोई पता नहीं। अधिकांश वे जङ्गलों में ही मिल जाते थे। केवल गया में एक बार लेखक के निवास स्थान तक आये और बीमार बच्चे को स्पर्श कर, भोजन के बाद गायब हो गये।

सबसे अन्तिम घटना चाईबासा जिले में चाईबासा-राँची रोड पर अवस्थित एक डाक बँगले की है। धनबाद से श्री रंगलाल चौधरी ने एक पत्र लेखक के पास चाईबासा भेजा। उन्होंने लिखा कि अमुक तिथि को श्री महाराज जी को लेकर कार से आऊँगा। उस तिथि के बाद ही लेखक ने अपने भ्रमण का कार्यक्रम रखा था। आने की तिथि में जब एक दो दिन बचे थे तब चौधरी जी का दूसरा पत्र आ गया कि चरित्रनायक ने आने का प्रोग्राम रद्द कर दिया है। वे श्री अवध वापस जा रहे हैं। पत्र पढ़कर बहुत ही मानसिक कष्ट हुआ। जो तिथि उनके आने की पहले से थी, उसी तिथि को लेखक भ्रमण में गाड़ी से अपने सहायकों के साथ निकल गया और सन्ध्या होते एक डाक बँगले में आ गया। जाते देखा कि एक संन्यासी महात्मा डाक बँगले के बाहर वाले सहवान में बैठे हैं। लेखक तो समझ गया कि वे निश्चित तिथि पर इस रूप में ही वचन पालन करने आ गये हैं। दंडवत् आदि कोई सत्कार वा पूछ ताछ लेखक ने नहीं किया। जन सभा बुलायी गयी थी, आगत ग्रामीण जनता से विभिन्न विषयों पर बातें करने के बाद सभा विसर्जन हो गयी। तो भी वहीं बैठे रह गये। लेखक कुर्सी पर और वे पक्का सहन पर बैठे रहे। "प्रभुतरु तर, कपि डार पर" वाला रूपक बन गया।

जब एकान्त हो गया तो हम लोगों का जो भोजन बना था, महात्मा जी भी लेखक के पास ही बैठकर पाये। बाद उनसे कमरे के भीतर ही विश्राम करने का अनुरोध किया गया क्योंकि जाड़े का मौसम था। उन्होंने स्वीकार किया और लेखक की कोठरी में ही वे सहन पर लेट गये। लेखक ने इनकी आज्ञा से पलंग पर ही विश्राम किया। चार बजे भोर में ही उन्होंने दो एक बातें बतायीं और राँची की ओर जाने वाली सड़क पर पैदल ही जाने का विचार प्रकट किया। लेखक ने बहुत आग्रह किया कि साथ गाड़ी में चलें, अगले डाक बँगले से जहाँ चरित्र लेखक कल्ह विश्राम करेगा वहाँ से आप पैदल ही जायेंगे। कौन सुनता है ? उन्होंने कहा "गुरुदेव आज्ञा पैदल ही चलने की है, आप चिन्ता न करें।" लाचार चरित्रलेखक ने जाते समय चरणों का स्पर्श किया और वे चलते बने। एक घंटा बाद ही लेखक भी मोटर गाड़ी से उसी मार्ग से गया पर वे मार्ग में कहीं न मिले।

आज तक उक्त घटनाओं की चर्चा को लेखक ने भी छिपाकर ही रखा था। जब अन्य भाइयों ने अपनी अनुभूतियाँ उल्लेखित कीं, तब लेखक ने भी अपना कर्तव्य पालन किया। उनसे बातें क्या हुई वे तो निजी सम्बन्ध की हैं, पाठक के काम की नहीं। अतएव जीवन रहस्य का उद्घाटन करने में जो धृष्टता लेखक ने की है, उसके लिये गुरुदेव से बार-बार प्रार्थना है कि कृपया क्षमा कर दें।

१३—व्यवहार कुशलता एवं दैहिक किंकर्य भी भक्ति के प्रधान अङ्ग

चरित्रनायक ने अपने दैनिक जीवन में बाहरी व्यवहार-कुशलता एवं दैहिक किंकर्य का जो

आदर्श प्रस्तुत किया उसका दूसरा नमूना कहीं दीख नहीं पड़ता। हजारों हजार शिष्य, उनके परिवार एवं कुटुम्ब सबकी चिन्ता, सबका समाचार अलग-अलग नाम से पूछना, शिष्यों के प्रत्येक बच्चों का नाम याद रख उनका अलग-अलग कुशल जानना एवं श्री अवध आने पर नित्य कोठारी भंडारी से एक-एक व्यक्ति का नाम लेकर पूछना कि उनने प्रसाद पाया कि नहीं। इसके बाद ही आप रात्रि विश्राम करने जाते थे। यदि कहीं से विवाह, जनेऊ, वा श्राद्ध आदि का निमन्त्रण आ जाता तो कहीं तो वे स्वयं जाते जहाँ लाचारी हो वहाँ अपने प्रतिनिधि भेज देते। यह तो उनका सहज स्वभाव था। भौतिक क्षेत्र में जैसे रिवाज निमन्त्रण अदा करने का है उससे भी सुन्दर ढंग से वस्त्र एवं द्रव्य आदि शिष्यों एवं प्रेमियों के घर भेजे जाते थे। शरीर के नातेदार भले ही व्यवहार करने में चूक जायँ, पर आप कभी नहीं चूकते थे।

व्यवहार के भीतर ही दैहिक किंकर्य भी था। अपने से सड़क, गली, नाली की सफाई, मन्दिर भवन निर्माण में स्वयं एक मजदूर रूप में काम करना, आगत सन्तों को बिना भेद के दंडवत् करना, साष्टाङ्ग पड़ जाना, यह तो सहज वृत्ति बन गयी थी। उत्सवों के अवसर पर वे कहते थे कि जिस मार्ग से सन्त आवें उसके बगल की नाली को इतना साफ कर दो कि आगत सन्तों को दुर्गन्ध न मिले, गुलाब जल का छिड़काव सड़कों पर हो, छत से पुष्पों की वर्षा की जाय, इस प्रकार सन्त भगवन्त का स्वागत हो। सभी शिष्य परिवार कतार बाँधकर सड़कों पर खड़े हो जायँ, संतों का चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करें, "और कोई चरणामृत उतारें। श्री अवधवासी सभी सन्त ही हैं ऐसा भाव धारणा हो। उत्सवों में विशेष कर बोली मीठी एवं विनम्र हो। हाथ जोड़े ही बैठाया जाय, वा विदाई की जाय आदि।

उन्होंने अपने गृहस्थ शिष्यों से उपरोक्त सारे किंकर्य कराये। आज भी उनकी ही शिक्षा के अनुरूप जो भी गृहस्थ शिष्य बाहर से आते हैं, वे अपने जाति-गौरव, धन, मान-गौरव, पद प्रतिष्ठा गौरव भुलाकर नाली, गली की सफाई करते हैं। झाड़ू देते, भंडार चौके की सफाई, बर्तनों की सफाई आदि सारे किंकर्य करने में संकोच नहीं करते हैं। इञ्च-इञ्च भूमि श्री युगल सरकार की है, सबकी सफाई, एवं सब स्थल को स्वच्छ रखना भी भजन ही है। उसी भूमि में संत भगवान सभी विचरते हैं। उनके इन लीला-चरणों का निर्वाह विवहुती भवन परिवार यथा शक्ति आज तक कर रहे हैं। धन दिया वा थोड़ी देर मन दे दिया पर तन नहीं दिया तो क्या दिया ? कोई भगवान की पूजा नौकर रखकर करावें और कोई निज शरीर से करे, दोनों में महान् अन्तर है। यह उपदेश चरित्रनायक अन्त-अन्त तक देते गये। भगवान् की जो सम्पत्ति अपने जिम्मे है, उस पर यदि कोई आँच आ जाय वा कोइ छीनना चाहे तो उसका हर प्रकार से बचाव करना, मुकदमा लड़ना, पंचायत करना करवाना यह सभी भजन है। आप भी अपने स्थान की जगह, जमीन, मन्दिर, मकान के लिये फैजाबाद कचहरी में मुदई मुदालह बन जाते थे, मुकदमों की पैरवी नीचे कोर्ट से हाईकोर्ट तक करते पाये गये थे। ऐसे आचरण द्वारा शिक्षा निज आश्रितों के लिये ही उन्होंने अन्त काल तक दी। यह तो सदा अनुकरणीय है। भरोसा सदा भगवान् का ही रखकर सारे प्रयास होते रहना चाहिये।

एक बार चरित्रनायक विदुपुर स्टेशन पर उतरे। साज सामान भी साथ में था। स्वागत करने वाले बाबू शिष्य सवारी एवं कुली की खोज में ही पड़े रहे। चरित्रनायक ने एक गट्ठर माथे पर उठा लिया, परिणाम यह हुआ कि सभी बाबू लोग भी लज्जा छोड़ एक-एक सामान माथे पर लेकर अपने गुरुदेव के पीछे चल पड़े।

एक बार बिना चरित्रनायक का भावी कार्यक्रम जाने ही लोग रो-रोकर यह प्रार्थना करने लगे "सरकार, एक दिन रुक जायँ" चरित्रनायक माथे पर गठरी लिये आगे बढ़ रहे थे, लोगों का आग्रह

जारी था। देखा कोई उपदेश काम नहीं कर रहा है। बस मार्ग के बगल वाले काँदो भरे गढ़े में वस्त्र पहिने हुए ही वे लेट गये और पागलों की तरह बोलने लग गये। सभी भाग चले। जब चरित्रनायक ने देखा कि हठी जमात के लोग भागे, तब वे किसी प्रकार देह पोंछ पाँछ पूर्व निश्चित कार्यक्रम पूरा करने के लिये स्टेशन आ गये और ट्रेन से आगे बढ़े। यह थी उनकी अपनी शैली। अपनी मर्यादा की कोई चिन्ता ही नहीं। "सबही मान प्रद आप अमानी" तो पग-पग पर उनके जीवन में दीख पड़ता था।

१४—पत्राचार की विशेषतायें, "निकम्मा" का अर्थ पूरा हुआ

आपके द्वारा पत्राचार की भी अपनी शैली बनी रही। पत्र को उन्हीं का प्रतीक माना जाय, यह शिक्षा उनने बराबर दी। एक शिष्य के पिताजी का शरीर त्याग हो गया, निमन्त्रण श्राद्ध का आ गया पर जाने में लाचारी हुई। उन्होंने पत्र भेज दिया और लिखा कि श्राद्ध के दिन पत्र की पूजा सांगोपांग कर देना, अभीष्ट पूरा होगा। विवाह में गुरुपूजा का विधान है। एक बार लेखक को भी निमन्त्रण पत्र के उत्तर में पत्र आया कि आप पत्र की ही पूजा कर लें। ऐसी निष्ठा आपने शिष्य मण्डली में उत्पन्न कर रखी थी कि लोग पत्र पूजा कर भी उनकी झाँकी का सुख प्राप्त कर लिया करते थे। ऐसे उदाहरण अनेकों भरे पड़े हैं।

पत्र तो कम ही भेजे जाते थे। कभी दो तीन मास में एक पत्र आ गया और कभी साल में ही एक पत्र आया। पत्रोत्तर का कोई खास नियम नहीं था। एक ही पत्र में कुछ ऐसे शब्द भर दिये जाते जिन्हें बार-बार पढ़ते रहने पर ही शब्दों के रहस्य खुलते थे। एक ही पत्र में अरुझाकर तीन चार मास बीत जाते, तब दूसरा पत्र आता। इस प्रकार दो ही तीन पत्रों को मनन करते एक साल की अवधि बीत जाया करती थी। इस प्रकार पत्राचार द्वारा भी पढ़ाई चलती रहती थी। शंकाओं के समाधान हो जाया करते थे। चरित्रनायक के तत्कालीन लीला स्तर का भी आभास मिल जाया करता था। इस प्रकार का पत्राचार शायद थोड़े ही लोगों के साथ होता था।

अपने शरीर त्याग का आभास उनने १९६३ ई० से ही देना प्रारम्भ किया, उसी साल एक पत्र में उनने लिखा "अपना हाल क्या लिखें, चौरंगी हो गये हैं। आँख ठेहुन दोनों गये। "निकम्मा" के अर्थ पूरा हो गया। ऐसे पत्र का उत्तर देकर जिलाते चलिये।"

सचमुच निकम्मा तो वही अपने को कह सकता है जिसे नित्य कर्मों के संचालन में अपना कोई हाथ ही दीख नहीं पड़ता। बल्कि उसे सदा बूझ पड़े कि कोई दूसरी शक्ति ही शरीर की सभी इन्द्रियों को, मन बुद्धि समेत, प्रेरित कर कर्म करा रही है। चरित्रनायक ने अपने शरीर धारण करने के बाद जब से पत्र लिखना आरम्भ किया, आपकी एक ही सिद्ध शैली बनी रही। जिसके पास पत्र भेजते, चाहे वह शिष्य हो वा प्रेमी हो, उसके प्रति वे आरम्भ में ही लिखते "सर्व उपमा योग्य, नाम उदित, सकल गुण गरिष्ठ, लुब्ध-मधुकर रस-रसिक, युगल-उपासक, साधु गुरु सेवी" आदि और अपने सम्बन्ध में लिखते थे "निकम्मा की ओर से जय-जय श्री जानकी बल्लभलाल जू की जय" निकम्मा की ओर से आशीर्वाद तो शायद किसी को नहीं लिखा गया।

आपकी निष्ठायुक्त धारणा आजीवन यही रही कि करने कराने वाले तो करुणामयी, जनक लाड़ली श्रीकिशोरीजी तथा प्राण-प्रीतमराज-राजेश्वर श्रीरामभद्रजू हैं। उन्हीं से प्रेरित प्रकाशित चरित्रनायक द्वारा विश्व कल्याण हेतु सारे कर्म कराये गये। हृदय के किसी कोने में उन्होंने ऐसा भाव नहीं आने दिया कि वे कर्त्ता हैं, वे ही कर्म करते हैं आदि। अपने को एक मात्र 'निमित्त, माध्यम' ही जानते और मानते रहे। जब तक शरीर, हाथ, पैर स्वस्थ रहे, शायद कभी ऐसा मालूम पड़ गया होगा 'मैं वहाँ गया, मैंने

अमुक काम किया' पर इसका भी मान-मर्दन तब हुआ जब वे पैरों से चलने में लाचार बनाये गये, स्थूल नेत्र भी बन्द किये गये,अब तो पाजी मन को बहकने का आधार क्या रहा ? न देखते हैं, न चलते हैं और न करते हैं। तत् सत् सम्बन्धी सारी इन्द्रिया तो असमर्थ पूर्ण-रूप से १९६३ में ही हो गयी। तो भी अनेका-नेक कर्म अन्त तक कराये गये। कोई पकड़कर उठावे, कहीं बैठा दे, झाल पकड़ा दें आदि, तब अपने में कर्तापन के भाव आरोप करने की गुंजाइश कहाँ ? उपरोक्त पत्र का जबाब तीन चार मास बाद यही दिया गया।

'गुरुदेव ! शरीरधारी होते हुए भी अब आपके शरीर के सारे कर्म किसी-न-किसी रूप में श्री युगल सरकार करते देखे जा रहे हैं, 'मार्जार बच्चा जैसा' श्री किशोरीजी आपको ढ़ोये फिरती है, यहाँ से वहाँ 'जो चाहती हैं, वही बोलवाती हैं अथवा गवाती है, हाथ पैर वे ही बन गयी हैं, 'जिमि बालक पालें महतारी' ही पूर्ण रूप से चरितार्थ हो रहा है। 'बिनु पग चलै, सुनै बिनु काना' आदि, शरीर रहते हुए भी उन चौपाइयों में निहित सत्य तो अब अनुभव सिद्ध हो गया। इसी सत्य को अनुभव सिद्ध हो जाने के बाद और आगे अपने से क्या करना है ?' १९६३ ई० में इस सत्य को गुरुदेव ने सोलह आने अनुभव कर लिया। यही निष्ठा पूर्ण धारणा शरीर त्याग तक बनी रही। इसी वर्ष से जीवन लीला की पराकाष्ठा आरम्भ हो गयी। जरा-मरा जो भी मान, मर्यादा, गौरव भाव कभी आ गया होगा तो वह सारे भावों का मान मर्दन इस वर्ष से विशेष रूप में किया जाने लगा। जब बिना किये ही सारे कर्म होने लगे, तब अब कर्त्तापन कहाँ ? इसी स्थिति को, अकर्त्तापन के इसी अनुभव को जो प्रतिफल बूझता है वही तो सचमुच 'निकम्मा' है। चरित्रनायक ने जीवन के आरम्भ से ही अपने को 'निकम्मा' लिखा और सोलह आने इस सत्य की सत्यता प्रमाणित उस वर्ष में हो गयी, जब कर्म करने वाली इन्द्रियाँ सर्वथा अयोग्य हो गयी। तो सारे कर्म उस प्रकार से होते गए जैसे कोई, हाथ पैर वाला करता है। यही बिनु कर कर्म करे विधि नाना' वाली 'निकम्मा' सत्ता है। इस अनुभूति के बाद कहा जाता है शरीर नहीं रहता है, सर्वत्र प्यारा ही दीखने लगता है। तब कहाँ बैठूँ, क्या खाऊँ ऐसे भावों का उदय होने लगता है। ठीक इसी प्रकार की स्थिति चरित्रनायक की १९६३ में ही हो गयी। तो भी किशोरीजी ने कृपा कर उन्हें हम लोगों के लिये सशरीर १९७० ई० तक रखा।

नंमूनें के तौर पर एक पत्र की ही बातें दी गयीं। विस्तारभय से अन्य पत्रों के रहस्यों की चर्चा नहीं की जा रही है।

१५—शिष्य मण्डल की उत्तरोत्तर वृद्धि

चरित्रनायक ने १९२२ ई० से शिष्य करना आरम्भ किया। संख्या बराबर बढ़ती ही गयी। बिहार एवं उत्तर-प्रदेश मिलाकर आपके शिष्य वर्ग में २५ पच्चीस जिला के लोग जीवन काल के अन्त तक शिष्य हो गये। आपके शिष्यों में गृहस्थ, विरक्त, व्यवसायी, वकील, मजिस्ट्रेट, अन्य विभागों के पदाधिकारी, मन्त्री एम० एल० ए० आदि चारों वर्णों के लोग, ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र, एवं यवन तक सभी वर्ण एवं वर्ग के लोग आए। शिष्यों की संख्या अन्तकाल तक पचास हजार से भी अधिक बढ़ गयी ऐसा अनुमान किया है। आपके स्थान में न तो शिष्यों की सूची आज तक रखी गयी, और न किसी शिष्य को वार्षिक उत्सव वा जन्म जयन्ती आदि के लिये कोई छपे हुए पत्र भेज कर बुलाया ही गया। साकेत गमन के बाद गुरु भाइयों से मिलकर कुछ प्रयास किया गया कि एक सूची बना दी जाय पर वह भी आज तक अधूरी रह गयी।

१६—मन्दिर निर्माण एवं स्थान की सम्पत्ति

आपके द्वारा मन्दिर निर्माण भावल, चम्पारण जिले में, कपड़ाधीका चम्पारण जिले में, हसन-पुरवा तथा सरेयाँ छपरा जिले में एवं टीकरी गोन्डा जिले में किया गया। स्थानीय सेवकों द्वारा आरती पूजा की व्यवस्था है। श्री अवध में विवहुती भवन में ब्याह मंडप १९३९ ई० तक फूस का बना था। अब तो श्री विवहुती भवन में अष्टकुञ्ज के लिये आठ अलग-अलग भवन बन गये हैं जहाँ हजारों शिष्य एवं प्रेमियों के परिवार आकर-उत्सवों में वास करते हैं।

श्री विवहुती भवन स्थान में कोई खास सम्पत्ति नहीं है। यह आकाश वृत्ति वाला ही स्थान है। थोड़ी जमीन भावल चम्पारण जिले में और टीकरी गोन्डा जिले में है जिससे वार्षिक भण्डारा तथा अन्य अवसरों पर ठाकुर के राग भोग के लिये अन्न में चावल, गेहूँ आदि प्राप्त हो जाते हैं।

१९६३ ई० से ही भक्तवर श्री रामाजी आश्रम सरेयाँ का पुनर्निर्माण कार्य आरम्भ हुआ जिसकी पूर्ति १९६४ ई० में हुई। भक्तवर श्रीरामाजी की एक संगमरमर पत्थल की प्रस्तर मूर्ति जयपुर से बनवाकर मँगायी गयी और उसकी स्थापना वेद विधि से १९६४ ई० ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया को की गयी। वहाँ भी स्थानीय पुजारी श्री राजवल्लभजी कार्य करते हैं।

१७——उपासना में शिष्य की कसौटी

एक बार सीतारामपुर जंकशन स्टेशन पर चरित्रनायक को अपने कार में श्री रंगलाल चौधरी धनबाद से ले लाए। ट्रेन आने में एक घन्टे की देर थी। अतएव श्री रंगलालजी ने अपने एक मित्र के मामले को लेकर सत्संग आरभ किया। श्री चौधरी ने चरित्रनायक से कहा कि एक व्यक्ति जिसका कार्य लोगों के दृष्टिकोण से सन्तोषजनक है, उसे गवर्नमेन्ट के लोग उन्नति न देकर सदा तंग करते हैं, पूरी मजदूरी भी न दें, और भगवान् मौन होकर यह देखता रहे, यह रहस्य समझ में नहीं आता है।

चरित्रनायक ने उत्तर दिया कि जो जीव गुरुदेव द्वारा शरणागत कर लिया गया उसके साथ ऐसा व्यवहार होता है। विश्व में चलने वाली मानव सरकार भी उन्हीं की है। विश्व कोष भी उन्हीं का कोष है। यदि शरणागत होते समय किसी जीव की कमाते केवल ऋण है तो ऋण का शोध भगवान् के खजाने से कर दिया जायगा। इसके विपरीत यदि शरणागति के दिन उस जीव को प्राप्त हुआ वा प्राप्त होने वाली राशि एक लाख है तो सारी राशि सरकारी खजाने में जमा कर ली जायगी। आवश्यकतानुसार खाने पीने की व्यवस्था सरकारी खजाने से होती रहेगी। यही अरमान—

साईं इतना दीजिए, जामे कुटुम्ब समाय।
पाहुन भूखा न रहे, साधु न भूखा जाय॥

शरणागत जीव के हृदय में धीरे-धीरे पैदा कर दिया जाता है। यदि उसका लाख रुपया जो उसका पावना था दे दिया जाता तो माया लोक में वह उन्हीं रुपयों में अरुझा जाता। अतएव उसे काम भर ही दिया गया जिसमें उसका अधिक समय प्रभु के भजन में व्यतीत हो। ऐसा व्यवहार होता है पर कोई जरूरी नहीं कि ऐसा सभी शरणागत जीव के साथ किया जाय। चुनाव भगवान् के हाथ है, किसी को तो कमाई से भी कई गुणा देकर ऐश्वर्य भोगवाते हैं, किसी को दीन बनाकर बच्चा ऐसा निकट में सटाए रखते हैं। शरणागति सिद्धान्त परन्तु सदा एक ही है। जीव का पुण्य फल सरकारी कोष में ले लिया गया, अवगुण और उसका पाप फल हरण कर लिया गया। एकमात्र शरणागत जीव के धन गुरुदेव वा श्री युगल सरकार ही रह गये। लेखक भी पास ही बैठा था। चरित्रनायक से यह प्रश्न चरित्र लेखक ने किया कि

गुरुदेव आपने मेरे (लेखक) गया रहते यह लिया था 'चित्तवृत्ति बिगाड़ कर जीव की कसौटी की जा रही हैं, इसका क्या अभिप्राय है। उन्होंने उत्तर दिया कि शरणागति के बाद यह गुरु की जिम्मेवारी है कि श्री युगल सरकार के साथ रहने के अनुकूल दिव्य गुणों का जागरण शरणागत जीव के हृदय में करा दे। अब तक तो शरणागत जीव की बुद्धि संसार प्रधान थी। जिसको वह अपना समझता आया है उन्हीं की चित्तवृत्ति बिगाड़कर शरणागत जीव को अपमानित, कलंकित कराया जाता है। भीतर-भीतर उसका दिल तन, धन के रिस्तेदारों से टूटने लगता है। वह सोचने लगता है कि जीवन भर मैंने इनकी सेवा की समय लगाया और अब ये सब नमक हराम बने जा रहे। ये शत्रु बन गये पर भगवान् तो हमारा है'। उपदेशों के द्वारा एवं प्रतिकूल घटनाओं के द्वारा गुरुदेव शरणागत जीव के मन को चारों ओर से सिमिट कर भगवान् में केन्द्रीभूत करा देते हैं। यह आवश्यक है। यही जीव की कसौटी है। भगवान् के अनुकूल जीव को बनाने का और दूसरा उपाय नहीं है। जीव के पूर्व संस्कार के अनुसार कसौटी की अवधि छोटी वा बड़ी होती है। असाध रोग में कड़ी-से-कड़ी औषधि अधिक दिनों तक खानी पड़ती है। स्वतः जीव संसार की ओर से मन नहीं हटा सकता। इसीलिए उसके सम्बन्धी से ही उसे मार खिलाया जाता है, अपमानित कराया जाता है, तभी वह भगवान् की निकटता की ओर बढ़ता है।

१८—प्रीति दो के बीच होती है, यह न भूलें

एक बार चरित्रनायक गिरिडीह आए और एक दो दिन ही वहाँ ठहरे। लेखक की आन्तरिक अवस्था जानते हुए उन्होंने पूछा। 'नीच टहल गृह के सब करिहऊँ। पद पङ्कज विलोकि भव तरिहऊँ॥ इस चौपाई का क्या भाव है, समझाकर कहो। लेखक ने कहा कि राज्याभिषेक के बाद जब लङ्का से आये हुये बानर भालू रूप भक्तों की विदाई श्री अवध से होने लगी, तब उसी समय श्री अङ्गदजी के श्री मुख से उपरोक्त बानी निकली। वे घर लौटना नहीं चाहते थे। चरित्रनायक ने कहा कि उस अवसर पर भगवान राम ने अङ्गद जैसे प्रेमी को रुचि क्यों नहीं रखी ? एक ओर तो अधिकांश जीव माया में लपटाया रहता है, उनकी ओर ताकता भी नहीं। अब किसी प्रकार अङ्गदजी उनकी ओर खींच गये हैं और संसार को भुलाकर उनकी सेवा में रहना चाहते हैं तब उन्होंने रोते हुए अंगदजी को क्यों बिदा कर दिया ? एक जीव भगवान की सेवा में रहना चाहे तो भी भगवान जीव को ठुकरा दे, यह तो भगवान के ही अनेकानेक दिव्य गुण अहैतुकी कृपा सागर, भक्त-वत्सलता, 'राम सदा सेवक रुचि राखी' आदि के विपरीत मालूम पड़ता है। ऐसा उल्टा व्यवहार श्री रामभद्रजू ने क्यों किया ? चरित्रनायक यह कहकर बिदा हो गये कि आप उत्तर सोच कर रखना।

कुछ मास के बाद चरित्रनायक का पुनः दर्शन हुआ तब लेखक ने उन्हीं से भाव बताने का अनुरोध किया। उनने आरम्भ किया कि सर्वप्रथम इस तथ्य को मान लें कि प्रीति एकांगी, एक तरफा नहीं होती। हृदय दोनों को है, एक दूसरे के प्रति अरमान दोनों के हृदय में बनते हैं। अपना अरमान अपने प्रेमी पर लादने के साथ प्रेमी के हृदय की बात को भी जानने की चेष्टा करनी चाहिये। अंगद को उनके पिता ने जैसे श्री रामभद्र जू की गोद में अर्पण कर दिया और अपना शरीर नहीं रखना चाहा उसी क्षण वे सोच गये कि यदि बाली जिन्दा होता तो अंगद जी को कौन सा पद मिलता, वे कौन सा सुख संसार में प्राप्त करते। अब तो उससे भी ज्यादा सुख बालि सुत अंगद को देना है। यह अरमान उसी दिन बन गया। श्री अंगदजी की भक्ति उसके बाद जगी और उनका उपरोक्त चौपाई में निहित अरमान बाद में बना। अतएव श्री अंगद जी को पहले श्री रामभद्र जू का अरमान सुग्रीव दरबार में राजकुमार बनकर पूरा-पूरा करना पड़ा। श्री अंगदजी तो भगवान राम के हो ही गये, बाद तो उन्हें सानिध्य सेवा मिलनी ही थी।

चरित्रनायक ने बताया कि श्री रामभद्र जू प्रिया प्रीतम का स्वभाव बूझते हुए ही मैं उनके भक्तों की सेवा करता हूँ भक्तों के आराम के लिये पखाना, नली, गली साफ करता हूँ। अपने स्थान में इसीलिए दो प्रकार के भोग नहीं लगवाता हूँ। जो भोजन सभी को पाना है वही थाल ठाकुर को भोग लगता है। वही मुझे पाना है। वही यदि नाना प्रकार सामान अलग से भगवान को भोग लगाकर वह थाल में पाता रहूँ तो भगवान के हृदय पर क्या बीतेगा ? वे कभी नहीं चाहेंगे कि घर संसार छोड़कर जो उनका भक्त आया है, वह खीचड़ी चोखा पावे और ठाकुर स्वयं हलुआ पूड़ी पावें। उनका हृदय जो नहीं जानता है वही भक्त एवं भगवान के भोजन में भेद करेगा और मार खायेगा। वे तो शालीवान हैं, शङ्कोची है, परम करुणामय हैं। भक्त कैसे उनके सामने सतुआ खायगा और भगवान उसके सामने हलुआ पावेंगे ? इसी विचार के चलते आज तक स्थान में बिजली नहीं लगी। भक्त भगवान के लिये न समान बिजली का प्रबन्ध सम्भव हुआ, न बिजली लगायी गयी। वे बीजली में रहें और उनका भक्त अँधियाले में रहे यह भी उन्हें असह्य ही हो जाता। वे क्या चाहेंगे यह सोचते हुए ही प्रीति करना उत्तम है।

१९—माघ बसन्त पञ्चमी १९७० ई० में जनकपुर धाम का अनुपम श्री सीताराम विवाह महोत्सव

श्री राधा कृष्ण ठाकुर जी १९५६ ई० से ही माघ बसन्त पञ्चमी के अवसर पर प्रति वर्ष विवाह एवं कलेवा उत्सव अपने निवास स्थान पर कराते आ रहे थे। इस वर्ष हमारे चरित्रनायक ने उन्हें कहा कि अब यह विवाह उत्सव का निर्वाह कठिन है। आप तो बारह साल से अधिक काल से उत्सव कराते आ रहे हैं। यह विवाह तो मिथिला का है। इस वर्ष वहीं व्यवस्था कर विवाह अर्पण कर दें। उन्होंने इस वर्ष उत्सव का आयोजन जनकपुर धाम में करना स्वीकार कर लिया। अगहण शुक्ल पञ्चमी प्रधान विवाह के अवसर पर यह निर्णय लिया गया, अतएव इसकी जानकारी बहुतों को हो गयी

अमावस्या माघ बाद ही वहाँ मेला जैसा लगना आरम्भ हो गया। श्री रंगभूमि के प्राङ्गण में विवाह मण्डप की सजावट हुई। हजारों लोगों की उपस्थिति में सभी उत्सव तिलक से लेकर विवाह कलेवा तक सम्पन्न हुए। इस अवसर पर घटित कुछ विशेष घटनाओं की चर्चा निम्नांकित हैं।

(क) भक्ति, भक्त, भगवन्त गुरु, चतुरनाम वपु एक

एक दिन दोपहर में प्रेमी, भक्त सभी को महाप्रसाद पाने का निमन्त्रण दिया गया। रंगभूमि से हटकर एक मन्दिर में ही चरित्रनायक समाज के साथ ठहर गए थे। उसी मन्दिर के हाते में प्रसाद पाने सभी आ जुटे। ज्योंही प्रसाद सबों के पत्तों में दिया जाने लगा। चरित्रनायक के इशारे पर उनके एक प्रिय पात्र ने कटोरे में जल लिए सबों का चरणमृत उतार कर चरित्रनायक के हाथ दे दिया। उन्होंने सप्रेम एक-एक बून्द पान कर लिया। लोग धर्म शास्त्र की बातें, गुरु-चेला भेद की बात करते ही रह गए पर यहाँ तो चतुर खेलाड़ी ने तात्विक एकता का ज्ञान देकर अन्तर में भेदहीन होने का संकेत दिया। उन्होंने उल्टी गंगा बहा दी, हल्ला हुआ गुरु ने शिष्यों का चरणामृत पान किया। दुनियाँ कहा करें, भाव से महाभाव जाते तन्मयता में भेद कहा ? संकेत तो इस ओर था 'भक्ति, भक्त, भगवन्त एवं गुरु चतुरनाम रूप मर्यादा लोक लीला क्षेत्र में है पर एक तत्व की अभिव्यप्ति चार नाम रूप से है।' अपने आचरण द्वारा उन्होंने उपरोक्त सत्य को चरितार्थ किया।

(ख) इस अवसर पर श्री मिथिला जी के ही महात्मा श्री रामदुलारी शरण जी महाराज के स्वरूप सरकार से ही उत्सव सम्पन्न हो रहा था। राम कलेवा के दिन श्रद्धालु गुरु भक्त श्री राधाकृष्ण ठाकुर जी ने भोर में अपने सुपुत्रों को फल युक्त बाल भोग गुरुदेव को कराने के लिये भेज दिया। इधर अपने कार से श्री युगल सरकार सीताराम जी को बुलाकर करपात्री बाबा की ठाकुरवाड़ो में बैठा दिया

क्योंकि बालभोग करने में चरित्रनाक को देर हो गयी। दुलहा सरकार उनके आगे पहुँचकर उनके ही इन्तजार में थे। ज्योंही चरित्रनायक विवाह मण्डप आये, उन्हें पता चल गया कि दुलहा सरकार आगे से आये हुए हैं। वे सुनते ही मर्माहत हो गये। बोल उठे "कहाँ गया ठाकुर, वह हमें रसातल भेजना चाहता है। हमारा प्यारा हमारे इन्तजर में बैठा रहा ? मैं अब मुख दिखाने के लायक नहीं हूँ। कहाँ मैं इन्तजार करता और उनका अवाहन करता, उसका ठीक उल्टा आज वे बैठे मेरा इन्तजार कर रहे हैं। क्या यही मिथिला भाव है ?" इतना कहते हुए अब तो वे भाग चले। कुछ दूर तक रंगभूमि मैदान में बढ़ गये। श्री ठाकुर को दौड़कर क्षमा याचना करने का संकेत किया गया। सपत्नीक वे दौड़ पड़े, लेखक भी साथ हो लिया। पहुँचने पर तो और भी रुख कड़ा हो गया। भोले-भाले ठाकुर जी को कुछ बूझ न पड़ा। अब तो उनके हवास उड़ गये। पास में वैसे शब्दों की पूँजी कहाँ जिससे उनके हृदय को पिघलाया जाय ? भरे हुए ग्लानि भाव का घड़ा फूट गया। श्री ठाकुर तो जोर-जोर से बच्चों की नाई रो पड़े। अब तो मेला लग गया। गुरु चेला में किसको क्या कहा जाय ? फिर भी हिम्मत बटोर कर लेखक ने कहा "गुरुदेव ये इकट्ठे लोग तो हम लोगों की लीला से कुछ सुख नहीं पायेंगे। घर के प्रेम रगड़ा का यह रूप अज्ञान दर्शक क्या बूझेंगे ? अब क्षमा प्रदान हो" झट से चरित्रनायक बोल उठे "अरे ठकुरवा को न कहिये, वह जोर से चिल्ला रहा है। मैं तो उससे दुगुनी आवाज से रो सकता हूँ।" अब तो चरित्र लेखक की भी हिम्मत टूटने लगी। कहीं उनने भी दुगुनी आवाज में उनने शुरू कर दिया तब क्या होगा ? ठाकुरजी का हाथ पकड़ दबाया और कहा "भाई आँसू न रुके जाने दो, आवाज बिल्कुल बन्द कर दो" कृपा हुई, सुसुकते हुए ठाकुर जी अपने गुरुदेव को लिये मण्डप की ओर चले। निराशा की जगह आशा के फूल खिल गये, अब सबों को विश्वास हुआ कलेवा का सुख बरसेगा।

यही तो मार्ग है, न कुछ बुझाये तो उनके सम्मुख आँसू बहाओ। मैल धुल जायँगे। वे भी पिघल जायँगे। आत्मशोध हो जायगा बाद कृपा बरसती रहेगी।

बेचारे राधाकृष्ण जी का दोष ही क्या था ? उनके हृदय में गुरुदेव का पलड़ा ज्यादा भारी था। वे हृदय से प्रधानतः गुरुभक्त हैं। अतएव उनका ध्यान गुरुदेव की ओर विशेष था। इसके चलते वे दो प्रेम की चक्की में पीसे गये तो सब कुछ उनने शिरोधार्य ही किया।

दिव्य मिथिला की झाँकी

जनकपुर धाम में चरित्रनायक प्रेमावेश में ज्यादा देखे गये। अन्तर प्रेम का रगड़ा-झगड़ा बराबर चलता रहा। इसी आवेश में रंगभूमि के रज में मण्डप से कुछ दूर जाकर पड़ गये। लोगों ने समझा वे रूठे हैं। वे तो पड़े-पड़े दिव्य मिथिला की झाँकी में निमग्न थे। स्थूल नेत्र तो बन्द ही थे। आस पास शूकर की विष्ठा पड़ी है, उन्हें कैसे सूझता ? जड़ता वश एक शिष्य ने कहा "इस गन्दती से हटकर विवाह मणि मण्डप में चलें" वे डाँटकर बोल उठे "क्या कहा, दिव्य मिथिला में गन्दगी ?" एक दूसरे शिष्य ने अनुराग भरे शब्दों में कहा "नहीं, नहीं यह तो सचमुच दिव्य मिथिला भूमि है जिसके रज कण में लोटने के लिये देवता भी लालायित रहते हैं।"

अब मुद्रा बदल गयी। गुरुदेव विवाह मण्डप में आ गये।

कलेवा के दिन भी उल्टी प्रेम धारा बह चली

श्री दुलहा सरकार विवाह मंडप में आ गये। प्रेमिका रूप चरित्रनायक के हृदय में कसक है कि प्रीतम रामभद्र जू की कलेवा के लिये अगवानी ठीक नहीं हुई। उधर प्रीतम को कसक है कि उनकी प्रेमिका रूठी बैठी है किसी के पद उन्हें सरस नहीं लग रहे हैं। उन्होंने सिंहासन को लात मार दिया और आ गये

प्रेमिका की गोद में। मनावन चलने लगा। ऐसा दृश्य साक्षात हो गया मानों आशिक ही मासूक बना, और मासूक ही आशिक। प्रेम की उल्टी धारा बह चली। वे वही हो गये। महाभाव अवस्था का मानो दिग्दर्शन हुआ। चरित्रनायक ने रस भरे रँगीले पद कुछ देर तक अपने प्रीतम प्रभु को सुनाये और प्रेमी से भी सुनवाये। सर्वत्र आनन्द का वातावरण छा गया। बाद कलेवा विधि उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुए। मिथिला प्रेम की जय। प्रेम के साकार रूप गुरुदेव की जय।

अन्तिम दिन प्रातःकाल की झाँकी

प्रातःकाल नाम कीर्तन के बाद प्रेमी शिष्य इकट्ठे हो गये। कल तक प्रेम लीला के सरस रस बरसने से सबों का हृदय रसमय बना हुआ था। चरित्रनायक ने गम्भीर मुद्रा में एक ही प्रश्न अपने आश्रितों के सामने रखा। "अब यदि मैं शरीर त्याग कर दूँ तो आप लोगों को क्या आपत्ति है ?" प्रश्न सुनते ही मानो बज्रपात हो गया। मूर्तियत् लोग एक दूसरे को देखने लग गये। हृदय सरोवर में भरे प्रेम रस तो मानो सूख ही गये। काटो तो किसी के शरीर में खून नहीं। आज तक गुरुदेव ने कभी ऐसा सवाल नहीं किया। आज क्या हो गया ? निस्तब्धता को भंग करते हुए एक कुशल वकील ने धीमी आवाज में रुँधे हुए गले से कहा "गुरुदेव' सन्तों का अवतार तो परहित के लिये होता है। इतने बड़े विवहुती भवन परिवार के एक मात्र आप ही सहारा हैं। अनेकों का कल्याण हुआ, अनेकों का कल्याण बाकी है। तब शरीर छोड़ने की आतुरता तो हम लोगों के मन, बुद्धि से परे की बात है। गुरुदेव ने उत्तर दिया "मेरे पास जो सौदा है, उसका अब कोई ग्राहक नहीं। जब लोग एकान्त का समय मुझसे माँगते हैं, तो आशा जगती है, आज कोई प्रेम रहस्य का प्रश्न होगा। मैं सोने के समय भी उठ बैठता हूँ तब कानों में आवाज आती है "बबुआ को आखरी इम्तिहान में पास करा दें, दुलहिन को एक बेटा दें, मुकदमे में जीत करा दें, फलनवाँ को नौकरी दिला दी जाय आदि। कोई भी हृदय से नहीं कहता कि युगल सरकार का दर्शन करा दिया जाय, संसार से नाता तोड़वाकर उनसे प्रीति लगा दी जाय। बताओ तो, संसार बन्धन से मुक्त कराकर भगवान् से मिला देना गुरु, सन्त महात्मा का काम है। जीव को संसार में ही फँसाकर छोड़ दूँ तो गुरु पद से गिरता हूँ। तब अब जीवन रखने से क्या प्रयोजन सिद्ध होगा ?" गुरुदेव की इस अन्तिम वाणी का किसी के पास कोई उत्तर नहीं रह गया। मौन होने के सिवाय कोई चारा ही नहीं रह गया। सभी तो कम वेशी इस चक्कर में बराबर रहते ही हैं। भगवान् से बढ़कर संसार से ही ज्यादा प्रीति अनायास बढ़ती ही जाती है। गुरुदेव द्वारा जीवन लीला विसर्जन की सूचना पाकर सबों के हृदय में धड़कन पैदा हो गयी। देखें, आगे क्या होता है ? यही दिल में कसक लिये सभी मिथिला से बिदा हो गये।

मझीगावाँ में श्री अनन्त अलबेला बाबा द्वारा अन्तिम विवाहोत्सव का आयोजन

श्री अलबेला बाबा तो १६५० ई० से ही गुरुदेव के हो चुके थे। इन्होंने बड़े धूम-धाम से श्री सीताराम विवाह एवं कलेवा महोत्सव का आयोजन १६७० ई० के बैशाख मास में किया। इस विवाह उत्सव में पटना, मुजफ्फरपुर, दरभङ्गा, पलामू, गया एवं शाहाबाद जिले के प्रेमी एकत्रित हुए और अपूर्व आनन्द में निमग्न रहे। यहीं पर श्री अलबेला बाबा ने चरित्रनायक से सम्बन्ध पत्र एवं युगल मन्त्र ग्रहण किया। इसके पूर्व उन्हें केवल राम मन्त्र प्राप्त था। अलबेला बाबा आजीवन चरित्रनायक के प्रेमी बने रहे और अन्त में उन्होंने शिष्यत्व भी स्वीकार कर लिया। मझीगाँवा वह ग्राम है जहाँ श्री अलबेला बाबा बारह साल तपस्या के बाद जगंल से केवल कोपीन, कमण्डलु एवं एक दो हाथ का कम्बल का टुकड़ा

लिए १९४२ ई० में प्रकट हुए थे। यहाँ उन्होंने चौरासी अग्नि का ताप वैशाख मास १२ बजे दिन में २–३ घण्टे तक लिया था। लोग इन्हें भगवान का अवतार मानने लगे थे।

श्री अलबेला बाबा ने १९७४ ई० की पहली जुलाई को शरीर त्याग किया। वे अन्त काल में हृदय रोग से आक्रान्त हो गए थे। इनने शरीर त्याग उलार आश्रम पटना जिले में किया और उनके शरीर को काशी धाम में गंगा लाभ कराया गया।

अलबेला बाबा की जय, उनके प्रेम-भाव की जय

२०—धनबाद में श्री रङ्गल चौधरी के निवास पर नाम-नवाह में प्रकट विशेषता

१९७० ई० की श्रावणी झूला के बाद ही चरित्रनायक का मन श्री अवध से बाहर जाने का नहीं था। भक्तों की प्रार्थना से स्वयं श्री किशोरी जी ही प्रेरित कर उन्हें अन्त काल तक भ्रमण कराती ही रहीं अनिच्छा होते हुए भी धनबाद में नाम-नवाह एवं विवाह दोनों सुख बरसाया गया। नाम-जप में प्रेमियों का अनुराग इतना बढ़ा कि दिन रात का होश ही नहीं रहा। नाम सत्ता मानों प्रकट हो गयी थी। एक प्रकार का हल्फ-सा निकल रहा था। एक होमियो पैथी डाक्टर तो नाम प्रभाव से चकाचौंध में पड़ गये, उन्हें मूर्छा तक हो गयी। दिव्य ज्योति पुञ्ज के दर्शन से आहत हो गए। न उसे देखने के लिये नेत्र ही थे न प्रभाव सहन करने की शक्ति ही थी। कई वर्षों से नाम-नवाह उस स्थल पर हुआ करता था पर ऐसी अद्भुतता कभी नहीं देखी गयी। नाम-जापकों का बरावर तांता लगा रहा।

पूर्व पृष्ठों में उल्लेखित किया जा चुका है कि चरित्रनात्रक ने १९६३ ई० से ही-निज-मान मर्दन का अध्याय चालू किया। सभी बातें अपनी निन्दा से ही आरम्भ करते। 'मेरे जैसे ढोंगी को सरकार ने श्री अवध में रखा, महान आश्चर्य है। वे बोलते रहते कि जीवन भर मैंने ढोंग ही पढ़ाया, चेला भी हमारे ढोंगी ही बने। गुरु नालायक तो चेला लायक कैसे होगा ?' आदि श्री धनबाद रंगलाल जी के महल में तो आत्म निन्दा की चरम सीमा हो गयी। फूट-फूट कर रोते हुए वे कहने लगे 'मैं बड़ा अपराधी हूँ, आप प्रमी क्षमा कर दें। मेरे दुष्कर्मों के लिये मेरे ऊपर थूक दें। एक ही प्रार्थना सबों से है, मुझे आशीर्वाद दें जो राम-राम कहना आ जाय। यही आशीर्वाद वे शिष्यों एवं प्रेमियों से हर स्थल पर गत पाँच-छव साल से माँगते रह गये 'मुझे राम-राम कहना आ जाय।' उनके आन्तरिक भाव क्या थे, यह तो वे ही जानें। जैसे रामायण सात काण्ड बाद एक लव-कुश काण्ड बना। श्री जिसमें श्री रामभद्र जू के साथ लीला में भाग लेने वाले सभी प्रधान पात्रों का मान-मर्दन लव-कुश द्वारा हुआ, प्रीतम राम को तो अपमानित होने से स्वयं स्वामिनी जू ने बचा लिया। उसके बाद ही लीला की इति श्री की गयी। हमारे चरित्रनानक ने भी शरीर त्याग के पाँच-सात वर्ष पूर्व से ही अपने मान-मर्दन के अनेकों काण्ड किये। कुछ दिनों तक मुख पर कालिख पोते रहे। कौन समझे लीला नागर की इस लीला को ! लीला विसर्जन की वही प्रणाली अपनायी गयी जिसे स्वयं प्रीतम राम ने अपनायी। यहाँ तो प्रायः निश्चित हो गया कि अब वे शरीर त्याग कर ही चैन लेंगे।

चरित्र लेखक को चरित्रनायक ने बड़े लाड़ प्यार से कहा कि 'आप आगामी प्रधान विवाह पञ्चमी के अवसर पर एक मास की छुट्टी लेकर आवें। विवाह बाद आप ही के साथ आपकी जन्मभूमि जाऊँगा। आपके भाई के घर जाऊँगा एवं आपकी लड़की राँची पागल खाने में है वहाँ भी जाऊँगा।' इतना प्रलोभन तो उनने कभी नहीं दिया। सारी सांसारिक कामनाओं की पूर्ति एक साथ। चरित्र लेखक ने तो धनबाद से लौटते ही दरखास्त देकर आगे से ही छुट्टी ले रखी थी। होनी तो कुछ और ही थी।

——:——

दशम खण्ड

महा प्रयाण मुहूर्त एवं उपसंहार

श्री जनक सिंह, पुलिस दरोगा के पद पर समस्तीपुर कचहरी में उन दिनों पद स्थापित थे। वे श्री हनुमत सदन के ही वृद्ध महाराज जी के कृपा पात्र हैं पर उनका प्रेम चरित्रनायक से भी उनके अन्तिम वर्षों पर में बढ़ता गया। वे श्री अवध आने पर विवहुति भवन में ही अपना आसन रखने लगे और चरित्र-नायक द्वारा विवाह कलेवा आयोजनों का भी सुख लिया करते थे।

यहीं जनक बाबू ने अगहण प्रथम पक्ष १९७० में सीतामढ़ी क्षेत्रमें अपने घर पर श्री सीताराम विवाह एवं कलेवा उत्सव कराने का वचन चरित्रनायक से पूर्व में ही ले रखा था। उसी वचन के पालन के लिए हमारे चरित्रनायक अपने कुछ प्रेमी शिष्यों के साथ जनक बाबू के घर पधारे। शायद श्री अगहण कृष्ण पञ्चमी के अवसर पर ही विवाह कलेवा आदि का आयोजन हुआ था। यहाँ कई दिनों तक चरित्र-नायक ने आनन्द उत्सव में भाग लेकर अनुपम आनन्द रस की वर्षा की। वहीं शरीर अस्वस्थ हो गया वे जीप द्वारा स्टेशन लाये गये। वहाँ से अपने साथ आये हुए श्री नूनू बाबू, राम प्रिया शरण जी आदि सभी प्रिय पात्रों को स्टेशन से ही विदा कर दिया। आप श्री अवध बुखार की अवस्था में ही आए। आते ही उन्होंने २३ नवम्बर से ही श्री नाम-नवाह चालू कराया। शिथिलता बढ़ती जा रही थी वट-वृक्ष के नीचे बैठकर नाम भी श्रवण किया करते थे। अपना आसन श्री विवहुति भवन में स्थित कूएँ के बगल में ही रखे थे। बहर के प्रिय शिष्यों को बुलाने की बिल्कुल मनाही हो गयी। स्थान के ही डाक्टर शांतिलाल अग्रवाल, श्री राम रत्न भण्डारी, आदि सेवा में थे। फैजाबाद बड़े डाकखाने के बड़े पोस्टमास्टर श्री श्रीवस्तव जी भी सुबह शाम सेवा में आ जाया करते थे। बात-चीत सबों से बराबर चलती ही रही। स्थान के लोगों ने आतुरता वश यदि किसी प्रेमी को पत्र वा तार इस सम्बन्ध में दिया, तो वे पत्र एवं तार उन प्रेमियों को आज तक नहीं मिले। चरित्रनायक के भाव सर्वोपरि रहे, उसके विपरीत चलने पर सफलता कहाँ ?

मानसिक रामार्चा पूजन कर पूर्व वचनों का पालन

जब वे एकान्त में हो जाते तो बराबर रामार्चा मन्त्र बोलकर रामार्चा पूजा करते रहते। यह क्रम उनके आने के बाद पाँच-छव दिनों तक चलता रहा। लोगों का कहना था कि श्री रामार्चा पूजन के लिये कई शिष्यों ने आगे से पैसा जमाकर दिया था कि सुविधानुसार उनकी पूजा चरित्रनामक करा देंगे। अब शरीर त्याग की तय्यारी होने लगी तो साथ-साथ पूर्व बचनों का पालन भी आवश्यक हो गया। श्री रामार्चा भगवान उन प्रेमियों का अभिष्ट पूरा कर दें, इसी हेतु उनने मन में सङ्कल्प कर सबों के लिए रामार्चा पूजा मानसिक ही कर दी और रामार्चा भगवान से सबों के कल्याण की प्रार्थना कर दी।

चरित्र लेखक के लिए भी दो शब्द कहे गए

शरीर त्याग के पाँच छव दिन पूर्व चरित्रनायक को धनबाद में लेखक से की गयी सारी बातें याद आ गयीं। उन्होंने सोचा कि तरह-तरह का प्रलोभन देकर एक मास छुट्टी लेने का उन्होंने लेखक को आदेश दिया था। अगहण शुक्ल पंचमी वाले प्रधान विवाह के पूर्व ही शरीर त्याग की बात तय पा गयी है। श्री विवाहोत्सव में भाग लेने जब लेखक आवेगा, तब उसके दिल पर क्या बीतेगा ? कहा क्या गया था, और

किया जा रहा था कुछ और ही। फैजाबाद के पोस्टमास्टर श्री श्रीवास्तव से ही उन्होंने बात-चीत के क्रम में कहा 'आप को हमारे एक शिष्य जिन्हें मैं डिपुटी साहब कहा करता हूँ और रामयत्न शरण जिनका नाम है,उनसे आपको परिचय, प्रेम है ?' श्रीवास्तव साहब ने 'जी हाँ' कहा। तब चरित्रनायक ने उन्हें कहा कि आपको जब उनसे भेट हो, तब मेरी ओर से कह देना कि जिन-जिन बातों की वे कामना रखे हैं, उन सबों की पूर्ति एकमात्र नाम महाराज की शरण में जाने से हो जायेगी। वे श्री नाम महाराज की शरण में चले जायँ।' शरीर त्याग के पाँच दिन पूर्व में ये बातें कही गयीं पर पोस्टमास्टर साहब यह भी न पूछ पाये कि वे विवाह में आयेंगे, तो आप ही स्वयं बताना। अथवा यदि वे इन बातों का रहस्य बूझ रहे थे, तो उन्हें यह न बूझ पड़ा कि एक पत्र ही चरित्र लेखक को तुरन्त भेजवा दें, जो उस समय तक पहुँचकर स्वयं कर सकें। मति ही मार दी गयी।

उधर कुछ कष्ट बढ़े तब स्थानीय शिष्य डाक्टर शान्ति लाल ने फैजाबाद से सिविलसर्जन को बिना चरित्रनायक से पूछे बुला लिया। उनके आते ही चरित्रनायक ने कहा कि नाहक सिविलसर्जन साहब को बुलाकर कष्ट दिया गया। न मैं सुई लूँगा और न दवा ही खाऊँगा। सिविलसर्जन भी लाचार वापस लौट गये। शरीर त्याग के एक दो पूर्व ही वर्तमान महान्त श्री बैजनाथ शरणजी आ पधारे। बराबर चरित्रनायक का होश बना रहा। नाम सुधा के बूँद तो कानों में पड़ ही रहे थे। ता० ३० नवम्बर,१९७०की रात को बात चीत कुछ कम कर दी गयी। अब एकमात्र निज प्रीतम लोक की झाँकी में ही निमग्न रहने लगे। किसी ने कहा कि शायद वे रात भर सोये ही नहीं। कुछ गुन-गुनाते रहे। धनबाद के प्रेमी श्री सरयू शर्मा बताया कि उन्होंने उनका गुन गुनना ध्यान से सुना था। आधी रात के बाद चरित्रनायक धीमी आवाज में बोलते 'बबुवा, अइले, दुलहा जी अइले' आदि। चार बजे प्रातःकाल नाम कीर्तन प्रारम्भ हुआ। उसे समाप्त होते ही उन्होंने संकेत किया कि श्री रामायणजी का विवाह प्रकरण पाठ आरंभ करो। बराबर से रामायण पाठ का नियम सन्ध्या में होता था, आज रामायण जी में वर्णित दुलहाजी की छवि का दर्शन वे चाहते थे। जैसे ही दरवाजे पर बारात आगमन के समय दुलहा की छवि का दर्शन होने लगा, चरित्रनायक ने कहा अब बन्द करो, वे यह कहते हुए कि 'आ गये।', दण्डवत करने को झुके कि उनके प्रीतम उन्हें दिव्य रूप में अपने साथ ही साकेत धाम लिवा गये। इस प्रकार ७६ वर्ष तक नर रूप में लीला कर आपने अगहण शुक्ल द्वितीया के ब्रह्म बेला में लीला विसर्जन किया। जिन्होंने उन्हें निज लोक से जीव कल्याणार्थ भेजा था, स्वयं वे ही आकर साथ ले गए।

अपूर्व शोभा यात्रा

शरीर त्याग की बात सारे अवध में फैल गयी। नेमी-प्रेमी, सन्त महात्माओं की भीड़ बढ़ती गयी, धनबाद से भी श्री रंगलाल जी, श्री राधाकृष्ण ठाकुर जी आदि प्रेमी शिष्य शरीरान्त होने के बाद ही आ पाये। रथी की सजावट की गयी। कीर्तन मंडली का जत्था भी आ पहुँचा। बाजे बजने लगे, पुष्प वर्षा होने लगी। धूप गन्ध से वातावरण सुगन्धमय हो गया। हजारों लोग जय-जयकार की ध्वनि एवं सरस कीर्तन पद गाते हुए शोभा यात्रा में सरयू जी की ओर बढ़ते गये। सभी गण्य मान्य सन्त साथ-साथ चल रहे थे। मार्ग में जगह-जगह पर आरती पूजा होती गयी। इस प्रकार रामघाट श्री सरयू तट पर पधारकर नाव द्वारा बीच धारा में लाकर पार्थिव शरीर को श्री सरयू जी के हवाले कर दिया गया।

सभी सन्त प्रेमी तो अपने-अपने स्थान गये। विवहुती भवन परिवार के लोग भी आँसू बहाते अपने स्थान वापस आये। सबों के हृदय में "अब क्या होगा ?" प्रश्न विराम बनकर बैठा था। अति सन्तप्त हृदय में कोई प्रकाश नहीं आ रहा था। "चरित्रनायक की महिमा से मंडित श्री विवहुती भवन के

एक-एक कण में उनकी प्रभा छिपी है। अभी भी हृदय से पुकार करो। वही प्रकट होकर सारे कृत्यों का निवाह करेंगे।" इसी अन्तरात्मा की आवाज पर ही, आगे कदम बढ़ते गये। रोने की फुर्सत कहाँ?

अगहण शुक्ल पंचमी को प्रधान विवाह उत्सव का आयोजन

चरित्र लेखक तो चरित्रनायक द्वारा पूर्व स्वीकृत कार्यक्रम के अनुसार श्री विवाह पंचमी से ही आगे आने वाली अवधि के लिये एक मास की छुट्टी ले रखी थी। तदनुसार अगहण शुक्ल द्वितीया की सन्ध्या में लेखक वैद्यनाथ धाम से प्रस्थान कर तृतीया भोर में श्री अवध स्टेशन आये। पूर्व में न कोई अपशकुन के चिन्ह प्रकट हुए और न कोई तार चिट्ठी ही लेखक को मिली।" श्री विवाह का सुख लूटेंगे, गुरुदेव के साथ लगभग एक मास भ्रमण कर उनकी सेवा एवं सत्सङ्ग का सुअवसर प्राप्त करेंगे।" कुछ इसी प्रकार के अरमानों का तरङ्ग हृदय में उठता, मिटता रहा। रिक्शा वाले को कहा "श्री विवहुती भवन चलो।" उसने झट से कहा "वही स्थान न जहाँ बूढ़े महाराज कल चले गये, कल बड़का जुलूस सरयू जी गया रहा। सारे अवध के लोग गये थे" हठात् ऐसा विश्वास नहीं हो रहा था कि वे चले गये।" इतनी कठोरता! एक पत्र से भी पूर्व सूचना नहीं। क्या-क्या कहकर उनने छुट्टी दिलवायी और अब स्वयं अदृश्य हो गये! चलते समय भी सीधा व्यवहार नहीं? वही लुक-छिपकर लीला, क्या होता यदि वे बुला ही लेते?" रिक्शा चलता गया, हृदय में इस प्रकार के भाव बुलबुला जैसा उठते और मिटते गये रास्ते में भाई राधाकृष्ण जी मिले, नेत्रों में आँसू थे। पूछने की हिम्मत कहाँ? रिक्शा नहीं रोक स्थान आ गये। श्री रामरत्नजी भंडारी गले में लपटकर रोने लगे। जिधर देखो नेत्रों से गंगा-यमुना की धारा चल रही है किसको कौन समझावे? अजब दृश्य था। स्थान में १०-२० ही लोग थे। सभी प्रिय पात्र अपने-अपने घर पर विवाह देखने की तैयारी में थे। किसी को चतुर्थी शाम में आना था, कोई विवाह के दिन ही पहुँचने वाले थे। चरित्र लेखक के पहुँचने के पूर्व से ही श्री मणिराम छावनी के महान्त अनन्त श्री नृत्य गोपालदास जी का वरदहस्त स्थान के ऊपर प्राप्त हो चुका था। उन्होंने सभी सार सम्भार करने का आश्वासन स्थान सेवकों को दे रखा था। कुछ ढाढ़स हुआ कि एक ऐसे महान सन्त का वरदहस्त हम लोगों के ऊपर है। सन्त कृपा से सभी कृत्यों का निर्वाह हो ही जायेगा। अनन्त श्री नृत्य गोपालदास जी ने आरम्भ से अन्त तक हर प्रकार की सहायता दे सभी कृत्यों का निर्वाह किया। सारे विवहुती भवन परिवार में आज भी उनकी अहैतुकी कृपा की कृतज्ञतापूर्वक सराहना की जाती है।

चरित्रनायक के ही जीवन काल से श्री विवहुती भवन में एक समिति थी। जिससे समय-समय पर चरित्रनायक राय परामर्श लिया करते थे। लेखक के आने के दूसरे ही दिन राय सलाह परस्पर होने लगी कि बृहद् भंडारे की व्यवस्था कैसे हो? विहार तथा उत्तर प्रदेश के २५ जिलों से शिष्य एवं प्रेमियों का आना जारी रहा। श्री रंगलाल चौधरी, श्री राधाकृष्ण ठाकुर आदि भाइयों ने दो दिन के लिये घर लौटना आवश्यक समझा क्योंकि सभी लोग तो केवल विवाह सुख लेने आये थे। भंडारा बड़े पैमाने पर करना होगा, यह बात तो किसी के दिमाक में नहीं थी। लेखक से लोगों ने कहा कि आप लम्बी छुट्टी ले चुके हैं। भंडारा के प्रधान प्रबन्धकर्ता आप ही बन जायँ। भीतर से कोई प्रेरणा प्रकाश नहीं, क्या उत्तर दूँ, समझ में नहीं आ रहा था। एक ही बात दिगाम में आयी कि चरित्रनायक जैसे सन्त तो मरते नहीं। उनका जीवन प्राण "सीताराम विवाह उत्सव" था। उसकी चर्चा कोई कर ही नहीं रहे थे। चरित्रनायक की कृपा से लेखक के मुख से यह बात निकल पड़ी कि पहले सारा ध्यान विवाहोत्सव की ओर दिया जाय। कुछ लोगों ने तो यहाँ तक कह डाला कि परिस्थिति आप समझते नहीं। "आपको हरियाली ही सूझती है" लोगों का हृदय तो चूर-चूर हो गया है। विवाहोत्सव कौन करेगा? लेखक ने कहा जो भी हो, स्वरूप

सरकार भी श्री अवध में उपलब्ध हैं। श्री रामायणजी तो हैं ही। आठ रामायण जी का शृंगार कर श्री विवहुती भवन की प्रणाली से विवाहोत्सव कराया जायगा। जिन्हें विवाहोत्सव कराने की शिक्षा चरित्र-नायक द्वारा प्राप्त हो गयी थी। उसमें के श्री लक्ष्मी बाबू पटना तथा परमानन्द शरण जी (नूनू बाबू)। दोनों में कोई भी अभी तक नहीं आ पाये थे। चरित्रनायक के कृपावलम्ब लेकर सभी राजी हो गये। इसकी तैयारी के लिये धनबाद एवं गया के भाइयों का एक दल लेखक की सहायता में दिया गया। तैयारी प्रारम्भ की गयी। श्री अवध की गलियों में चर्चा थी "श्री पुजारी जी गये, विवहुती भवन का विवाह लिये गये" यह सुन-सुनकर और भी हृदय को चोट लगती थी।

श्री विवाह मंडप की पूरी सफाई सजावट की गयी। श्री अवध के सन्तों को उत्सुकता थी कि देखें कैसा विवाह श्री विवहुती भवन में होता है? सच्ची लगन से तैयारी हुई, स्वयं सिया स्वामिनी की कृपा बरसने लगी। श्री विवाह के दिन नूनू बाबू और दूसरे प्रेमी आ पहुँचे। विवाह उत्सव के दिन गण्य मान्य सन्त एवं प्रेमियों से विवाह मण्डप भर गया। उस समय तक तो श्री बैजनाथ शरण जी महान्त नहीं हुए थे। एक कालेज के विद्यार्थी थे। उस समय तक तो एक दर्शक जैसा बने थे। समिति के लोगों के परामर्श से सभी कार्य कर रहे थे। गाने बजाने का भी स्वतन्त्र अभ्यास कहाँ? बहुत ही भोले भाले शीलवान एवं सलज्ज स्वभाव के थे। बोलना तो बहुत ही कम, सेवा वृत्ति उनमें कूट-कूटकर भरी थी। चरित्रनायक द्वारा सेवा में उनकी पूरी कसौटी हो चुकी थी। कुछ भी डाँट फटकार हुई तो चुपचाप सह लेना व लुक छिप कर एकाध बून्द आँसू बहा लेना! पूर्व में ये श्री भरतलाल जी के सफल स्वरूप बन चुके थे। यथा नाम तथा गुण। सारा स्वभाव भरत जी जैसा बूझ पड़ा। क्रोध में इन्हें कभी किसी ने देखा ही नहीं। बार-बार पूछने पर भी चरित्रनायक को कोई उत्तर नहीं दे पाते थे। इनकी ओर के दूसरे ही लोग इनके मन की बात चरित्रनायक को बता दिया करते थे। इसके अतिरिक्त तो कालेज के वाता-वरण में पलते हुए वे एक बी० ए० के अन्तिम वर्ष के छात्र मात्र थे।

श्री नूनू बाबू से विवाह कलेवा सम्पन्न कराने का भार लेने को कहा गया। उनने गुरुपद वन्दना कर इस गुरुतर कार्य का भार लिया। हम लोगों ने देखा कि वे आवेश से भर गये, मानो गुरुदेव की प्रभा ही उनमें प्रवेश कर गयी। सारा कार्यक्रम-दुलहा सरकार को बुझौविल बुझाना, उन्हें हँसाना खेलना, पद सुनाना सबों को रुचिकर मालूम हुआ। सबसे विशेष बात यह हुई कि नूनू बाबू कभी माथे पर आरती लेकर नृत्य नहीं किये थे। प्रथम बार आवेशित होकर उनने माथे पर आरती लेकर नृत्य का भी सुख दिया। सारे अवध के सन्त एवं नेमी-प्रेमी बोल उठे कि विवाह खूब हुआ। श्री विवहुती भवन का विवाह कायम रहेगा।

लेखक के हृदय पर उस आनन्दमय वातावरण में क्या बीता, वह तो अकथनीय है। हृदय में प्रकाश आ गया। आवाज मिली—जब तक हमारे प्रिय शिष्य एवं प्रेमी वर्ग श्री नामजी की सेवा तथा सन्त सेवा बिना भेद भाव के करते रहेंगे श्री विवहुती भवन में आनन्द बरसता रहेगा' हृदय बोल उठा 'जय गुरुदेव'।

श्री विवाह कलेवा के बाद चरित्र लेखक ने गुरुदेव के उपरोक्त सम्वाद को समझाया और कहा कि अब सारे कार्यक्रम सुन्दर ढंग से सम्पन्न होंगे। हृदय से प्रयास जारी हो। भंडारा होने के कुछ दिन पूर्व ही श्री बैजनाथ शरणजी को विरक्त साधु के रूप में श्री अवध के सभी सन्तों ने एक मत से उन्हें विवहुती भवन का महान्त बना दिया। शिष्यों की सम्मति तो सर्वत्र उनके महान्त हो जाने के पक्ष में आगे से ही बन चुकी थी।

श्रीविवहुती भवन में कार्य संचालन हेतु एक स्थायी समिति पुनर्गठित की गयी। सबों को भंडारे तथा विवाह में कार्य भार बाँटा गया। लग अपने-अपने कार्य में लोग गए, लेखक के मत्थे दान के पैसों को तथा अन्य प्राप्त समानों को संग्रह कर श्री बैजनाथ शरणजी के हवाले करना था। जो पैसे नित्य व्यय होते थे उसका हिसाब रोज सन्ध्या में श्री बैजनाथ शरणजी रात्रि में आकर लिखा देते थे। आय व्यय लिखने का भार श्री रामप्रिया शरणजी वकील तथा श्री नीरस चौधरीजी आदि भाई को दिया गया जो नित्य लेखक के साथ ही रह कर करते रहे।

रोकड़ नहीं मिलने लगा नित्य अवशेष राशि में वृद्धि

प्रति दिन आय व्यय का विवरण अंकित कर प्रातःकाल कोई नवीन व्यय होने के पूर्व अवशेष राशि को गिना जाता था। हिसाब मिलता नहीं था बार-बार जोड़ घटाव के बाद भी शेष वही आवे पर रोकड़ नहीं मिले। पैसे जिस थैले में रखे जायँ उसको भी प्रातःकाल उठते झाड़ दिया जाय कि दूसरे किसी भाई का पैसा उसमें न मिल जाय। तो भी जब दो तीन दिन यही अवस्था रही तब लेखक को रात्रि में निद्रा तक न आवे। सोचने लगा कि समिति के लोग वा दूसरे लोग तो साफ बेईमान कहेंगे। गुरु-भंडारे के पैसे को निजी काम में खर्च कर दिया होगा। अचानक एक रात्रि को यह आवाज हृदय में आयी कि जाकर गिनों और देखो कि पैसा हिसाब से बढ़ता है वा घटता है। प्रातःकाल आय-व्यय के हिसाब के अनुसार चरित्रलेखक ने पैसे स्वयं दो तीन बार गिन लिये। लगा कि एक सौ रुपये बढ़ रहे हैं। तब निर्णय ये हुआ कि यदि रोकड़ में पैसे बढ़ जाते हैं तब बेईमान कौन कहेगा? अब एक दिन लेखक ने ऐसा किया कि भोर से शाम तक जो नोट आते गए, सबों को अपने कोट के पाकेट में रखा। अपने पास भी जब नहीं रख सका, तो रामप्रिया शरण जी के पाकेट खाली कराकर उनके पास रखा। रात्रि में आय की राशि को दो तीन बार जोड़ा तो जोड़ की राशि से पाकेट में भी ८० अस्सी रुपये ज्यादा हो गये। रामप्रिया शरणजी के पाकेट के पैसे भी जोड़ से ज्यादा हो गये। अचानक ऐसा प्रकाश मिला कि श्री विवहुती भवन तो किशोरीजी का स्थान है। पैसे यदि अधिक हो जाते हैं तो क्या आश्चर्य? हम लोगों ने लेखाबही तक में लिख दिया कि आज बढ़ोत्तरी अमुक हुई। आज भी बही वहीं स्थान में पड़ी है, हिसाब देखा जा सकता है।

भंडारे में भी आश्चर्य भरी घटना

जहाँ तक लेखक को याद है, भंडारे के अवसर पर प्रथम दिन चार हजार 'पारस' अढ़ाई गज की साफी में बाँध वितरण करने के लिये चार हजार कार्ड बाँटे गये। उसी के अनुसार वस्त्र मँगाये गये और तरह-तरह के मिष्ठान, कचौड़ी आदि चार हजार साफी में बाँधकर तैयार रखे गये। चार-पाँच सौ अधिक "पारस" की व्यवस्था थी, जिसे अलग ही रखा गया था। निमन्त्रित सन्त एक ओर से आते और दूसरी ओर से कार्ड देकर पारस के साथ निकलते जाते। अन्त-अन्त तक चार हजार कार्ड वापस आ गये पर पारस शाफी में बँधे हुए काफी अवशेष रह गये। बचे पारस को कचहरी एवं हर दफ्फतर के कर्मचारियों को भेजा गया। कोतवाली में भी पारस भेजा गया। तो भी अवशेष रह ही गया। तब श्री अवध–फैजाबाद रोड पर अवस्थित दुकानदार प्रेमियों में पारस वितरण किया गया। उसके बाद अनन्त श्री नृत्य गोपालदासजी ने अपने सामने रहकर संस्कृत विद्यालय के विप्र छात्रों को भी पारस बँटवा दिया। तो भी पारस बचे ही रह गए। कच्ची-पक्की मिश्रित भंडारा में श्री अवध के प्रधान पाँच सौ महान्त एवं अन्य साधु, प्रेमियों को भी सत्कारपूर्वक पवाया गया। सबों को वस्त्र अर्पित हुए और नकद दक्षिणा भी बाँटेगये। इस प्रकार अन्त तक गिनती करने पर साढ़े चार हजार पारस साफी सहित सात हजार हो गये।

कपड़ा एवं सामान दोनों ही बढ़े। रुपये तो नित्य बढ़ते ही रहे। स्वयं लेखक ही इन सारे कार्यक्रमों का प्रधान था, अतएव इनकी सत्यता में रंचमात्र भी संदेह नहीं है। पूरे हिसाब करने पर पता चला कि अस्सी हजार रुपये से कुछ ज्यादा ही भंडारा आदि में व्यय हुए। बिहार उत्तर प्रदेश से इतने सपरिवार शिष्य एवं प्रेमी आ गये कि उनके ठहरने के लिये आस-पास के स्थानों में आवास की व्यवस्था की गयी। एक मेला-सा लग गया था।

उपसंहार

सभी सन्त तो छिप कर ही लीला करते हैं। कोई अपने को अमीरी में छिपाते हैं और कोई अपने को फकीरी में छिपा रखते हैं। उन्हें वही पहचान कर सकता है जिन्हें वे अपना पहचान करवा देते हैं हमारे चरित्रनायक ने अपने लिए फकीरी मार्ग ही अपनाया था। उन्होंने पहनने, खाने के लिये प्रभु से कोई माँग नहीं की। सचमुच में उन्होंने पेट बाँध कर भगवान की भक्ति की। सदा खाली वदन, खुले आकाश में रमते रहे। भूमि ही उनकी शय्या बनी, राम-नाम ही उनका भूषण एवं भोजन दोनों ही था। अनेकों दिन भूखे प्यासे रह सकते थे। जब शरीर स्वस्थ था, तब दो तीन दिन बिता कर श्री किशोरीजी के भण्डारा के अवसर पर वे डोल-डाल जाते थे और दँतवन बनाते थे। सिद्धियाँ सेवा में तैयार थीं पर वे उनकी ओर ताकते नहीं थे। अति आवश्यक होने पर ही भगवत् सेवा एवं भागवत कल्याण हेतु ही सिद्धियों की सेवा स्वीकार की गयी। जो प्राप्त शक्ति का सबसे कम उपयोग करता है वही बड़ा होता है। जैसे शासन व्यवस्था में थानेदार शक्तियों का नित्य प्रयोग करता है जल्लाद तो सबसे शक्तिशाली लगता है। खटा-खट लोगों को फाँसी दे देता है, पर सबसे कम शक्ति प्रयोग करने वाला ही राष्ट्रपति कहाता है। वह तो जानता भी नहीं कि कौन अपराधी है, कौन जेल गया वा फाँसी पड़ा। यह सब काम तो निम्न वर्ग के अधिकारियों का है। न वह किसी को एक छड़ी मार सकता है और न स्वयं किसी को जेल दे सकता है। लगता तो है, वह सबसे शक्तिहीन, पर है वह सबसे बड़ा। यही अवस्था महान सन्तों की है। शक्तिहीन मालूम पड़ते हुए भी वे सर्वशक्तिमान रहते हैं। पूर्व पृष्ठों के विवरण से स्पष्ट है कि अनेकानेक सिद्धियाँ चरित्रनायक की सेवा को तैयार थीं। उनसे यत्र-तत्र सेवायें भी ली गयीं पर उन सबों की जानकारी उनके शरीर त्याग के बाद ही हो पायी है। जिसने देखा, उसकी मति मार दी गयी, जबान बन्द कर दी गयी। सिद्धियों का सहारा ले वे अपने को भगवान बनाकर पूजित कराना नहीं चाहते थे। एक ही भगवान है। एक ही भगवान सदा रहे, उसी का नाम जपा जाय, उसी का यश गाया जाय। दूसरा भगवान कोई क्यों बने ? आज तो अपने को ही भगवान बनाकर पूजित होने का युग है। सिद्धियों के चकाचौंध में पड़ने वाली दुनियाँ की गति-मति इन फकीरों के शाहन्साह तक कैसे पहुँचा सकती है ?

चरित्रनायक में इन पंक्तियों के भाव सदा वर्तमान रहे

चाह गयी चिन्ता गयी, मनुवाँ वे परवाह।
जाको कछु नहीं चाहिए, सोई साहंशाह॥

स्वयं श्री रामभद्र जू ने लखन लाल जू से कहा है

बचन कर्म मन मोरि गति, भजनु करहिँ निस्काम।
तिन के हृदय कमल महुँ, करउँ सदा विश्राम॥

जिसके हृदय निजी कामानओं से रहित हैं प्रीतम प्रभु कैसे प्रसन्न रहेंगे यही जिनका भजन है, इसी भाव दृढ़ता के लिये जो उनका नाम जपते हैं और यश गाते हैं, उन्हीं के हृदय में भगवान आराम से

निवास करते हैं, बाकी लोगों के हृदय में तो भगवान परेशान रहते हैं। कामना भरे हृदय वाले लोग न स्वयं चैन से रहते हैं और न हृदयस्थ प्रभु को चैन से रहने देते हैं। भगवान तो चरित्रनायक जैसे निष्काम हृदय में ही विश्राम कर पाते हैं। अन्यत्र नहीं।

उन महान दिव्यगुणों से विभूषित, अनेकानेक सिद्धियों के स्वामी सन्त शिरोमणि गुरुदेव की जीवन गाथा लिखने का भार लेखक जैसे बुद्धि विवेकहीन को दिया गया, यह तो महान आश्चर्य का विषय बना हुआ है। 'मूक होइ वाचाल पंगु चढ़ै गिरिवर गहन' की विरदावली धारण कर कुछ लिखवा लिया गया, तो उन सब सत्ता सम्पन्न के लिये कौन-सा आश्चर्य है ? सिया स्वामिनी जू सर्व समर्थ हैं। उन्हीं की कृपामयी प्रेरणा से गुरुदेव गाथा पुस्तकाकार हो पायी है। सन्त रसवन्त, भक्त, प्रेमी से बार-बार प्रार्थना है कि भाषा की त्रुटियों पर कृपया ध्यान न देंगे 'कवि विवेक एक नहीं मोरे, सत्य कहौं कछु कागद कोरे।'

लेखक न साहित्यकार रहा है और न भाषा विशारद है। यदि लेखक की भाषा टाट जैसी रूखी सूखी है तो चरित्रनायक की जीवन-गाथा उस भाषा रूपी टाट में रेशम के बखिया जैसी है। तत्वग्राही श्रद्धालु पाठक तो केवल तथ्यों की ओर ही अपनी दृष्टि दौड़ायेंगे ऐसा पूर्ण विश्वास है। किसी ने कृपा कर चरित्रनायक जैसे महान के सम्बन्ध में कुछ लिखवा दिया तो केवल उस कृपा की ओर ही देखना उचित है। मन तो महा नीच है। यदि इसके किसी कोने में कुछ गौरव आ भी जाय कि एक ग्रन्थ लिखने का गौरव मुझे है, तो सिया स्वामिनी जू ऐसे पाजी मन को सम्हालें वा जो दण्ड उचित समझें दें। स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि गुरुदेव गाथा लेख-बद्ध करने का सौभाग्य लेखक जैसे कामी लोलुप को दिया जायगा। धन्य हैं करुणामयी श्री जनकराज किशोरी एवं धन्य हैं करुणामय वर्तमान रूपधारी गुरुदेव जिन्होंने प्रेरित प्रकाशित कर असम्भव को भी सम्भव करा दिया।

यह बिल्कुल सत्य है कि गुरुदेव जीवनकाल से आज तक निजी जीवनी लिखी जाने के पक्ष में नहीं रहे। पर यह भी वही कहा करते थे कि गुरु सेवा करने का अधिकार शिष्य को है। इसमें गुरुदेव को दखल नहीं देना है। सेवा तो बड़े व्यापक भाव वाली कैंकर्य-भावना है। शारीरिक सेवा के साथ-साथ गुरुदेव का यशगान करना भी एक प्रकार की गुरु सेवा ही है। अतएव लेखक के बालहट को गुरुदेव ने जीवन-लेख आरम्भ होने के बाद स्वीकार कर लिया, इसमें रञ्चमात्र भी लेखक को सन्देह नहीं। एक शिष्य को कर्तव्य पालन करने में शक्ति सामर्थ्य देना तो गुरुदेव का ही कर्तव्य है। इससे वे कैसे मुकरते ? जीवन चरित्र तैयार होने में डेढ़ साल से ज्यादा समय लगा, रह-रहकर कठिनाइयाँ आयीं पर गुरुदेव की कृपा से सबों का समाधान होता गया। जब मैं सिया स्वामिनी जू की कृपा को देखता हूँ तो सद्गुरु स्वामिनी को उनसे भिन्न करने की क्षमता मुझमें नहीं। सिया स्वामिनी जू कृपा का अर्थ है सद्गुरु कृपा एवं सद्गुरु कृपा का भाव ही है सिया स्वामिनी कृपा।

जिसने जीवन पर्यन्त अपने को निकम्मा जाना और माना, जिसने अपनी स्वतन्त्र सत्ता का आजीवन अनुभव ही नहीं किया वह क्यों चाहेगा कि उसकी अलग जीवनी तैयार हो ? कठपुतली की जीवनी क्या ? जो उसके माध्यम से बोलता है, गाता है और नाचता है, सचमुच कठपुतली की लीला उसकी लीला है। तो भी यदि सभी सन्त ऐसा भाव पकड़ लें और सन्तों की जीवन गाथा न बने तो केवल शास्त्र, पुराण वेद पढ़ने से बिना उदाहरण के रहस्य कोड़े बूझ पड़ेंगे। सन्तों के आचरण देखकर ही शास्त्र पुराण एवं वेदों में लिखे सिद्धान्तों के अर्थ स्पष्ट होते हैं।

इन हृदयस्थल भावों को जानते हुए ही चरित्रनायक ने विशेष कर श्री विवहुती भवन परिवार के लिये पुस्तक रूप में अपनी निजी प्रभा प्रकाशित कर देने में आशीर्वाद दिया है एवं आवश्यक प्रकाश भी

दिया है। अतएव अन्त में निजी ढिठाई के लिये लेखक बार-बार करबद्ध क्षमा याचना करता है और प्रार्थना करता है—

"हे गुरुदेव ! आपके सिखावन को जहाँ तक मैं धारण कर सका और आपके प्रकाश से मैं जहाँ तक प्रकाशित हो सका, उसी शिक्षा एवं प्रकाश के अवलम्ब से लिखी गयी यह जीवनगाथा आपको ही समर्पित है। कृपा कर इस जीवन चरित्र के माध्यम से आप वह शक्ति एवं वह प्रकाश प्रदान करें कि आपका आश्रित परिवार प्रेमपूर्वक जीवन चरित्र का पाठ कर आपके बताये मार्ग पर अग्रसर होने में समर्थ हो।"

मुझ पर आपने पल-पल में जितनी कृपा की उसका वर्णन असम्भव है, "तदपि नाथ कछु और माँगि हो, दीजे परम उदार"। निजी अन्तिम माँग निम्न दोहावली के रूप में कृपया स्वीकृत हो, यही बार-बार प्रार्थना है—

बार बार जय जयकार, बार बार बलिहार

भई कृपा गुरुदेव की, प्रकटे उर परकाश।
गुरुयश गाथा गान करि, पूरी मन की आश ॥१॥
बार बार विनती करौं, गुरुवर दीन दयाल।
दिव्य रूप अब दरश दो, जा लखि होउँ निहाल ॥२॥
महल टहल मन लगि रहे, युगल रूप उरधार।
दिव्य युगल झाँकी मिले, प्रतिपल रहौं निहार ॥३॥
केहि विधि हो तेरी कृपा, सूझत नहीं उपाय।
निज महिमा कर याद तू, जिय की जरनि बुझाय ॥४॥
करुणासिन्धु दयालु हे, राखहु मोर दुलार।
मन की अब पूरन करो, मन की जानन हार ॥५॥
भजन भाव चित भाव नहिँ, मन भटकत संसार।
प्रतिपल आशा लगि रही, सरवश तू ही हमार ॥६॥
कुञ्जी तेरे पास है, खोलहु हृदय कपाट।
जीवन के दिन बीति चले, जोहत तेरी बाट ॥७॥
जीवन धन गुरुदेव जू, अब विलम्ब केहि काज।
सब विधि मोहि सुधार लो, बिगड़ी बनिहैं आज ॥८॥
कब होवे ऐसी कृपा, युगल रूप नित ध्यान।
युगल चरण सेवत रहौं, रंग महल दरम्यान ॥९॥

॥ ॐ श्री गुरवे नमः ॥

श्री सद्गुरु भगवान की सखी आरती करिये।
सिगरे जाल जवाल को उड़ते परिहरिये ॥

याद करत बरबाद होत श्रम।
पदपंकज हिय धरिके भवनिधि से तरिये ॥

लाभ जन्म को लेहु भली विधि।
गुरु सेवा सु सम्हालिके सियाराम उचरिये ॥

ललीलाल मिलिहैं बिनही श्रम।
लगन ललित लहराय हिये मन मोद सुमरिये ॥